शम्भुदास

शम्भुदास

(दीर्घ कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SHAMBHUDAS

Collection of Long Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-21-6
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा क्रम

दू शब्द

जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तँए ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हर्खित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकेँ शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो। ढहैत बेवस्थाक तरमे शम्भुदासक पड़ब मिथिलाक कलाक राँइ-बाँइ हेबाक निशानी अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक कथाक मुख्य पात्र ने 'भैंटक लावा'मे आ ने 'बिसाँढ़' कथामे राँइ-बाँइ होइए, तखन शम्भुदास कोना 'दरवारी' दास भऽ गेल? की जगदीश प्रसाद मण्डलमे कोनो परिवर्तन तँ नै आबि गेलन्हि, की ओ थाकि रहल छथि आ हारि रहल छथि?

मुदा जँ गँहिकी नजरिसँ देखबै तँ शम्भुदास कोनो तरहेँ 'भैंटक लावा' बा 'बिसाँढ़'क हीरोसँ न्यून नै अछि। तखन ओ किए हारि रहल अछि बा जगदीश प्रसाद मण्डल ओकरा किए हरबा रहल छथि? ऐँ यौ, ओ तँ लेखक छथि, ऐ पात्र सभक भगवान, ओ एकरा जितबेलथि किए नै?

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र फुसियाँहीक नै होइत अछि, आ तँए ओ आर्थिक मोर्चापर जीति जाइत अछि, जतए हाथसँ काज होइ छै, मुदा कला (आ साहित्य सेहो)क शास्त्रीय घुरछी, जे आंगुरपर गानल जाइबला लोक द्वारा निर्मित अछि, मे ओ ओझरा जाइत अछि। ओकरा आर्थिक स्थितिसँ लड़बाक छलै, लड़ल आ जीतल। कलाक क्षेत्रमे ओ दरबारी बनि गेल, तखने ओकर गुजर हेतै मुदा एतौ एकटा विद्रोहक झण्डा उठेलक शम्भुदास, घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय सिद्ध केलक जे 'दरबारी' दास बनब ओकर सुविधावादी प्रवृत्ति नै छै, लचारी छै आ तै लेल ओ बिआह नै करबाक निर्णय केलक। घर-परिवार लेल ओ सुविधावादी नै बनल, आ घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर

निर्णय 'दरबारी' दास बनबाक लेल कएल ओकर पश्चाताप मात्र अछि।

समानान्तर परम्परा कलाकेँ दरबारी दास बनबासँ रोकत। जँ शम्भुदास हारत तँ हारत मिथिला। जगदीश प्रसाद मण्डल नै हारता, हारत मिथिला। जँ मिथिला ऐ चेतौनीकेँ नै चिन्हत।

- गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह ई-पत्रिका

मइटुग्गर

जहिना सरयुग नदीमे नहा भक्त मन्दिरमे प्रवेश करिते भगवान रामक दर्शन करैए, तहिना तपेसर अँगनाक मेहमे ओंगैठ समाजकेँ भोज खुअबैक ओरियान देखि रहल छला। पोखैरक पानि जकाँ शीतल, शान्त आ समतल तपेसरक मन अँगनाक सुगन्धमे मस्त छेलैन। तैबीच घुरनी चमकैत स्टीलक छिपलीमे पनरह-बीसटा सुखल बरी, एकटा बर आ पानिसँ भरल गिलास आगूमे रखि कहलकैन-

“बाबू, कनी चीख कऽ देखियौ जे नीक भेल की नहि?”

मुस्कियाइत बेटी आ छिपलीमे सजल बर-बरीकेँ देखि तपेसर हेरा गेला। मोन पड़लैन मइटुग्गर। मुदा चुल्हिपर चढ़ल लोहिया छोड़ि अँटकब उचित नै बुझि घुरनी चुल्हि लग पहुँच गेली। कमलक फड़ सन एकटा बरी मुँहमे लइते तपेसरके मोन पड़लैन परिवारमे अपन कएल काज।

सौन मास। भोरहरबामे मेघ फटि बरखो भेल आ अधरतीए-सँ जे पुर्बा उठल ओ उठले रहल, तैसँग कखनोकाल झकसियो अबिते रहल। जेना-जेना दिन उठैत गेल तेना-तेना पुर्बाक लपेटि सेहो बढ़िते गेल। प्रसवक दर्दक आगम सुशीला सासुकेँ कहलैन। पुतोहुक बात सुनि सुनयना तपेसरकेँ पल्हैन बजबए कहलखिन।

ओसारक ओछाइनपर ओंघराएल सुशीलाक मनमे लड़ाइ पसैर गेल। एक दिस प्रसवक पीड़ा अपन दल-बलक सँग अंगक पोर-पोरमे चढ़ाइ करैत तँ दोसर दिस जिनगीक कठिन दुर्गमे फँसल सुशीलाक मन खुशीक लहैरमे झिलहोरि खेलाइत। नारी जिनगीक श्रेष्ठतम काज। जेहने भरिगर काज तेहने मुँह-मंगा मातृत्त्वक उपहार...।

पुर्बाक लपेटि देखि सुनयनाकेँ ठकमुड़ी लागल रहैन। आइ धरि प्रसव गठुलामे होइत रहल अछि। जइ घरक टाट हवाक झोंककेँ नइ

रोकैत। आश्रमक घर जकाँ टाटमे लेब-दुलेब नहि। मुदा बोनक बच्चाकेँ कोन घर रक्षा करैए। सुनयनाकेँ हूबा जगलैन। गठुला छोड़ि मालक घरमे ओछाइन ओछा देलखिन। ओछाइन ओछा हियासए लगली जे अगियासी भइये गेल, फाटल-पुरान लाइए अनलौं...।

मालक घरसँ हुलकी मारि सुनयना पुतोहु दिस देखलैन तँ चैन बुझि पड़लैन, मन असथिर भेलैन।

पल्हैन ऐठाम जाइत तपेसरक मनमे अपन काजक भार एलैन। एहेन भारी काजमे पुरुखक काज की अछि? डेग भरि हटल पल्हैनक घर अछि तेकर पछाइत? मचकीपर झुलैत झुलनिहार जकाँ तपेसर झुलैत पल्हैन ऐठाम पहुँच जनतब देलखिन। अपन उगैत लछमीकेँ देखि मुस्की दैत पल्हैन कहलकैन-

“अहाँ आगू बढ़ू गाइक थैर बनौने पीठेपर दौगल अबै छी।”

पाँचो मिनट पल्हैनकेँ पहुँचला नइ भेल कि बेटाक जन्म भेल। धरतीपर बेटाकेँ पदार्पण होइते बिजलोका जकाँ तपेसरक परिवारमे जहिना खुशी पसैर गेल तहिना देह पोछैत पल्हैनक मनमे चालीस तम्मा निछौर, निपनौन, लाढ़ि-पुरैन कटाइक सँग उपहार नाचए लगलैन। तैपर सँ ईहो जे पसारी छी तँए मंगबोक अधिकार ऐछे, जाइकाल एकटा सजमैनो मांगि लेब। सिदहा तँ देबे करती। ..पल्हैनक मन हिसाबमे वौआ गेलैन। समाजमे भगवान केकरो सन्तान दइ छथिन तइमे हमरो सझिया कऽ दइ छैथ ने। जहिना बच्चाक जिनगी हमरा हाथमे अछि, तहिना ने अपनो जिनगी दोसराक हाथमे अछि। तरे-तर पल्हैनक मन खुशी भऽ गेलैन, मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

“काकी, पहिल पोता छिऐन, रेशमी पटोर पहिरबैन?”

धारक वेगमे दहलाइत दादीक मन, मुड़ी डोलबैत बजली-

“एकटाकेँ के कहए सातटा पहिरेबह।”

खुशीसँ पल्हैन बजली-

“बच्चाक मुँह, एन-मेन तपेसरे बौआ जकाँ छइ।”

पल्हैनक बात सुनि ओछाइनपर पड़ल पीड़ाएल सुशीलाक मनमे अपन सतीत्त्वक आभास भेलैन, अवसर भेटते बुदबुदेली- “केहेन

सपरतीभ जकाँ बजैए!"

मुदा पल्हैन सुनलैन नहि, जइसँ आगू किछु नहि बजली।

झीलक पानि जकाँ तपेसरक मन असथिर, समान्य परिस्थिति तँए समान्य मनक विचार। जहिना कठिन-सँ-कठिन, उकड़ू-सँ-उकड़ू काजपर लूरि डटल रहैए तहिना जिनगीक काजपर तपेसरक नजैर दौगैत डटल छेलैन, मनमे एलैन पत्नीक बीस-एक्कैस बर्खक उम्रो छेबे करैन, रोगो बियाधिक छुति देहमे नहियेँ छैन। ..बेटापर नजैर पहुँचते पुत्र सन सम्पैतक आगमनसँ मन फुला गेलैन। जहिना लगौल गाछमे पहिल फूल वा पहिल फड़ लगलापर बेर-बेर देखैक इच्छा होइत तहिना तपेसरक मनमे उठैत रहैन। मुदा बर्जित जगह बुझि परहेज केने रहैथ। मुदा तैयो जहिना डाँट टुटल कमल हवाक सँग पोखैरमे दहलाइत तहिना खुशीक हिलकोरमे तपेसरक मन तर-ऊपर करैन। मनमे उठलैन, पुरुख-नारी बीचक सम्बन्धमे बच्चो पैघ शर्त्त छी। परिवारमे विखण्डनक सम्भावना बनल रहैए। ..लगले मन अपनासँ आगू उड़ि माए-बापपर गेलैन। जाइते हृदय बिहुसए लगलैन। जहिना मातृत्त्व प्राप्त केलापर नारीक सौन्दर्य बढ़ि जाइत तहिना ने पितृत्त्व प्राप्त केलापर पुरुखोकेँ होइत। ..लगले सिनेमाक रील जकाँ बेटाक जन्मसँ अन्तिम समय धरिक जिनगी तपेसरक आगू नाचि उठलैन।

किछुए-कालक पछाइत सुशीलाकेँ फेर दरद शुरू भेल। समैयक सँग दर्दो बढ़ए लगल। दर्दसँ सुशीला छटपटाए लगली।

सुशीलाक छटपटाहैट देखि सुनयना पल्हैनकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, अहाँ देखियौन ता बच्चा सम्हारि दइ छी।"

पेटपर हाथ दैते पल्हैन बुझि गेली जे दोसर बच्चा हेतैन। बजली-

"काकी, एकटा बच्चा आरो हेतैन।"

पल्हैनक बात सुनि, जहिना मेघ तड़कैत तहिना सुनयनाकेँ भेलैन। जोरसँ तपेसरकेँ कहलखिन-

"बौआ, बौआ!"

अकचका कऽ तपेसर बाजल-

"हँ, माए!"

“हँ, अँगनेमे रहह!”

करीब बीस मिनटक पछाइत बेटीक जन्म भेल। अखन धरि जहिना खुशीक सुगन्ध अँगनामे पसरल छल तहिना एकाएक ठमैक गेल। दोसर बच्चाक जन्म होइते सुशीलाक देह लर-ताँगर भऽ गेलैन। सुनयना दिस देखैत पल्हैन बजली-

“काकी, पुरबा लपटै छइ। अगियासी नीक-नहाँति जगा देथुन। ओना तँ सभ भगवानक हाथमे छैन मुदा जहाँतलिक पार लगत से तँ करबे करबैन। जानिए कऽ तँ भगवान दुख बढ़ा देलखिन। पहिल बच्चापर ई नजैर रखौथ आ दोसरपर हम रखै छी।”

कहि पल्हैन बच्चाक पोछ-पाछ करए लगली। साँस मन्द देखि मुँह-मे-मुँह सटा फुकि-फुकि साँसक गति ठीक केलैन। बच्चाक लक्षण देखि पल्हैनक मन बाजि उठल- ‘जरूर दुनू बच्चा ठहरबे करत।’

पल्हैनक नजैर पैछला काज सभपर पड़लैन। एहेन की पहिल-पहिल बेर भेल। केतेकोकेँ भेलैन। किछु गोरेक दुनू बँचलैन, किछु गोरेक एकटा आ किछु गोरे बच्चाक सँग अपनो चलि गेली। तँए काज तँ अनिसचित अछि मुदा अपना भरि तँ तिया-पछा करबे करबैन...।

तैबीच सुशीलाकेँ सुनयना पुछलखिन-

“कनियाँ मन केहेन लगैए?”

अर्ध-चेत अवस्थामे पड़ल सुशीला अपन टुटैत जिनगी देखि हाथक इशारासँ सासुकेँ कहलकैन। तैसँग मुँहक सुरखी कहिते रहैन जे नै बँचब। ..सुशीलाक इशारासँ सुनयना घबराए लगली। मनमे उठलैन तपेसर भारी विपैतमे पड़ि जाएत! वेचारा फट्टो-फनमे पड़ि जाएत। हम बुढ़े भेलौं, जएह कएल हएत सएह ने सम्हारि देबइ। मुदा विपैत तँ तेतबेटा नै छइ। खेती-पथारी, माल-जाल, कुटुम-परिवार छै तैपर सँ दू-दूटा चिल्का भेलइ। केना सम्हारि पौत! ने स्त्री बँचतै आ ने एक्कोटा बच्चा! हमहूँ केते दिन जीब। सभ किछु वेचाराकेँ हेरा जेतइ..! सुनयनाकेँ खीझ उठलैन, बुदबुदेली-

“हे भगवान! तोरा केहेन दुरमतिया चढ़लह जे एहेन गनजन वेचाराकेँ केलहक।”

आँगनमे बैसल तपेसरक मनमे उठैत जे जेतेटा मोटरी माथपर उठत

तेतबे ने उठाएब। नमहर मोटरी केतेकाल कियो माथपर सम्हारि कऽ रखि सकैए। मुदा तँए की, जीता जिनगी हारियो मानि लेब उचित नहि। करैत-करैत-लड़ैत-लड़ैत जे हेतै से देखल जेतइ।

जहिना रणभूमिमे दू दलक बीचक लड़ाइ अन्तिम दौड़मे अबिते दुनू दलक मन मानि लैत जे के जीतत के हारत। मुदा हरलोहोक बीच केते रंगक विचार उठैत जे किछु गोरे रणभूमिसँ भागए चाहैत तँ किछु गोरे अढ़ भँजिया नुकाए चाहैत। मुदा किछु एहनो होइत जे अपन बलि देखि स्वेच्छासँ अन्तिम समय धरि हथियार उठौनहि रहैत। केना नै उठौत? अपन जिनगीक संगी, जे कौआ-कुकुरक पेट भरि अपन मनोरथ पूरा करत आ हम गुलाम बनि दुश्मनक जहलमे सड़ब...।

तैबीच सुशीला अपन अन्तिम बात पल्हैनो, साउसो आ पतियोकेँ कहलक-

“नइ बँचब, हम दुनियाँक सभसँ पैघ पापी छी जे अपनो रक्षा नै कऽ सकलौं! दुनू बच्चाकेँ अहाँ सभ देखबै।”

बजिते आँखि बन्न भऽ गेलैन। प्राण तँ बँचल रहैन मुदा चेतन-शुन्य भऽ गेली।

सुशीलाक बात सुनि पल्हैन चमैक उठली। बाप रे! सभसँ बेसी भार अपने ऊपर आबि गेल। जन्मक पालनक भार..! अखन धरि जेतेठीम काज केलौं, एहेन काजसँ भेँट कहाँ भेल। बुझल बात कम आ अनभुआर बेसी बजरत।

..जेते अपना दिस तकैत जाइत तेते चिन्ता बढ़ल जाइत। बच्चाकेँ दूध पिआएब जरूरी भऽ गेल। माइक तँ यएह गति छैन। हे भगवान! कोनो उपाय धड़ाबह! मोन पड़लैन अपन बच्चा। अपनो तँ दूध होइते अछि तखन एते घबरेबाक की जरूरत। मुदा अपन दूध तँ छह मासक बकेन अछि। गौजरा तँ नहि। एते विचार करब तँ बच्चे मरि जाएत। हे भगवान जानिहह तूँ! मने-मन कहि पल्हैन दुनू बच्चाकेँ दुनू छाती लगा दूध पिआबए लगली। बच्चाक चोभ देखि पल्हैनक मन खुशीसँ नाचि उठल। ठानि लेलैन जे बच्चाकेँ मरए नै देब। आइए बकरी दूधक ओरियान करैले सेहो कहि दइ छिऐन आ टेम-कुटेम अपनो चटा देबइ। मुदा अपनो बच्चा तँ छबे मासक

अछि। सात माससँ पहिने केना दालिक पानि चटेबै, मातृत्त्व जगिते पल्हैन बुदबुदेली- "ऐसँ पैघ काज ऐ धरतीपर हमरा लिए की अछि! जँ दुनियाँ देखए बच्चा आएल हएत तँ जरूर देखत।"

पुतोहुक बात सुनि सुनयना चेतनहीन हुअ लगली। कासक फूल जकाँ मन उड़ि-उड़ि वौड़ाए लगलैन। बच्चाक मुँहपर नजैर पड़िते वौड़ाए भगवानकेँ उपराग दैत बुदबुदेली-

"कोन जन्मक कनाइर ऐ बच्चासँ असुलि रहल छह। ऐ निमू-धनक कोन दोख भेलइ। जँ तोरा नै सोहेलह तँ पेटेमे किए ने कनाइर चुका लेलह। एहेन बच्चाक एहेन गंजन तोरे सन बुते हेतह।"

चहकैत करेजसँ द्रवित भऽ सुनयना कुहैर उठली। एक तँ वेचारीक– पुतोहु– ऊपर तेहेन डाँग पड़ल जे अमूल्य कोखि उसरन भऽ गेलै, तैसँग बच्चा लटुआएल अछि। मुदा अपनो वंश तँ उसरने भऽ रहल अछि। थाकल-ठेहियाएल जकाँ छातीपर पथरो रखि आँखि ताकब मुदा तपेसर तँ से नइ अछि। जुआन-जहान अछि, हो-न-हो कहीं वौड़ ने जाए। केकरा के देखत! जहिना धारक बहैत धारामे माथक मोटरी खुललासँ मोटरीक वस्तु छिड़िया पानिक सँग भाँसए लगैत जइसँ किछु बिछेबो करैत आ किछु भँसियो जाइत तहिना सुनयनाक विचार किछु उड़ियाइत, किछु ठमकल आ छाती दहलाइत रहैन।

ओसारक खुट्टा लगा बैसल तपेसरक मन मानि गेलै जे चूक हमरोसँ भेल। आइ धरि जे देखैत एलौं वएह मनमे बैस गेल। की रेडियो-अखबारक समाचार झूठे रहैए जे दू-तीन-चारि धरि बच्चा मनुक्खकेँ होइ छइ। जहिना परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ बिनु सोच-विचार केनौं सभ लकीरक फकीर बनि लहास ढोइत अछि तहिना तँ केलौं। मुदा हाथक डोरा टुटने जहिना गुड्डी अकासमे उधिया जाइत तहिना ने तँ उधिया गेलौं। सोचैक, बुझैक बात छल जे एक बच्चा-ले केते सेवाक जरूरत होएत आ दू बच्चा-ले केते। मुदा से नइ बुझि सकलौं। आइ जँ बुझल रहैत तँ एहेन दिन देखैक परिस्थिति नइ बनैत। परिवार उजैड़ जाएत। वंश विलैट जाएत। मुदा जे चुकि गेलौं ओकर उपाये की? ..जहिना लटुआएल अड़िकंचनमे सुन्दर सुकोमल पेंपी निकलैत तहिना तपेसरक मनमे आशाक पेंपी उगलैन। धारक धारा सदृश सिक्त मनमे उठलैन, जहिना एक दिस परिवार, वंशकेँ

उजड़ैत-उपटैत देखै छी तहिना तँ भूत, वर्तमान आ भविस सेहो आँखिक सोझमे लहलहा रहल अछि। लहलहाइत परिवारकेँ देखि तपेसरक हृदय उफैन गेलैन। जहिना धारक धारा माने वेगमे टपैकाल ओरिया कऽ पएर रखितो थरथराइत पएर पिछड़ैत रहैत तहिना तपेसरक मन असथिर नै भऽ पिछड़ए लगलैन। मुदा जी-जाँति कऽ माटिपर पएर रोपिते मनमे उठलैन, माइयो जीविते छैथ, अपनो छी, तैपर सँ दूटा दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछिए। तखन परिवार किए उपटत? हँ, ई बात जरूर जे पुरुख-नारीक बीच बच्चा-ले माए भोजनक पहिल बखारी होइ छथिन। मुदा युग धर्मो तँ कहिते अछि जे आजुक बच्चाकेँ नसीबसँ माइक दूध कटि रहल छइ। माने ई जे अपन शरीरक गठन दुआरे लोक कृत्रिम दूधक ओरियान कऽ अपन दूध छोड़ा दइ छइ। तैयो तँ बच्चा जीविए जाइत अछि। तखन ई बच्चा किएक ने जीत?

सोगाएल तपेसरक मुँह देखि सुनयना बोल-भरोस दइले घरसँ निकैल लगमे आबि बजली-

“बच्चा, गाड़ीए पहिया जहाँति जीते जिनगी सुख-दुख अबैत रहैए। तइले सोगे केनहि की हेतह? भगवानक लीले अगम छैन। अखन हम जीविते छी। हमरा अछैत तोरा कथीक दुख!”

सिमसल आँखि उठा तपेसर माइक मुँहपर देलैन। हवामे थरथराइत दीपक टेमी जकाँ सुनयनाक छाती डोलैत रहैन। मुदा जहिना हवाक झोंककेँ सहन करैत दीप प्रज्वलित रहैत तहिना माइक धैर्यक लौ आ बोलसँ टपकल विचार सुनि तपेसरक मनक डोलैत जमीन थीर हुअ लगलैन। मनमे उठलैन, यएह माए पुरुख जानि अपन सहारा बुझै छैथ आ अखन सहारा बनि ठाढ़ छैथ। कलीसँ फुलाइत फूल जकाँ तपेसरक मन फुलाए लगल। तखने पल्हैन अपन मुँह उठा कऽ बजली- “काकी, एतै आबथु।”

पल्हैनक बात सुनि सुनयना तपेसरपर नजैर दौड़ा सोइरी-घर दिस बढ़ली। मनमे उठलैन, ओना तँ अन्हारघर साँपे-साँप रहैत मुदा होंथैरियो-थाहि कऽ तँ लोक अन्हारोमे जीविते अछि। सभ मिलि जँ लगि जाएब तँ बच्चा जरूर उठि कऽ ठाढ़ हेबे करत।

तपेसरक मनमे उठल, ‘जाधैर साँस ताधैर आस।’ जँ अपना सभ बुते काज नै सम्हरत तँ डॉक्टरकेँ बजेबैन। मुदा लगमे तँ ओहो नहियेँ छैथ। जँ रोगीए-केँ लऽ जाए चाहब सेहो भारीए अछि। एक तँ तेहेन सवारी सुविधा नहि, दोसर तीनि-तीनि गोरेकेँ लए जाएब। तेतबे नहि, अपनो सभकेँ जाइए पड़त...।

एक दिस अब-तबक स्थिति, दोसर दिस सवारीक ओरियान आ मनमे ईहो शंका जे डॉक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत बँचती कि नहि।

..जहिना अमती काँट एक दिस छोड़बैत-छोड़बैत दोसर दिस पकैड़ लैत तहिना तपेसरक मन ओझरा गेलैन। कोनो सोझ बाट आँखिक सोझहामे पड़बे नै करैन। बेकल मने तपेसर उठि कऽ सोइरी-घर पहुँच माएकेँ कहलक-

“माए...।”

‘माए’क पछाइत कोनो शब्द तपेसरक मुहसँ नै निकलल। तपेसरक बेकल मन देखि पल्हैन बजली-

“बौआ, एना मन छोट नै करू। जे करतूत अछि सएह ने अपना सभ करब। केकरो जान तँ नइ दऽ देबइ। जखनसँ दुनू बच्चाकेँ छाती चटौलिऐ तखन से कल पड़ल अछि। सभसँ पहिने दूधक ओरियान करू। अखन महींस-गाइक दूध पचबैबला नै अछि, केतौसँ बकरी कीनि आनू। ताबे केकरो बकरी दुहि कऽ लऽ आनू। एक तँ बकरियो सभ तेहेन अछि जे अपनो बच्चा पालै-जोकर दूध नै होइ छै, मुदा जेकरा एकटा बच्चा हेतै ओहन कीनि लिअ।”

अशौच दुआरे दुनू जौंआँ भाए-बहिन–धीरज आ घुरनीक–छठियार नइ भेल। ने कियो सोइरी सँठनिहारि आ ने केकरो मन कखनो थीर होइत जे नीक-अधलाक विचार करैत। ओना तीनूक–पल्हैन, सुनयना आ तपेसरक–मन हरिदम बच्चेपर रहै छेलैन मुदा कखनोकाल नेकरमसँ अकैछ मने-मन सोचैथ जे दुनूकेँ ॠृण असुलए भगवान पठौलैन। जेते ओकर ॠृण बाँकी छै ओते तँ असुले कऽ जान छोड़त।

..मुदा लगले मन घुमियोँ जानि जे विधातो भाग-तकदीरकेँ नै बदैल सकै छैथ। जँ दुनू बच्चा ऐ धरतीक सुख भोगए आएल हएत तँ नहियोँ

सेवा-बरदाइस करबै तैयो पानिक पाथर जकाँ जीवे करत। मुदा बच्चाकेँ छोड़ि तीनूक अपन-अपन जिनगी आ दुनियाँ सेहो छेलैन। पल्है‍ने वेचारी की करितैथ। एक तँ दस-दुआरी दोसर अपनो बाल-बच्चेदार परिवार तैपर सँ तड़िपीबा घरबला। धैनवाद बुढ़ीकेँ दिऐन जे सुखाएलो-टटाएल हड्डीपर ने कखनो हाथ-पएर कामै होइत आ ने मुँह सापुट लइत। अखनो वएह रूआब जे केते दिन जीब तेकर कोन ठेकान। हजार कि लाख आकि नहियेँ मरब तेकर कोन ठीक। मुदा साँपक मंत्र जकाँ भरि दिन सुगिया–पल्है‍न–सासुक नीक-अधला बात सुनैत रहैत मुदा कोनो बातक उतारा नै दइत। अपन सभ किछु बुझि सासु–झिंगुरी मालिक जकाँ काजक समीक्षा हरिदम करैत रहैत जे कोन-काज केहेन उताहुल अछि। जेहेन जे काज उताहुल तइ काजकेँ दोसर काज छोड़ि करए लगैत तँए सुगिया सासुक बातो कथा सुनि चुप्पे रहैत। तँए कि झिंगुरी हरिदम पुतोहुपर गरमाएले रहै छेली? नहि, केना रहितैथ, जखन सुगिया कोनो अँगनाक पवनौट, तीमन-तरकारी वा सिदहा आनि आगूमे दैन वा बैसलोमे टाँग पसारि जाँतए लगैन तखन वएह सासु ने असिरवाद दइ छेलखिन जे ‘हमरो औरूदा भगवान तोरे देथुन।’ यएह ने परिवार छी जे हरिदम सुख-दुख, नीक-अधला हँसैत-कनैत मस्तीमे चैनसँ चलैत रहए।

..झिंगुरियोक जिनगीमे तहिना भेल। एक्के सन्तानक पछाइत विधवा भऽ गेली। अपना खेत-पथार तँ नहि, मुदा अदहा गाम (भैयारीक हिस्सा) तँ रहबे करैन, खनदानी सम्पैत। जइसँ खाइ-पीबैक कोन बात जे दू पाइ बेटोकेँ खाइ-पीबैले दैत रहली। बेटा भलेँ नँशेरी किए ने भऽ गेलैन। मुदा अखनो धरि बेटाकेँ कहियो एकटा खढ़ उसकबए नै कहलखिन। जँ माए-बाप अछैत बेटा सुख नै केलक तखन माए-बापक मोले की! ऐ बातकेँ गीरह बान्हि झिंगुरी कहियो बेटाकेँ कोनो भार अखन धरि नै देने। भलेँ बेटा सहलोले किए ने भऽ जानि, मुदा सिद्धान्तो तँ सिद्धान्त छी। ओकरो अपन महत छइ। भलेँ करी वा नै करी। जँ से महत नइ छै तँ बुधियार लोकक बेटा बुड़िबक केना भऽ जाइए..?

दसदुआरी रहने सुगियाकेँ घरसँ बाहर एते काज करए पड़ैन जे दिन-राति रेजानिस-रेजानिस रहै छेली। साँझ-भोर, राति-दिन काज। केम्हरो जँत्ते-पीचैक समय तँ केम्हरो बिआउ करैक ताक। धैनवाद सुगियेकेँ

दी जे घिरनी जकाँ हरिदम नाचि काज सम्हारैथ। तहूमे मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक तँ सहजे माइए छथिन। दूध पिऔनाइसँ लऽ कऽ जाँति-पीचि कऽ देहो-हाथ सोझ करए पड़ैन। दसदुआरी रहने दस दिस सेहो आँखि-कान ठाढ़ राखए पड़ै छैन। जिनगीक काज सुगियाकेँ ऐ रूपेँ पकैड़ नेने जे दोसर दिस तकैये ने दैन। मन कहैन, जेकरा अपन माए जीबै छै स्त्री होइक नाते अपन चिलकाकेँ अपनो सम्हारि सकैए मुदा ऐ दुनू –धीरज आ घुरनीकेँ दुनियाँमे के देखनिहार छइ? हमरा हाथे जन्म भेल छै, जँ पैतपाल नै करबै तँ एकर परतवाए केकरा हेतइ। भगवानक घरमे दोखी के हेतइ। वेचारी दादी सुनयना छथिन मुदा ऐ उमेरमे दूध तँ नइ छैन। सोल्होअना बकरीए-दूधपर तँ दूधकटुए भऽ जाएत। जे बच्चा दूधकट्टू भऽ जाएत ओकर छाती कहियो सक्कत थोड़े हेतइ। ..खेने-बिनु खेने सुगिया भरि दिन ओइ जंगली जानवर जकाँ नचैत जे बच्चाकेँ दूध पिआ, गर लगा सुता चरौर करए जाइत, तहिना।

अधवयसू सुनयना अपन राजा बेटा–तपेसरक दुखक बोझ देखि दिन-राति ओइ बोझकेँ हल्लुक बनबैले एकबट्ट केने रहैथ। जहिना युद्धभूमिमे अपन राजापर दुश्मनक अबैत तीर देखि सेनापति उपयुक्त तीर तरकससँ निकालि दुश्मनक तीरकेँ रोकैक परियास अन्तिम साँस धरि करैत तहिना सुनयना तपेसरपर अबैत तीर- ‘भगवान केहेन डाँग मारलखिन जे जइ काजक लूरि पुरुखक हिस्सामे देबे ने केलखिन ओइ फाँकमे फँसा देलखिन। कोसिकन्हाक खेत जकाँ आड़ि-धूर मेटा बाउलसँ भरि देलखिन। स्त्रीगण होइत हमहूँ तँ स्त्रीगणक सभ काज–बच्चाकेँ दूध पीऔनाइ–नहियेँ सम्हारि सकब। जँ एहेन फाँसे लगबैक छेलैन तँ आरो नमहर लगा दुनू बच्चोकेँ माइए सँगे नेने जैतैथ। पुरुखक–बेटा–देह तँ खाली रहितै। मन होइतै चिड़ैक खोंता जकाँ परिवार बना रहैत नै मन होइतै लौका-तुम्मा लऽ दुनियाँमे घुमि-फिर जीबैत। जाधैर हम जीबै छी ताधैर माइक ममता पकैड़ रखितै। मुदा तहू बीच जँ पत्नीक सिनेह बेटा-बेटीक सोह जगितै तखनो तँ मन वौड़ेबे करितै..!

अनासुरती सुनयनाक मनमे उठलैन, माया-मोहक लत्ती जेते दूर धरि चतरैए ओते दूर धरि मनुक्ख तँ नइ चतरत। मनुक्खक तँ बाढ़ि छइ। तैबीच हम तपसियाक माए भेलिऐ, जेते धरि कएल हएत तेतबे ने करबै।

आकि ओकरा दुखसँ दुखी भऽ अथबल बनि बैस कऽ कानब। माइक काज जेते दूर धरि छै ओइमे कलछप्पन नै करबै। परिवारे केकर छी, केकरो नइ छी? तखन तँ मनुक्ख रहत घरेमे, खाएत अन्ने, पीत पानियेँ। जाबे जीबै छी ताबे बुझै छी जे सभ किछु छी, आँखि मूनि देबै अन्हारमे हेरा जाएब...।

सुनयनाक मन फेर घुमलैन– हमरा अछैत बेटाक आँखिक नोर देखब हाड़-चामक मनुक्खकेँ सहल जाएत? ओ तँ पाथरक नइ छी जे केतौ पड़ल रहत। मनुक्खकेँ तँ चलै-फिरै, सोचै-विचारै, बुझै-सुझैक बखारी छै ओ तँ देखिए-सुनि कऽ चलत। दुनियाँ बेइमान भऽ जाएत, भऽ जाह मुदा जहिना तपेसरक माए छिऐ तहिना तपेसर देखत। ओकरा मनमे कहियो ई नै उपकए देबै जे दुनियाँक सँग माइयो पएर पाछू केलक। ताधैर तपेसरक परिवारकेँ पकैड़ सम्हारने रहबै जाधैर बेकाबू नै भऽ जाएत। भगवान केलखिन आ दुनू पिलुआ उठि कऽ ठाढ़ भेल तँ जरूर परिवार फड़त-फुलाएत। अखन बेकाबू कहाँ भेल हेन, अखन तँ सम्हरैबला अछि। देखै छी, माटिक तरमे सजमैन-झुंगनीक बीआ गाड़ि देने, समय पाबि ओ जनैम कऽ ऊपर आबि धरतीसँ आसमान धरि लतैर जाइए! मुदा ई दुनू बच्चा तँ माटिक ऊपर अछि। जँ समुचित सेवा भऽ जाइ तँ जरूर कलैश कऽ गाछ बनत..!

..आशा-निराशाक बीच सुनयनाक मन वृन्दावनक कदमक गाछपर झुलैत राधा-कृष्ण जकाँ झूलए लगलैन। ने अक चलैन ने बक। आँखि निहारि दुनियाँ दिस देखए लगली। जहिना दू-पत्ती-चारि-पत्ती सजमैन-झुंगनी गाछ, जे लत्तीक आशामे अपनाकेँ ठाढ़ रखैत, तैबीच चारू भागसँ जहिना छोट-छोट कड़चीक टुकड़ी गाड़ि ओकर रक्षा लगौनिहार करैत तहिना सुनयना फुरफुरा कऽ उठि बड़बड़ेली-

“अनेर गाइक धरम रखबार।”

पितृ-प्रमुख परिवारमे पिताक परोछ भेलापर ताधैर मातृ-प्रधान परिवार बनल रहैत जाधैर पुत्र पितातुल्य नै बनि जाइत। ओहुना किछु काजमे मातृत्वे प्रमुख परिवार रहैत। एक तँ ओहिना बच्चाक पालन मातृ पक्षक काज बुझल जाइत तैपर सँ अखन धरि तपेसर माइयेक आदेशक पालन करैत आएल, तँए धैनसन। मुदा तैयो टुटैत परिवार आ नव उलझन

देखि मन ओझराए लगलैन। एते दिन खेती-पथारी करै छेलौं, दिन-राति ओहीमे लगल रहै छेलौं। आब तँ से नहि हएत। एक तँ दिनो-दिन माइक हूबा सेहो घटत, दोसर बच्चा सभले बकरीसँ गाए धरि पोसए पड़त। ओहिना थोड़े हएत। कहुना करबै तँ खुऐनाइ-पीऐनाइ, दुहनाइ-गारनाइसँ लऽ कऽ ओगरवाहि धरि करए पड़त। खुट्टापर छोड़ि कऽ केतौ जाएबो मोश्किल हएत। कुत्ता-बिलाइसँ लऽ कऽ साँढ़-बत्तू धरि उपद्रव करत। ओह! से नहि तँ खेत बँटाइ लगा देब। जँ से नइ करब तँ नइ सम्हरत।

छह मासमे छह दिन कम। बच्चाकेँ जँतै-पीचैक समय होइते सुगिया हाँइ-हाँइ गाइक नाइदमे सानी-कुट्टी लगा विदा भेली। डेढ़िया टपिते बामा भागसँ दहिना भाग बिलाइकेँ टपैत देखलैन। मनमे सगुन अपसगुन हुअ लगलैन। जँ दहिनासँ बामा भाग जाइत तखन ने अपसगुन होइत मुदा से तँ नइ बामासँ दहिना टपल। सगुन बुझिते सुगियाक मनमे खुशी उपकलैन। मुदा लगले फेर तर्कक सँग विर्तक, अति तर्क, अति वितर्क हुअ लगलैन। मन औनाए गेलैन। पुरुखक कहब ने छिऐन जे वामसँ दहिन टपने सगुन होइत, मुदा पुरुखक दहिन स्त्रीगणक वाम होइत आ वाम दहिन। प्रश्नक उत्तर नै पाबि सुगियाक मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले सोचलैन, अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे पूत हरबाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल। अनेरे कोन ओझरीमे ओझराएल छी। जानि कऽ रोग बेसाहि लेब तँ दोख केकर हएत। मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइतै दुनू धीरज आ घुरनीपर नजैर बढ़लैन। दुनूक जन्मक दिन गनए लगली। वरसपैत दिन पूस मास। आँगुरपर गनैत-गनैत पाँच मास चौबीस दिन पुरलैन। छह मासमे छह दिन कम। हिसाब जोड़िते मन मधुआ गेलैन। अकास-पतालक बीच हृदय नाचए-गाबए लगलैन। एक दिन बितने तँ उनतीस माघ हेरा जाइत आ छह मासमे तँ छबे दिन कम रहल हेन। सकताइत-सकताइत बच्चा छहमसुआ भऽ गेल। माइयोक पेटमे जे छह माससँ कम रहैए ओकर आँखि नै फुटै छै मुदा छह मास पुरलापर जे जनमैए ओ तँ भगवतीक बेलक आँखि सन आँखि नेनहि अबैए। छबे दिन ने कम छै, आँखिक गुणक सिरखार तँ आबिए गेल हेतइ। फूलक कोढ़ी जकाँ पत्ती सभ जरूर निकैल गेल हेतइ।

..अधखिल्लू फूल जकाँ सुगियाक मन हर्ष-विषादक बीच पड़ि गेलैन। पीपरक पात जकाँ हरिदम डोलैबला नहि, बल्कि बड़क पात जकाँ

भऽ गेलैन। ऐ दुनू बच्चाक माए तँ हमहीं भेलिऐ किने। अपन दादी–सुनयना–तँ पकले आम जकाँ छथिन। मुदा तैयो धैनवाद हुनके दिऐन जे घर-अँगनाक काजक सँग दुनू बच्चोकेँ सम्हारै छैथ। ओना भैयो–तपेसरो–अपन पुरुखपन काज–खेती-पथारी–छोड़ि अँगने-घरक काजमे भरि दिन लगल रहै छथिन। ई तँ ओही वेचारेकेँ धैनवाद दिऐन जे एहेन दुधमुहाँ बच्चाकेँ पोसि-पालि रहल छैथ। दस दुआरी रहितो अपनो की कम करै छिऐन। सुगियाक मन शान्त भेलैन। नजैर भगवान दिस बढ़लैन। भगवान दिस नजैर बढ़िते तामस लहरए लगलैन। कहैले भगवान छैथ, सभपर एक्के रंग नजैर रखैबला, मुदा वएह कहथु जे केकरो-केकरो तेते दइ छथिन जे तौला-कराही घिनाइ छै आ केकरो-केकरो चुट्टियाह बँसवाड़ि जकाँ ओइध धरि कोकैन कऽ उपैट जाइ छइ। जुगो तेहेन भऽ गेल जे जेहने पुरुखक किरदानी देखै छी तेहने मौगीक। जीबैयोबला बेटा-बेटीकेँ कियो मोड़ीमे फेकैए तँ कियो नून चटबैए। फेर लगले मन अपना परिवार दिस घुमि नँशेरी पतिपर पड़लैन। पतिपर नजैर पड़िते सासु-ससुरपर खौंज उठलैन। बुदबुदेली-

"बेटाकेँ बिगाड़ैमे जहिना बुढ़ियाक–माने सासुक किरदानी भेलैन तहिना बुढ़बाक। गाँजाक गूल सुनगबैत-सुनगबैत बेटो अपने जकाँ गजेरी भऽ गेलैन! असगरे हमहीं की करब? घरसँ लऽ कऽ बाहर धरि खटैत-खटैत देह अकैड़ जाइए।"

तपेसर ऐठाम पहुँचते सुगिया बच्चा लग बैसल सुनयनाकेँ देखलैन। बाटक सभ बात बिसैर मुस्कियाइत बजली-

"काकी, छह मास पुरैमे छबे दिन कम छैन। आब दुनू दुनियाँ देखबे करतैन।"

पल्हैनक बात सुनि जहिना सुनयना अपन सभ किछु बिसैर बच्चाकेँ हृदैमे समा लेलैन तहिना तपेसरक रोपल गाछीक फड़ देखि विस्मित भऽ गेली। मनमे आनन्दक हिलोर उठए लगलैन। दुनू मायपुतक मनमे सवुरक गाछ जनैम गेलैन।

अखन धरि सुनयना पल्हैनपर जेते ओंगठल छेली ओइमे कमी करैक एहसास भेलैन। छह-मसुआ बच्चा भऽ गेल, आब दूधक सँग अन्नो

चाटत। दालिक झोर बना खुआएब। मुदा लगले मनमे उठलैन जे दालियो तँ केते रंगक होइ छइ। सभ एक्के रंग थोड़े अछि। कोनो गलनमा होइ छै तँ कोनो गरिष्ठ। सबहक अपन-अपन चालि-ढालि आ गुण-धर्म होइ छइ। मन औनाए लगलैन। औनाइत-औनाइत सुनयनाक नजैर खेरही दालिपर गेलैन। जेहने आकार तेहने गलनमा। अखन कि कोनो रोटीपर लठगर खुआएब। पल्हैनकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, सभसँ नीक खेरहीए दालि हएत।"

"हँ। जेना-जेना देह सकताइत जेतै तेना-तेना खोराको बढ़बैत जइहैथ। आब अपनोसँ ओरिया-ओरिया जँतबो-पिचबो करिहैथ आ तेलो-कुर दिहहथिन।"

पल्हैनक सभ बात सुनयना सुनबो नै केली कि बिच्चेमे मन उड़ि कऽ तपेसरक जिनगीपर चलि गेलैन। वेचाराकेँ दुनियाँक कोनो सुख नै भेल। पाँचो बर्ख कनियाँक सँग नै रहल। कोन जन्मक पाप बिषेलै से नइ जानि। फेर मन उनैट अपनो दुनू परानीपर गेलैन। जनु माइयो-बापक कएल नीक-अधला काजक फल बेटा-बेटीकेँ पड़ै छइ। ..सुनयनाक विचार जेना-जेना उठैत जानि तेना-तेना मुँहक सुर्खी क्षीण हुअ लगलैन। कहीं हमरे सबहक कएल पाप ने तँ वेचाराक ऊपर डिरिआइ छइ! फेर मन आगू बढ़ि समाज दिस बढ़लैन। एहेन बेर-विपैत की तपेसरेपर पड़ल अछि आकि आनो-आनकेँ पड़लै।

सोगमे पड़ल तपेसरक नजैर अपन गिरैत परिवारपर अँटकल रहैन। जेते उपजा-बाड़ी होइ छेलए, बँटाइ लगौने दूधक डारही होइए। एक तँ समैयक कोनो ठेकान नहि तैपर लोढ़ि-बीछि कऽ सेहो लाइए जाइत अछि। मगर खरचा तँ बढ़िए गेल। अपनो काज-उद्यम छोड़ि भरि दिन अँगने-घरक काजमे लटपटाएल रहै छी। छोड़ियो केना देबइ? कोनो कि भेड़ी-बकरीक बच्चा छी जे पेटसँ निकलल आ कुदए-फानए लगत। मनुक्खक बच्चा तँ ताड़क गाछ जकाँ होइत अछि। जेकर जड़िए बन्हैमे केते समय लगै छइ। ई भिन्न बात जे ताड़क गाछ ने दोसरकेँ रोकैए आ ने अपने रूकैए।

भक्क टुटिते सुनयना पल्हैनकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, की कहलिऐ से नइ बुझलौं?"

पल्हैन कहलकैन-

"यएह कहलयैन जे आब अपनो सभ काज सम्हारि सकै छैथ।"

'सभ काज सम्हारब' सुनि सुनयनाक मनमे परिवार नाचि उठलैन। सोचए लगली जे जखन परिवारमे लोकेक बाढ़ि ठमैक गेल तखन धने-सम्पैत लऽ कऽ की हएत! पुन: विचार घुमलैन। जँ भगवान दुनूकेँ औरूदा देथिन तँ धन-सम्पैत कमा लेत। कमाइक बात मनमे उठिते अपन काज दिस नजैर बढ़लैन। बिसवास जगलैन जे जखन पिलुआ सन दुनू छल तखन तँ पालि लेलौं, आब तँ सहजे छह-मसुआ भऽ गेल। हमरा अछैते तपेसर कानए, ई केहेन हएत? फेर सुनयनाक मनमे उठलैन, अपने पुरना साड़ीक विस्टी पोताकेँ बना देब आ पोतीले घघड़ी सीबि देबइ। उमेरे बेसी भऽ गेल तँए की। जाबे देहमे हूबा अछि ताबे तँ खटबे करब, जखन हूबा टुटि जाएत तखन बुझल जेतइ। तँए की बेटाकेँ कानए देब। दुनियाँमे कियो ओकर नोर पोछैबला नै छइ। जँ नइ छै तँ सुगिये किए एते करै छइ, ओकरा हमरा परिवारसँ कोन मतलब छइ। मुदा छइ। जेकरामे प्रेम छै ओकरे दुनियाँमे सभ छइ। दुनू बच्चाकेँ जाँति पल्हैन बजली-

"आब जँ बकरीक दूध नहियोँ हेतैन तँ गाइयोक दूधसँ काज चलि जेतैन। आब ओछाइनपर बच्चा अपनो उनटै-पुनटैले जोर करतैन। आस्तेसँ कर घुमा दिहथिन। ओना, बेर-कुबेर हमहूँ अबिते रहबैन। भैयाकेँ कहि दथुन जे काल्हि पटोर पहिर अँगनासँ निकलबैन।"

चिन्तामे डुमल तपेसर अपनो सोचैत आ दुनू गोरेक गपो-सप्प सुनैत। ओना किसानी बुधि तपेसरकेँ, तँए जेतेक मन काज दिस दौगैत रहैन ओते गप-सप्प दिस नहि। अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओइमे एकाएक मोड़ एलैन। 108 दानाक तुलसीमालाक जप जकाँ तपेसरक दिन-राति अपन घर-गिरहस्तीक काजक बीच बीति जाइन। ओना, जहिना मनक बिसवासकेँ आँखि नै झूठला सकैत तहिना तपेसरक हृदैमे माए आ पल्हैन चौपड़ि मारि बैसल रहैन, तँए चिन्ता ओते नहि जेते हेबाक चाहिऐन।

दुनू बच्चाकेँ जाँति पल्हैन हाथ-पएर सोझ करैत, टाँग पकैड़ उल्टा झुला, चानिमे काजरक टीक्का लगा मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

"काकी, भैयाकेँ बिआह करा दथुन?"

'बिआह' सुनि सुनयना सुख-दुखक माने नीक-अधलाक बीचक सरोवरमे पैस सोचए लगली। हमरे आशा केते दिन हेतइ। चौथापनमे पहुँच गेल छी, जेते दिन जीबै छी, जीबै छी। मुदा तपेसरक जिनगी तँ से नइ छइ। अखन ओकरा की भेलै हेन। बच्चोक कोन ठेकान अछि। जुआनो-जहान चलि जाइ छइ। एक तँ मनुक्खे माटिक काँच बरतन छी, तैपर ओ दुनू बच्चा तँ आरो गिलगर माटि जकाँ अछि। नीक जकाँ सुखबो ने कएल हेन। एक रत्ती कोनो चीजक टोना लगतै, टन-दे चलि जाएत। मुदा परिवार तँ पुरुख-नारीक संयोगसँ चलैए। जाबे दुनूक संयोग नै हएत ताबे सृष्टि आगू-मुहेँ केना ससरत? बातकेँ टारैत सुनयना बजली-

"कनियाँ, कहलौं तँ नीके बात मुदा साल भरिक बीच केना एहेन गप करब।"

सुगियाक बात तपेसरो सुनने। तरे-तर तपेसरक मन बजैले ओढ़ मारैत रहैन मुदा बुधि रोकि दैन। ओना, केतबो बुधि रोकलकैन तैयो बजाइए गेलैन-

"कनियाँ, अहुँ नीकेले कहलौं, कटै नइ छी मुदा जँ दुनू बच्चा उठि कऽ ठाढ़ हएत आ दुनियाँ दिस डेग बढ़ौत तखने..! एक तँ अहुना मइटुग्गर बुझि कियो अपन बेटा-बेटीकेँ ऐ घर आबै ने दैत, तैपर जँ अपने दोसर बिआह कऽ लेब तखन तँ आरो कियो अपना बेटा-बेटीकेँ सतमाए लग आबए नै दिअ चाहत।"

तपेसरक बात सुनि पल्हैन बजली- "भैया, हिनका सन-सन समाजमे केते पुरुख छैथ। समाजो तँ एकरा अधला नै बुझि उठा लेने अछि, रस्ता बना देने अछि, तखन किए एना बजै छैथ।"

सुगियाक बात सुनि जहिना तपेसरक मुँह बन्न भऽ गेलैन तहिना सुनयनाक। मने-मन सुनयना सोचए लगली, कोनो नवकनियाँ– जेकरा दुनियाँ-दारीक थोड़ ज्ञान छै– परिवारमे सासु-ससुर, पति, भैंसुर-दिअर, ननैदक बीच अबैत। ओकरा काँच कड़ची जकाँ जइ रूपेँ लीबा कऽ बनौल जाइत ओइ रूपक बनैत। किए लोक सतमाए-केँ दोख लगबैए। ओहो तँ मनुक्खे छी। जँ ओकरा मनुक्खक रस्ता छोड़ा देब तँ ओ मनुक्ख बनत

केना? मुदा किछु मनुक्खो तँ ओहन होइए जे जेरमे रहए नै चाहैए। हँ, मुदा ओहन सतमाइये-टा तँ नइ होइए, आनो-आन होइए।”

सुनयनाक मन ओझरा गेलैन तँए चुप भऽ गेली।

तपेसरक मनमे उठलैन जिनगी की? जँ जीबैले जिनगी अछि, तँ जीबैले अनेको तरहक साधनक जरूरत सेहो होइत। पारिवारिक जिनगी-ले पुरुख-नारी दुनूक जरूरत होइत अछि। जँ से नइ हएत तखन परिवार केते दिन परिवारक रूपमे ठाढ़ रहत। अखन बुढ़ माइक आशापर दुनू बच्चा जीब रहल अछि जखन कि हुनको भानस-भात करए, सेवा-टहल करैले टहलूक जरूरत छैन। जँ ओहो मरि जेती तखन अपनो-सभकेँ के भानस कऽ खुऔत? अपने खाइक ओरियान करब आकि भानस। जँ भानसे नइ हएत तँ खाएब केना? जँ खाएब नै तँ जीब केना? जँ मनुक्खे नै जीवित रहत तखन परिवार केना बनल रहत? मुदा मनुक्खो तँ अजीव होइत अछि। कियो अपन घरमे लागल आगि मिझबै पाछू अपनो जरि-पकि जाइए तँ कियो हँसि-हँसि घरमे आगि लगबैए। मुदा अपना ऐठाम तँ से नइ अछि। अनजानमे भलेँ जे भऽ गेल हुअए मुदा जानि कऽ तँ किछु नइ भेल। पल्हैनक विचार तँ अधला नहियेँ छैन। ओहो वेचारी तँ दुनू बच्चाक-मुहेँ देखि बजली, अपन जानि कऽ बजली। हुनको मनमे कहाँ छेलैन जे दोसर स्त्री कुल्टे हेतैन। सुपात्रो भऽ सकैए। खाएर जे हौउ, मुदा परिवारमे लोकक जरूरत तँ अछिए। भलेँ अखन माए सम्हारि रहली हेन मुदा परोछ भेलापर–मुइलापर–तँ जरूरत हेबे करत।

..फेर मनमे उठलैन जँ कहीं माइक सोझहेमे बेटी भानस-भात करै-जोकर भऽ जाएत तखन। बिआह भेलापर ओहो सासुर जाएत। ताधैर पुतोहुओ तँ हएत।

साल लगि गेल। ऐ बेरक अदरा पावैन रीब-रीबेमे रहि गेल। माघमे तेहेन मारूख हवा चलल रहै जे एकोटा आमक गाछ मोजरबे ने कएल। धिया-पुताक कोन गप जे सियानो सभ आमक मास बुझबे ने केलक। जहिना बिनु बरक बरियाती नै होइत तहिना बिनु आमक अदरा पावैने की! पुरुखे रहने ने मौगी गिरथानि बनैत, बिना पुरुखे तँ राँड़-मसोमात कहबैत। अन्तिम जेठमे मौनसुनी तँ नहि, मुदा बिहड़िया बर्खा भेल। बर्खा भेने धरतीक रंगे बदैल गेल। आन साल जकाँ ने बेसी गरमी पड़ल आ ने बाध-

बोनक रूप बिगड़ल। हरिअर घाससँ बाध सुग्गा-पाँखिक रंगक साड़ी पहिरल जकाँ सुन्दर लगैत। अगता हाल भेने सुनयनाक पुबरिया घरक पछुआरक दाबा परहक गेनहारी सागक गाछ जनैम गेलैन। बीसे दिनमे आँगुर भरि-भरिक भऽ गेल। कनोजैड़ छोड़ै जोग भऽ गेल। काल्हिए बीरार देखि सुनयना विचारि लेलैन जे काल्हि ऐ सागकेँ रोपि लेब। अखन रोपलासँ पाँच दिन पछुएबे ने करत मुदा कनोजैड़ तँ ठीक रहत। तहूमे पछबा थोड़े बहैए जे रोपलापर एकोटा लटुआएत। दुनू साँझ पानि देबै, लगले लागि जाएत। कनी-मनी रौदमे अलिसाएत तँ सेहो रातिक ठण्ढमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जँ अखन नइ रोपि लेब तँ भदबारिमे तीमनक दिक्कत हएत। मुदा लगले मनमे पड़लैन भदबारिक साग। तत्-मत् करिते रहैथ आकि मनमे उठलैन पोरो-पटुआ साग ने भदबारिमे कफाह होइए, सभ साग थोड़े होइ छइ। जहिना जाड़मे सेरसो-तोड़ी झँसगर होइए आ चैत-बैसाखमे पोरो-पटुआ, तहिना ने भदबारिमे गेनहारी-ठढ़िया होइए। सुनयनाकेँ खुशी भेलैन। खुशी होइते मनमे चमकलैन गेनहारीक रूप। हरिअर साड़ीसँ सज्जित पात, तहिक बीच लाल डाँटक पाढ़ि, धरतीपर ओलैर मस्तीक आँखिसँ दुनियाँ दिस देखैत। तेतबे नहि, गेनहारी-पटुआ अपन जिनगी दोसराक सेवा-ले अरोपि बेर-बेर मुड़ी कटला पछाइतो, मुड़ी पैदा कऽ सेवा-ले इशारा करैत।

जहिना मुरगी चूजाक सँग खोपसँ निकैल ओचौनसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ीमे चरौर करैत, बोलियो सीखैत आ दुनियोँ देखए जाइत तहिना दुनू बच्चा–धीरज-घुरनी–क सँग सुनयना लोटामे पानि नेने पछुआर दिस विदा भेली। दावा लग पहुँच ठाढ़ भऽ गेनहारीक बीरारकेँ देखए लगली। देखिते मोन पड़लैन भीतमे साटि कऽ राखल गुरमीक बीआ। आँखि उठा कऽ देखलैन तँ चक-चक करैत बीआ नजैरपर पड़लैन। बीआ देखि मोन पड़लैन जे गुरमियोँ रोपैक समय आबि गेल। मारे बीआ अछि, एते थोड़े अपने रोपब। अनको देबइ। गुरमी मनमे रहबे करैन आकि दुनू बच्चा दिस तकली। गुरमीक कोमलता मनमे अबिते मुहसँ अनासुरती निकललैन-

“बौआ, आइ साग रोपि दइ छी काल्हि गुरमियोँ रोपि देब।”

दादीक बात सुनि धीरज बाजल-

“कोन गुलमी?”

भीतमे साटल गुरमीक बीआ आँगुरसँ देखबैत सुनयना बजली-

“ओ बीआ गुरमीक छी। जहिना अहाँ दुनू भाए-बहिन बच्चा छी तहिना ओहो बीआ छी। ओकरा खुरपीसँ माटिकेँ खुनि रोपि देबइ। पाँच-छह दिनमे गाछ जनैम जाएत। जहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा एतेटा हएब तहिना ओहो बढ़ि कऽ फड़ए लगत।”

दादीक बात सुनि घुरनी ठुनकैत बाजल-

“गुलमी लेब। गुलमी लेब।”

घुरनीक ठुनकबपर धियान नै दऽ सुनयना लोटाक पानि सागक गाछपर छीटिलैन। पानि छीटैत देखि घुरनियो चुप भऽ गेल। लोटा रखि सुनयना गाछ निंगहारि कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे एक दिससँ उखाड़ैबला सभ गाछ नै अछि। से नहि तँ छोटकाकेँ बेरा-बेरा बड़का उखाड़ब। चारि दिनक पछाइत छोटको रोपाउ भऽ जाएत। फेर मोन पड़लैन जे एक डेढ़ धूर करीबमे रोपब। चारि-पाँच डेग पूबे-पछिमे आ चारि-पाँच डेग उत्तरे-दछिने। एक-एक बीतपर रोपब। मने-मन हिसाब जोड़ि बीआपर नजैर दैते बुझि पड़लैन जे चारियो हिससँ कम्मे गाछ लगत। खाएर, भगवान सभ चीज अहिना दौथ जे अपनो खाएब आ दोसरोकेँ देबइ।

सुनयना निहुरि कऽ सागक गाछ उखाड़ए लगली। तैबीच दुनू भाए-बहिन–धीरज-घुरनी–एक्के गाछपर हाथ दऽ उखाड़ए चाहलक। एक-दोसराक हाथ-हटबैक कोशिश दुनू करए चाहलक। हाथ पकैड़ दुनू कटौझ करए लगल। दुनूक कटौझ नै छोड़ा सुनयना हाँइ-हाँइ छैँटगरहा गाछ उखाड़ि बजली-

“चलै चलू। भऽ गेल।”

आगू-आगू दुनू बच्चा आ पाछू-पाछू सुनयना आँगन एली। आँगन आबि बाटीक पानिमे गाछक जड़ि धोइ बाटीए-मे रखि देलखिन। रोपाउ जगहपर जन्मल घासकेँ उखाड़ि कातमे फेक ओसारक चारसँ खुरपी उतारि बीत-बीत भरिपर छअ मारि-मारि दड़ी बनबए लगली। गोर-दसेक दड़ी बनैबते दुनू भाए-बहिन हाथसँ खुरपी छीनए लगलैन। काजकेँ बाधिक होइत देखि सुनयना दुनू बच्चाक हाथ छोड़ा, बीच आँगनमे खुरपी फेक

देलैन। शंका रहैन जे खुरपी ने लागि जाइ। दुनू बच्चा खुरपी आनए दौगल तैबीच अपने बाटीसँ गाछ निकालि हाँइ-हाँइ रोपए लगली। दुनू बच्चा खुरपी पकैड़ फेर छीना-छीनी करए लगल। हाथमे खुरपी लगैक डर सुनयनाकेँ फेर भेलैन। दसो दड़ी रोपि बाल्टीन लऽ पानि आनए कल दिस विदा भेली। दुनू बच्चा खुरपी छोड़ि पाछू-पाछू दौगलैन। पानि आनि लोटासँ रोपलाहा गाछमे पानि दिअ लगली। फेर दुनू लोटा छीनए लगलैन। हाँइ-हाँइ पटा लोटा दऽ देलखिन। फेर दुनू लोटा छीना-छीनी करए लगल। तैबीच खुरपी आनि दड़ी खुनए लगली। दुनू बच्चाकेँ देखि सुनयना वौआए लगली। खुरपी लऽ दड़ी खुनब, कि रोपब, आकि पटाएब..?

अढ़ाइ बर्ख बीति गेल। दुनू भाए-बहिन–धीरज-धुरनी–दादियो आ पितोसँ बाजब सीख लेलक। दुनूक बोलो फरिछा गेल। सुपुट बोल निकलए लगल। पियास लगलापर ‘पानि’ आ भूख लगलापर ‘भात-रोटी’ बाजए लगल। बजरूआ बच्चा जकाँ मोबाइलसँ गप, छुड़ी- पिस्तौलक खेलौना आ छुरछुरी फटाका फोरब तँ नइ बुझैत मुदा गमैआ बच्चाक जिनगी जरूर जीबए लगल। गाम-घरमे जे गति विधवा, निस्सहायक होइत से गति मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक परिवारमे नइ भेल। ओना, गाम-घरमे गरीब मइटुग्गर, बपटुग्गरक प्रति सियानोक नजैर विषैला होइत। तेतबे नहि, विधवाकेँ डाइनक सँग अशुभ बुझल जाइत, दुखताह, मइटुग्गर आ बपटुग्गरसँ घृणा कएल जाइत अछि।

पानिक बाल्टीन नेनहि सुनयना कलपर पिछैड़ खसि पड़ली। ओना देहमे चोट लगलैन मुदा माथ उठले रहलैन। ईंटाक चोटसँ दहिना गट्टा टुटि गेलैन। तत्काल चोट तँ तेहेन नै बुझि पड़लैन मुदा गट्टा फुलब शुरू भऽ गेलैन। तपेसर बाँसक पात आनए गेल रहए। ओसारपर ओछाइन खसा एक्के हाथे सुनयना ओछा पड़ि रहली। ओछाइनेपर दुनू बच्चा सेहो बैसल। पात लऽ कऽ अबिते तपेसर माएकेँ सुतल देखि पुछलखिन-

“माए, सुतल किए..?”

नोर पोछि सुनयना बजली- “बौआ, कलपर खसि पड़लौं!”

‘खसब’ सुनि तपेसर चमैक कऽ पुछलखिन- “चोटो-तोटो लगलौं?”

“ईंटापर कनी चोट लगि गेल।”

लग आबि तपेसर गट्टाक फुलल देखि गुम भऽ गेला। फुलबक हिसाबसँ भरिसक टुटि गेलइ। मन चनैक करेज दरैक गेलैन। मनकेँ थीर करैत बजला- “डॉक्टरकेँ बजौने अबै छी। दबाइ देथुन नीक भऽ जेमे।”

कहि कलपर पहुँच हाथ-पएर धो, अँगा पहिर विदा भेला। आँगनसँ निकैलते मनमे उठलैन जहाँ धरि पार लागत तहाँ धरि तँ करबे करबैन। जिनगीक कोनो ठेकान नहि जे कखन की भऽ जाएत। अपने बाँसपर चढ़ै छी जँ ओतैसँ खसि पड़ी तखन की हएत। ..तपेसरकेँ चिन्ता बढ़ए लगलैन।

डॉक्टरक सँग आबि तपेसर माएकेँ कहलखिन- “माए, जेना जे भेलौ से सभटा बात डॉक्टर साहैबकेँ कहुन।”

सुनयनाक बात सुनि डॉक्टर पलश्तर कऽ देलखिन। फीस लऽ चलि गेला।

गाएकेँ पानि पीआ तपेसर बाँसक पात टोनियबए लगला। मनमे उठलैन काजक बोझ। एक तँ ओहिना दिन-रातिमे एक्को छन निचेन नै होइ छी, तैपर माइक गट्टा टुटब तँ आरो काज बढ़ा देलक। छोड़ैबला कोन अछि। गाएकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ, घर-बाहर केनाइ छोड़ि देब से नहि बनत। एक तँ लछमी दुआरपर कलपती दोसर बच्चाक माए तँ वएह छी। अखन की भेल, दू-अढ़ाइ बर्खक अछि, जँ ओकरा कनियोँ कऽ दूध नै हेतै तँ सक्कत छाती केना बनतै। अपने नै हएत तँ नइ हएत। माइयो तँ तहिना भऽ गेल। एक तँ बुढ़ाड़ी तैपर जँ पाओभरि दूध नै हेतै तँ बुढ़ाड़ीक हाड़ केना जुटतै। एते दिन दुनू बच्चेक ताक-हेर करए पड़ै छल आब माइयोक करए पड़त। उपजा-बाड़ी तँ तेहेन होइए जे पार लागब मोसकिल भऽ गेल अछि। रौदी भेने ऐबेर आरो संकट बढ़ि गेल। पैछले माससँ बेसाह लगि गेल। पाइ-कौड़ीक कोनो दोसर उपाय नहि। हे भगवान! कोन जन्ममे चूक भेल जे चर्मरोग जकाँ सौंसे देह एकबट्ट केने जा रहल अछि..! मुदा, की चिन्ता केने दुख भागि जाएत?

तपेसर पत्ता टोनि कुट्टी काटए लगला। मोन पड़लैन बाँसक पातक कुट्टी। एक तँ लगहैर गाएकेँ बाँसक पात खुअबै छी। मुदा उपाय की? जँ दू मुट्ठी हरियरी नै हेतै तँ नारक कुट्टी केना खाएत। अपने घास आनए जाएब

से ओतेक पलखैत रहैए। गाइक नादिमे कुट्टी लगा माए लग आबि बजला-

“माए, चिन्ता-फिकिर नै कर। दिनक दोख छेलै, भेलइ। तोरा कोन चीजक कमी छौ। हमरा सन बेटा आ दूटा पोता-पोती लगेमे छौ, तखन तोरा कथीक दुख।”

भरभराएल स्वरमे सुनयना बजली- “बौआ, आँखिक सोझमे तोहर दुख देखि मन छटपटाइए। जेहो कोनो काजमे सँग-साथ दइ छेलियह सेहो आब..!”

माइक बात सुनि तपेसर आवाक भऽ गेला। बोल बन्न भऽ गेलैन। मनमे उठलैन रौतुका सिदहा। बेर टगि गेल। केना राति चुल्हि चढ़त। बिनु खेने केकरो नीन हेतइ। जे कनी-मनी रुपैआ हाथमे छेलए सेहो दबाइए-दारूमे चलि गेल। एना भऽ कऽ कहियो हाथ खाली नै भेल छल। नइ तँ पचासे रुपैआ दुआरे डॉक्टर साहैबकेँ एना कहितिऐन..! तरे-तर तपेसरक छाती डोलए लगलैन। आगू नाथ ने पाछू पगहा। माएकेँ कहलैन-

“माए, खेत बेचने बिना एक्को दिन पार लगब कठिन भऽ गेल। से...।”

बेटाक बात सुनि सुनयना चुपे रहली। मनमे उठलैन घर-परिवार तँ ओकरे छिऐ। केना ‘हँ’ आकि ‘नइ’ कहबै। हमरा बुते की हेतइ। धारक वेग जहिना भौर लैत तहिना सुनयनाक मन भौर लिअ लगलैन। एक-एक पाइ कम भेने घर खसैत आ एक-एक पाइ जमा भेने उठैत अछि। एक-एक कट्ठा जँ बिकाइत गेल तँ निरभूमि होइमे केते दिन लगत। एक दिस परिवारक खर्च, दोसर दिस समैयक मारि आ तैपर जेते सम्पैत कमत ओते तँ आमदो कमे होइत जाएत! ..माएकेँ चुप देखि तपेसर बजला-

“जाइ छी, चौरी खेत बेचैक गप-सप्प करए।”

खेत बेचैक बात करए तपेसर विदा भेला। आँगनसँ निकैलते मनमे उठलैन सुपत्तोसँ कम दाम देत। जहिना गाड़ामे उत्तरीबलाकेँ कौआसँ खैर लुटौल जाइत तहिना ने हएत। मुदा लगले तपेसरक अपन मन कहलकैन-

“तोहर कोन दोख। मन-पेट काटि लोक घर बनबैए आ बिहाड़िमे उड़ि जाइ छै! तइमे बनौनिहारक कोन दोख।”

सवुर भेलैन डेग आगू बढ़ौला। दुनियाँ बड़ीटा छइ। जँ भगवान हाथ-पएर दुरूस रखने रहता तँ कहुना ने कहुना जिनगी गुदस कइए लेब। मुदा आइक जे परिस्थिति अछि ओकरा छोड़ि कऽ भागब नहि, भागब तँ कायरता हएत। कोन मुँह लोककेँ देखाएब। हमरा सन-सन ढेरो लोक अछि। ..लगले तपेसरक मन उनैट गेलैन। जहिना गाममे केतेको वृत्तिक लोक होइत अछि तहिना गामोक अनेक रूप होइए। एक्के गाम केकरो लेखे विद्वानक होइत तँ केकरो लेखे मुरुखक। केकरो लेखे शराबी-जुआरीक होइत, तँ केकरो लेखे बेइमान-शैतानक। तँए कि आमक गाछमे तेत्तैर फड़ि जाएत आ तेत्तैर गाछमे आम? सबहक अपन-अपन गुण-सोभाव आ चलैक रस्ता होइ छइ। कियो फटेहाल जिनगी पाबि जीबैए आ कियो सुभितगर जिनगी जीबैए। एकर माने ई नहि जे फटेहाल जिनगी जीनिहार पतिते भऽ जाए। हँ, होइतो अछि। मुदा जेकर जेहेन विचार तरगर रहैए ओ ओहन जिनगी बना जीबैमे आनन्द प्राप्त करैए। आनन्दे प्राप्त करब तँ उदेस होइत अछि जिनगीक। कियो तत्त्व-चिन्तनमे समय लगबैत अछि तँ कियो दिन-राति लुचपन्नी केने घुरैत। एहनो-एहनो तत्त्व चिन्तक ऐ धरतीपर भेल छैथ जे दोहरा-तेहरा कऽ जिनगी मांगि तत्त्व-चिन्तन करैत रहला। ऐ असीमित भूमाकेँ कठिन मेहनतेसँ जानल आ ताकल जा सकैए।

..टोलक अन्तिम छोड़पर पहुँचते तपेसरकेँ कलकत्तासँ आएल खुशीलाल पुछलकैन- "भाय केतए जाइ छी?"

खुशीलालक बात सुनि तपेसर ठमैक गेला। जहिना खुशी मनमे मधुआएल बोल पनपैत तहिना दुखी मनमे सिनेहक बोल। कनीकाल चोकरियाएल ठोर, थरथराइत पिपनी रूपमे ठाढ़ भऽ मिरमिराइत तपेसर बजला-

"बौआ, विपैतमे पड़ल छी। माएकेँ हाड़ टुटि गेलैन। पलश्तर तँ करा देलिऐन, मास दिनक पछाइत पलश्तर कटतैन। तैबीच पथ-पानिक सँग-सँग दबाइ-दारू सेहो चलतैन। केते कहबह?"

"भैया, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जेते शक्ति अछि ओते मदैत करब। साल भरिपर चारि-पाँच हजार रुपैआ लऽ कऽ कलकत्तासँ आएल

छी। अखन जेते पाइक काज अछि लिअ, छह मासमे बिना सूदिक घुमा देब। अखन अहूँक काज चलि जाएत आ कनी दिके कि सिके अपनो चला लेब।"

बिनु सूदिक रुपैआ सुनि तपेसरक मनमे खुशी भेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे बेथा सुनि खुशीलाल औगुता कऽ ने तँ बजला। जहिना ओ बजला तहिना की हमहूँ करब। जहिना देहमे रोग सन्हियाइते रसे-रसे पसरए लगैत तहिना तँ अखन अपनो अछि। छह मासक समय दइ छैथ मुदा ओरियान हएत? दिन-दिन खरचो बढ़बे करत जखन कि आमदनीक कोनो जोगार नै देखै छी। तखन केना लेब? बजला-

"बौआ, दू कट्ठा खेते लऽ लएह।"

खेतक नाओं सुनि खुशीलाल सहैम गेला। मनमे उठलैन- एक तँ वेचारे विपैतक मारल छैथ। तैपर सँ खेत लेब तँ करेज थीर रहतैन? जखन करेजे थीर नै रहतैन तखन तँ आरो सोग बढ़बै करतैन किने। कहलखिन-

"भैया..!"

'भैया' बजैत खुशीलालकेँ आँखिमे नोर आबि गेलैन। नोर पोछैत बजला-

"छह मासक बदला दू-चारि सालक पछाइते देब।"

बिनु सूदिक रुपैआ तपेसरक मनकेँ तड़का देलकैन। मनमे चमकलैन सूदिप्रथा। जैपर दुनियाँक बैंक ठाढ़ भऽ नँगटे नचैत धनीकक (शासनक-सत्ताक) फुलवाड़ीक शोभा बढ़ौने अछि। जइसँ देशक उन्नति माने मनुक्खक कल्याण मुँहक बोल मात्र रहि गेल अछि। तैठाम समाजमे..! समाजकेँ सूदि दू भागमे बाँटि देने अछि एक सूदिखौक आ दोसर सूदिदार। बैंकक सूदि कम होइ छै मुदा छबे मासमे मूल धन बनि सूदि पैदा करए लगै छइ। बिआजक बंश दुनियाँमे पसैर गेल अछि। जखन कि समाजक सूदि एकहरफी चलै छइ। भलेँ महाजनक बोही गीता-रामायणक थाकमे रहि पारसमणि जकाँ बोहियो गीता-रामायण बनि जाइत। देन-देनक सीमा-सरहद तोड़ि गीता-रामायणपर हाथ रखैत खौदकाक घराड़ीक रजिष्ट्रीक समय बना लइत।

..लगले तपेसरक मन घुमि अपन समस्यापर एलैन। छोट भाए जकाँ

खुशीलालकेँ कहलखिन-

“बौआ, लोकक लाइगमे लोक अही दुआरे बसैए जे सुख-दुख सँग मिलि जीब। टुटल सीढ़ी जकाँ अखन परिवारक स्थिति बनि गेल अछि। कोहुना कऽ जँ एकटा पएर रौपे छी तँ दोसर टुटि जाइत अछि। एक्को डेग ससरब कठिन भऽ गेल अछि। जेना बुझि पड़ैए जे पानि-बिहाड़ि, पाथर-ठनका सभ सँगे आबि गेल अछि। जिनगीक कोनो ठेकान नै देखि रहल छी। जहिना पानिमे नाव खेबनिहारक लग्गी थाह नै लैत तहिना भऽ गेल अछि।”

अनायास खुशीलालक मुहसँ निकललैन-

“भैया! लोकेक काज लोककेँ होइ छइ।”

तैपर तपेसर बजला-

“बेस कहलह। मुदा लोकोक बीच खाढ़ी बनल अछि। तोरासँ सात कछे बेसी सम्पैत अछि। मुदा जखन दुखेक जिनगी भगवान देलैन तखन ओइसँ केते पड़ाएब। जीता-जिनगी आँइखो केना मूनि लेब। मुदा तोड़ा पाबि छाती सूप सन भऽ गेल। जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ खढ़क असरा होइत तहिना बुझि पड़ैए। एकटा संगी भेटल। मुदा दुखो असान नै अछि। समैया नहि बरह-मसिया अछि। तोरो कहबह जे जखन एते मेहनत कऽ कमाइ छह तँ पाइकेँ राइ-छित्ती नइ करह। अखन जे खेत बेचै छी ओ तुहीं लऽ लएह। फेर जँ बेचब तँ तोरे देबह। मरियो जाएब तैयो तोहर बेटा-पोता बाजत जे फँल्लाबला खेत छी। वेचारा माइयक सेवामे बेचलक।”

तपेसरक बात सुनि खुशीलालक हृदय पसीझ गेल। चुप-चाप घरसँ एटैची निकालि अनला। चाभीसँ खोलि पाँचो हजार रुपैआ निकालि तपेसरक आगूमे रखि बजला-

“भैया, अखन धरि ने केकरो कोनो चीज ठकलिऐ आ ने चोरा कऽ एकोटा खढ़ उठौलिऐ। दुनू हाथ उठा भगवानसँ कहै छिऐन जे जहिना अखन धरि निमाहलौं तहिना आगूओ पार लगाएब।”

गंगाजल जकाँ खुशीलालक विचार सुनि तपेसरक मनक बखारीक मुँह खुजि गेलैन। बजला-

"बौआ, सभ बुझै छैथ जे जमीन जाल सदृश होइत अछि। जाल बनौले जाइत अछि फँसबैले। तोहर हृदय सौदा कागत जकाँ छह। ऐपर प्रेमो कथा लिखल जा सकैए आ अपराधिक सेहो। मुदा हम नै चाहब जे तोरा मनमे कनियोँ गन्दगी आबह। देखहक, जमीनेक चलैत झूठ-फूससँ लऽ कऽ बेइमानी-शैतानी, मारि-पीट, केश-मोकदमा सभ होइत अछि। कियो जबुरिया लिखा बेइमानी करैए तँ कियो महदा लिखा। कियो दोसरसँ निशान लऽ दोसराक हड़पैए तँ कियो बलजोरी आड़ि तोड़ि अपनामे मिला लइए। केते कहबह!"

तपेसरक मुहसँ नव बात सुनि, जहिना तैयार खेतमे बाउग कएल फसल अँकुरि धरतीसँ ऊपर अबैत तहिना खुशीलालक मनमे जिनगीक नव-नव अँकुर जनमए लगल। नव अँकुर देखि जहिना धरतीकेँ अपन निरोग कोखिक एहसास होइत तहिना खुशीलालक हृदैमे भेल। विह्वल होइत बजला-

"भैया, दुनियाँ किछु हौउ आगि लगौ, पाथर खसौ मुदा मनुक्ख अपने जिनगीक जवाबदेह होइए। एक्के गाछक एक डारिमे बाँझी लगलासँ बँझिया जाइ छै, तँ दोसर चुट्टिया जाइ छइ। मुदा एकर माने ई नइ ने जे ओकरामे फड़ैक शक्ति नै छइ। फड़बो करैए! कियो किछु करैए करह, जहिना अखन धरि जिनगीमे कोनो लेन-देन नै भेल, भाए-भैयारी जकाँ रहलौं तहिना जीता जिनगी रहब। अहाँ जेठ भाय तुल्य छी जे कहब, करैले तैयार छी।"

खुशीलालक बात सुनि तपेसरोक हृदय परसाएल आम जकाँ पलपल करए लगलैन, बजला- "बौआ, अपना गाममे चारि मेलक जमीन अछि। बाड़ी-घराड़ी, भीठ, मध्यम धनहर आ चौर। एक गामक रहितो चारि तरहक दाम छइ। कारणो छै उपजा आ उपयोगक। घराड़ीक जमीन ऊँचगर होइए जइसँ घर बनबैक काजमे अबैए। भीठ सीमानपर भेल। घरो बनौल जा सकैत मुदा घर नै बनने उपजो-बाड़ी होइत आ बागो-बगीचा लगौल जाइत। मध्यम धनहरमे सिरिफ अन्ने उपजैत अछि। जखन कि नीच जमीन भेने चौरीक महत सभसँ कम होइ छइ। कारण छै जे बेसी बर्खा भेने वा बाढ़ि एने ओकर फसल दहा-भँसिया जाइत अछि। चौरमे ने पानिक उपज होइत आ ने उपराड़िक। ओना, जँ ओकरा मुँह-कान बना

पानिक वस्तु उपजौल जाए तँ ओहो ओहने मूल्यवान हएत जेहेन दोसर होइत। ओहो धरतीए छी, बनौलापर सभ तरहक बनि सकैए। मुदा केते कहबह। बड़ीखान घरसँ निकललौं, अखन जाइ छी।”

तपेसरकेँ दुनू बाँहि पकैड़ खुशीलाल बैसबैत कहलकैन-

“भैया, अहाँ पाबि बहुत पेलौं। आइ बुझि पड़ैए जे हमहूँ समाजक लोक छी। सोझे गामक सीमानमे धर बान्हि रहने तँ नहि हएत, हएत तँ तखन जखन सबहक सुख-दुख मिलत, जइसँ सभ एकबट्ट भऽ जिनगी बितौत। खाली हाथे केना जाएब। जँए एत्ते समय बीतल तँए कनी आरो बितह। अहूँक एकटा काज भेल रहत।”

तपेसर बाजल-

“बौआ, खेत कोनो अन-पानि छी जे नापि-जोखि मूल्य बनत। एकर मूल्य आड़ि-पाटिक मूल्यसँ होइत। सभ तरहक जमीनक लेन-देन समाजमे चलिते रहैए। अपना गामक चौरी खेत डेढ़ हजार रुपैए कट्ठा बिकाइत अछि दू कट्ठा खेत देबह, तीन हजार रुपैआ दएह।”

तीन हजार रुपैआ गनि खुशीलाल तपेसरकेँ देलकैन। रुपैआ नेने तपेसर विदा भेला। बाटमे हिसाब बैसबए लगला जे सभसँ बेसी जरूरी बुतातक अछि। पहिने मास भरिक बुतात कीनि लेब। बाँकी जे बँचत हाथ-मुट्ठीमे रखब। जखन घरमे आगिए लगल अछि तखन कोन लुत्ती केमहर उठत तेकर कोनो ठीक।

मास दिन बितलापर सुनयनाक हाथक पलश्तर काटि डॉक्टर कहलकैन- “भारी काज नै करब। ओना बुढ़क हड्डी छी तँए बच्चा जकाँ नहियेँ जुटत मुदा तैयो बँचा कऽ रहब तँ नीके रहत।”

डॉक्टरक बात सुनि सुनयनाक मनमे उठलैन जे जँ भारी काज नै करब तखन जिनगी भारी केना बनत। जिनगीमे हल्लुक-भारी सभ रंगक काज अबैए। मुदा जीते-जिनगी ने दुनियाँ देखै छी, आँखि मुनब सभ हेरा जाएत। कहुना भेलौं तँ बुढ़े भेलौं। मुदा जाबे पोता-पोती अपने जीबै-जोकर हएत ताबतो जँ जीब जाएब तैयो नीके हएत।

शरीरसँ शरीरी धरि सुनयनाकेँ सोगसँ सिकुड़ए लगलैन। एक दिस बेटाक बेथासँ बेथित मन, तँ दोसर दिस मइटुग्गर पोता-पोतीक जिनगी

देखि सुनयना झखैत, तँ तेसर दिस जिनगी भरि पालल-पोसल, छाउर-गोबर देल खेतकेँ बोहाइत देखैत, तँ चारिम दिस अपन देहक दुखसँ दुखीत..। ओना, जीबैक आशा मनमे उत्साह जगबैत रहैन मुदा जेना डिबियाक इजोतकेँ घनगर अन्हार घेरैत-घेरैत छोट बना दैत तहिना सुनयनाकेँ भऽ गेलैन। अन्हार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करैथ। जेना खसैत जिनगी उठल जिनगीकेँ दाबि सवारी बना लेलकैन, तहिना सुनयना ओछाइन धऽ लेली। केतबो हूबा उठैले करैथ मुदा उठि कऽ बेसीकाल बैसले नै होइन। बिछानपर पड़ल-पड़ल पहिलुका कएल काज भरि दिन पढ़ए लगली। जखन कखनो केम्हरोसँ आबि तपेसर पुछैन जे माए, मन केहेन लगै छौ। तँ जहिना कोनो फल वा तरकारीमे गुण तँ रहैत मुदा कोनो रसक सुआद नै रहैत तहिना सुनयनाक मन बेरस हुअ लगलैन। बेरस होइत-होइत मरि गेली।

फगुआक तीन दिनक उत्तर चैती बर्खा भेल। ओना कुमासक बर्खा छल मुदा मौसमक रंग आरो हरिया गेल। कनी-मनी जे तापसँ दुपहरमे पसेनाक आगमन हुअ लगल से एकाएक रूकि गेल। घूरक ओरियान जे बन्न हुअ लगल छल ओ फेर दोबरा गेल। घरक राखल कम्मर, सीरक, सलगी फेर निकैल गेल।

पहिल बर्खा भेने सबहक घर चुबल। शीतसँ भीजैत आएल चार रौद पड़ने, पैरक बेमाए जकाँ चिड़ी-चोंत भऽ फटि गेल। जइसँ बर्खामे बखूबी चुबल। चुबैक आरो कारण छेलइ। चारमे फड़ल गराड़केँ तकैत-तकैत चिड़ै सभ तेना खोदिया देने रहै जेना चौरी खेतमे धिया-पुता अनेरुआ केशौर उखाड़ैमे कऽ दइत। छप्पर सभमे खाधि बनि गेल छेलइ। ओना, पहिल बर्खा होइक कारणे केकरो मुँह मलिन नै भेलइ। पहिल बर्खामे अहिना होइत आएल अछि, जे सभकेँ बुझल। मुदा जहिना चैत माससँ साल शुरू होइत तहिना बर्खाक शुरूआत सेहो चैतेसँ भेल। पहिल पानि भेलापर सबहक मनमे उठल जे जखने अँटिएलहा नार-खढ़ सुखत आकि घर छड़ा लेब। से भेल कहाँ! पहिल बर्खाक दोसरे दिन दोहरा गेल। दोहरेबे नै कएल जे दोहरैबते रहि गेल। गोटे दिन दोहरा कऽ, गोटे दिन नागा हुअ लगल। पूस-माघ-फागुनमे जे नार वा खढ़ चैत-बैशाख-जेठमे छाड़ैक उदेससँ अँटियौल गेल छल ओ जाँकेमे भीज-भीज सड़ए लगल। जहिना एक बेर

धारक नासी बाढ़िमे बहैत-बहैत सनमुख धार बनि जाइत तहिना चुबैत-चुबैत सबहक घर चुबाठ बनि गेल। चारक खढ़ो आ बत्तियो आ कोरौओ सड़ि-सड़ि खसए लगल। तहिना भीतक माटि सेहो धोखैर-धोखैर खसए लगल। थाल-कादोक घर बनि गेल। बर्खा हुअ लगै आकि कियो छिपली-बाटीसँ घरक पानि उपछैत कियो कोदारिसँ काटि-काटि भीतक खसल माटि हटबैत। खाएल अन्न लोककेँ पचब कठिन भऽ गेलइ।

अपन घरक दशा आ अपना परिवारकेँ अवग्रहमे फँसल देखि तपेसर भगवानकेँ सुमैर-सुमैर कहैन 'हे भगवान, अपना देश लऽ चलू। किए नर्कमे घिसियौर कटबै छी।'

मुदा खाली कहनेटा सँ नै होइत, लैयो गेनिहार ने चाही! अपन आगूक रस्ता बन्न देखि तपेसर पाछू घुमि देखैथ तँ कनैत मन चिकैड़-चकैड़ कहैन जे आनो जन्मक पाप लोककेँ बिसाइ छै, मुदा अपना तँ पैछलो जन्मक पाप मन नै पड़ैत अछि। ..हारि-थाकि वेचारा अन्हारमे चलैत बटोही जकाँ आँखि मूनि थाहि-थाहि आगू डेग बढ़बए लगला। साल बीतल, सबहक जान तँ बँचल मुदा रहैक घर रहैबला नै रहल।

धारक पानि जकाँ समय ससरल। दुनू भाए-बहिन–धीरज-घुरनी–पाँच बर्खक भऽ गेल। घरक छोट-छोट काजो आ खेतसँ बथुआ सागो तोड़ि-तोड़ि दुनू भाए-बहिन आनए लगल। आमक मासमे चटनी-ले गाछीसँ आमो बिछ-बिछ आनए लगल। जहिना गहुम-बदामक अँकुराकेँ कौआ उखाड़ि-उखाड़ि खाइत, से डर आब तपेसरकेँ दुनू बच्चाक प्रति नइ रहलैन। गील माटिक बनल बरतन वा मूर्ति जहिना रौद पाबि सकता जाइत तहिना दुनू भाए-बहिनक सकताइत शरीर देखि तपेसरक मनमे खुशी हुअ लगलैन। नहियोँ माए छै तैयो दुनू उठि कऽ ठाढ़ भेल! आब तँ केकरो गाइयो-महींस चरा गुजर कऽ सकैए। कहुना जीविए लेत। दुनियाँ देखबे करत। जँ मइटुग्गरोक कलंक लगल छै तँ की बिआह दान नै हेतइ? जरूर हेतइ। जहिना हमर बेटा-बेटी मइटुग्गर अछि तहिना केतेकोकेँ हेतइ। ..अपन कमैत भार देखि तपेसरक मन दुनू बेटा-बेटीक जिनगीपर पड़लैन। आब स्कूल जाइ-जोकर भऽ गेल। जुग-जमाना बदैल रहल अछि। तेहेन समय आबि रहल अछि जे बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ के पुछत! से नहि तँ दुनूक नाओं स्कूलमे जरूर लिखा देब।

..स्कूल मनमे अबिते तपेसरक नजैर लत्ता-कपड़ा आ सिलेट-पेन्सिलपर पड़लैन। खाएर जे हौउ, बरस्पैत दिन जरूर नाओं लिखा देब। आँगुरपर दिन गनिते तेसरे दिन बरस्पैत भेटलैन। परसू तँ नाउए लिखाएब, तैबीच लत्तो-कपड़ा आ सिलेटो-पेन्सिल कीनि देबइ।

दोसर दिन भोरे तपेसर रोटी आ अल्लूक सन्ना बनौलैन। तीनू गोरे खा बजार विदा भेला। दुइए कोस बजार अछि उठैत-बैसैत साँझ तक घुमि आएब। अपना डेगे नै ओकरे सबहक डेगे चलब। कहुना छै तँ धिया-पुताकेँ नवका पएर छै किने, कुदिते-फनिते चलि जाएत। भूख लगतै तँ मुरही-कचड़ी कीनि देबइ। दू फँक्का अपनो खा लेब। एकटा काज तँ भऽ जाएत किने।

बजार पहुँच दुनू भाए-बहिनकेँ एक-एक जोड़ पेन्ट, एक-एकटा गंजी आ एक-एकटा अँगाक सँग एक-एक सिलेट आ डिब्बो भरि पेन्सिल कीनि तीनू गोरे घुमि गेला।

सूर्योदयसँ पहिनहि तपेसर उठि जलखैक ओरियान केलैन। भिनसुरका स्कूल छीहे। बेरुपहर नाओं लिखाएब ओते नीक नहि। अखन जे नाओं लिखा देबै तँ बेरसँ पढ़ैयोले जाए लगत।

टेल्हूक बेटा-बेटी भेने तपेसरक जान हल्लुक भेलैन। आँगन बहारब, चुल्हि-चिनवार नीपब आ थारी-लोटा धुअब-माँजब इत्यादि घुरनी करए लगल। अँगनाक काज पतराइत देखि तपेसर सोचलैन जे खेती अपने करब। समय बदलने खेतीमे नव-नव ओजारो आएल। जइसँ उपजो-बाड़ी बढ़ल आ हल्लुको भेल। जैठाम तीन-तीन-चरि-चरि गाड़ करीन लगा लोक छह-कट्ठा-आठ-कट्ठा खेत भरि दिनमे पटबै छल तैठाम दमकल बोरिंगसँ चारि कट्ठा घन्टा भरिमे पटैए। तहिना टेक्टरसँ खेत जोतब, थ्रेसरसँ गहुम-धान दौन करब सेहो असान भऽ गेल।

ओना तपेसरक एक चौथाइसँ बेसी खेत बीकि गेलैन मुदा तैयो मनमे एलैन- जे जेतबो खेत बँचल अछि ओतबोमे जँ नवका ढंगसँ खेती करब तँ पहिनेसँ केते गुणा बेसी उपजा हएत। जहिना नव-नव ओजार बनल तहिना नव-नव किश्मक बीआ सेहो बनल। जे धान अदहा मनसँ लऽ कऽ कट्ठा मन उपजै छल ओ आब क्विन्टल कट्ठा उपजए लगल। ..जेते आगू दिस नजैर तपेसर बढ़बै छला तेते आशाक प्रखर ज्योति आँखिक

सोझमे आबए लगलैन। मुदा समस्यो तँ झमटगर अछि। एक तँ बाध सभमे छिड़ियाएल नीच-ऊँच साइजक खेत, तैपर माल-जालसँ लऽ कऽ बोनैया जानवर, चिड़ै-चुनमुनीक सँग मूसक उपद्रव, चोरा कऽ जजाति कटैसँ लऽ कऽ गाए-महींससँ चोरा कऽ चरबै धरिक उपद्रव इत्यादि ओझरी देखि तपेसरक मन ठमैक गेलैन।

जहिना सघन बोनमे लोक हेरा जाइए जइसँ केम्हरो बढ़ैक साहसे ने होइत मुदा बिना निकलने जानो बँचैक सम्भावना नै रहैत तहिना तपेसरोकेँ भेलैन। ओझराएल मन संगी-सहयोगी ताकए लगलैन। संगी तँ जरूर अछि मुदा दू तरहक। पहिल ओहन जे जीवनक एक रस्ता बुझि अपनो कल्याण बुझैए आ दोसर अछि दोसराक कान्हपर बन्दूक रखि चलबैबला।

..सोचैत-विचारैत तपेसरक नजैरपर तीनटा संगी पड़लैन पहिल समाजक सहयोग, माने गौंआँक सहयोग आ दोसर बैंक आ तेसर सरकारी सहयोग। समाजमे जाति-समप्रदाय ऐ रूपेँ पसैर गेल अछि जइमे केकरो कल्याण होएब कठिन अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। ने एक दोसरकेँ सोहाइत आ ने नीक देखए चाहैत। तहिना बैंकोक अछि। उचित सूदिपर कर्ज लइमे दौड़-बड़हा आ खर्च एते पड़ि जाइत अछि जइसँ लोकक मन टुटि जाइ छइ। सरकारी मदैत मात्र दिखाबा अछि। जहिना कनैत धिया-पुताकेँ माए-बाप रासि-रासिक लोभ देखा चुप करैत तहिना सरकारियो अनुदानक स्थिति अछि। ..फेर तपेसर ओझरा गेला। प्रश्न उठलैन, की कएल जाए? अपनो तँ दू तरहक पूजी अछि। पहिल श्रम आ दोसर धन। नगद नै अछि। मुदा खेत तँ अछि। जहिना खेत बेच माइक सेवा आ दुनू बच्चाकेँ पाललौं-पोसलौं तहिना किछु आरो बेच लेब। जँ किछु जमीन कमबो करत तँ ओते उपजो बढ़त...।

गामक स्कूलसँ धीरजो आ घुरनियो पास कऽ निकैल गेल। दस बर्खक भेने दुनू बच्चा घर-अँगनाक काजसँ पितोक काजमे हाथ बटबए लगल। आगू पढ़ैक आशा अइ-ले नइ रहै जे लोअर प्राइमरी स्कूल तँ गाममे रहए मगर मिड्लसँ ऊपरक स्कूल दू कोस गामसँ हटल छइ। सभ दिन चारि कोस चलि पढ़ब कठिन, तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक।

तपेसर गिरहस्तीक रूपे-रेखा बदैल लेलैन। बाधे-बाध छिड़ियाएल खेतकेँ घट्टो लगा-लगा एकठाम कऽ लेलैन। तैसँग थोड़ेक खेत बेच कऽ

बोरिंग-दमकल आ बरद सेहो कीनि लेलैन। अपना हाथमे पानि एने सालो भरि खेती करए लगला। ओना, सालमे चारिए मासकेँ–बरसातकेँ–किसान खेतीक रीढ़ बुझैत। जँ बेसी बर्खा भेल, बाढ़ि आएल तँ दहार भेल। नहि जँ कम बर्खा भेल तँ रौदी भेल। दस बजेक समय। चारिटा मकइ बालि खेतसँ नेने आबि तपेसर डेढ़ियापर सँ बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- “बुच्ची, चारू बालि ओराहि दूटा अहूँ दुनू भाए-बहिन लऽ लेब आ दूटा दलानपर नेने आउ।”

हँसैत घुरनी धीरजकेँ कहलक- “भाय, देखियो केहेन मकइ अछि। एहने मकइक मिठाइयो बनै छइ।”

मकइ बालि घुरनीकेँ दऽ तपेसर दरबज्जाक ओसारक खुट्टा लगा ओंगैठ कऽ बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। पेटक उपाय भऽ गेल। मुदा पेटे जकाँ घरो अछि। ओना अखन परिवारो नमहर नहियेँ अछि। मुदा तैयो रहैले तँ घरे चाही। तहूमे गिरहस्तक परिवार छी। बोरिंग ने खेतमे गाड़ल अछि मुदा दमकल रखैले तँ घर चाही। जँ से नइ करब तँ बरसातमे बीझा जाएत। जइसँ केते पार्ट-पुरजा बिगैड़ जाएत। सँगे बाहरमे रखने चोरो चोरा सकैए। आब कि कोनो पहिलुका चोर रहल जे ऊक्खैर-समाठ चोरौत। आब तँ यएह सभ- दमकल, टेक्टर, थ्रेसर इत्यादि चोरौत। तहिना बरदो-ले घर चाही। बेटो-बेटी ढेरबा भेल। काज केनिहार घरमे बढ़ने काजो बढ़बए पड़त। खेतसँ जोड़ल जे-जे काज अछि। वएह बढ़ाएब ने नीक हएत। अखन दुइए-टा गाए कीनब। पहिलुका तँ बुढ़ भऽ गेल। आब ओ थोड़े पाल खाएत। अन्नेक खेती नहि तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक खेती करब। कोन चीज सस्ता अछि। जितियामे पचास रुपैए मरूआ चिक्कस आ नरक निवारण चतुर्दशी दिन चालीस रुपैए अल्हुआ-सुथनी बिकैए। बोरिंग लग सेहो इंजिनबला पानि खसैए, जइसँ कट्ठा भरिमे कोनो उपजा नै होइए। ओना जँ मोथी रोपि दिऐ तँ सेहो हएत मुदा आब की लोक मोथीक बिछानपर सुतैए। आब तँ पलाष्टिक जिनगीक ओहन प्रेमी बनि गेल अछि जे दिन-राति सँगे रहैए। तइसँ नीक जे कट्ठो भरि खुनि माछे पोसब। नै बेचै-जोकर हएत, खैयो-जोकर तँ हेबे करत। जखन एते मेहनत करै छी तँ नीक खेनाइ आ नीक घर बना नै रहब तँ धने लऽ कऽ की करब। आँखि मुनि तपेसर अपन आगूक जिनगीक सँग पाछू दिस सोचए लगला।

तखने घुरनी दुनू ओराहल मकइ-बालि नेने आबि कहलकैन-

"बाबू, बाबू...।"

चौंकेत तपेसर आँखि खोलि बजला-

"अँइ।"

मकइ बालि हाथमे देखि पुछलखिन-

"नोन-तेल औंस देने छहक किने?"

"हँ।"

तखने उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत चेतनाथ दरबज्जा-सोझे आबि ठाढ़ भऽ गेला। हाथमे बालि लऽ निंगहारि-निंगहारि तपेसर देखिते रहैथ आकि आँखि बढ़ि चेतनाथपर गेलैन। चेतनाथकेँ ठाढ़ देखि बजला-

"किए ठाढ़ छी। किनकासँ काज अछि?"

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ बजला किछु नहि, ससैर दरबज्जा दिस बढ़ला। लग अबैत देखि तपेसर दुनू बालि हाथमे नेनहि उठि कऽ ठाढ़ होइत बामा हाथक आँगुरसँ आँखि पोछि कऽ देखिते सिहैर गेला। माथक सोन-सन केश दाढ़ी मोंछ झबड़ल। देहक हड्डी झक-झक करैत, दाँत विहीन मुँह, मैलसँ कारी खट-खट देहक वस्त्र।

अनासुरती तपेसरक मुहसँ निकललैन-

"कने एक घोंट पानि पीब लिअ?"

पानि सुनि चेतनाथक मनमे उठलैन। जिनगी भरि परमात्माक सेवा केलौं, अन्तिम अवस्थामे बिनु सेवाक फल केना खाएब-पीब? ओना, भूखसँ जरैत पेटक वायु हुमैर-हुमैर शान्त करैले कहैन। मुदा जिनगी भरिक तपल मन मानैले तैयार नै होइन। चेतनाथ तपेसरकेँ पुछलखिन-

"परिवारमे के सभ छैथ?"

चेतनाथक प्रश्न सुनि तपेसरक मन ठमैक गेलैन। ठमकल देखि चेतनाथ दोहरबैत पुछलखिन- "चुप किए भेलौं?"

पतझाड़क समय गाछमे कोनो-कोनो कलशक मुड़ी जहिना सुख-दुखक बीच अपन अस्तित्त्व जीवित राखए चाहैत तहिना तपेसरक मनमे भेलैन, मिरमिराइत बजला- "माइयो-बाप आ पत्नियोँ मरि गेली। अपने छी

आ दूटा बच्चा अछि।”

घुरनी लगेमे ठाढ़ रहैन। धीरज आँगनमे मकइ खाइत छल। चेतनाथ बजला- “दुनू बच्चाकेँ सोर पाड़ियौ?”

घुरनीकेँ देखबैत तपेसर कहलकैन-

“एकटा यएह छी, आ दोसर आँगनमे अछि।”

कहि धीरजकेँ सोर पाड़लखिन। दुनू बच्चाकेँ देखि चेतनाथ बजला-

“एक शर्त्तपर पानि पीब सकै छी?”

“की?”

“जँ दुनू बच्चाकेँ संगीत कला पढ़बैक काज दी। जिनगी भरि कमा कऽ खेलौं, मरैकाल एहेन अधर्म नै करब।”

अपन मनक विचार पाबि तपेसर खुशी भेला। अह्लादसँ हृदय ओलैर गेलैन। पेटमे गुद-गुदी लागए लगलैन। ठहाका मारि हँसैत बजला-

“अपनेक शर्त्त सहर्ष स्वीकार अछि। पहिने पानि पीब लेल जाउ।”

अपन झड़ैत जिनगीमे आशाक किरिण उगैत देखि मुस्की दैत चेतनाथ बजला- “हँ, आब पानियेँ नहि भोजनो करब।”

दुनू गोरे एक-एक बालि मकैक ओरहा खा पानि पीब, गप-सप्प करए लगला।

चेतनाथ कहलखिन- “आइए-सँ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाएब शुरू करब।”

तपेसर बजला- “आइ छोड़ि दियौ दसम बर्खक अन्तिम दिन छी। काल्हि एगारहम चढ़त। एगारहम जन्म दिनक अवसरपर दसटा समाजोकेँ भोजन करेबैन आ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाइयो शुरू करब। तैबीच अपने अपन जिनगीक किछु बात कहियौ।”

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ विस्मित भऽ गेला। आइ धरि जे प्रश्न कियो ने पुछने छला, ओइ प्रश्नक उत्तर दिअ पड़त। एक क्षण धरि चुप भऽ सौंसे जिनगी देखि चेतनाथ बाजए लगला- “माता-पिता बहुत पहिने मरि गेला। पत्नियोँ मरि गेली, सखा-सन्तान नै भेल। असगरे छी। पाँच बर्ख पूर्व धरि कहियो असगरुआ नै बुझि पड़ल। मुदा पाँच बर्खक बीच जे गति भेल ओ बजै-जोकर नै अछि।”

तपेसर पुछलकैन- "से, की?"

चेतनाथ बजला- "जहियासँ होश भेल तइ दिनसँ कहै छी- चारि भाए-बहिनक बीच सभसँ छोट छेलौं। माइक बड़ दुलारू। आठे-नअ बर्खक रही तहिए-सँ नाच-तमाशा, कीर्तन भजन दिस मन लागए लगल। गामेमे नाचो पार्टी छल आ भजनियोँ पार्टी। सभ मंगलकेँ महावीरजी स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइ। अपना गामक सँग-सँग आनो गाम, अष्टजामो आ नाचो करए पार्टी जाए। भाँज लगा-लगा हमहूँ जाए लगलौं। ओतैसँ गोटे-गोटे पाँति सीखने आबी। जेकरा भरि दिन गाबी। खौजरी बनबैक मन भेल। फुटल घैलक कान हाँसूसँ काटि बेलक लस्सा लगा कागत साटि खौजरी बनेलौं।"

हँसैत धीरज पुछलकैन- "कागतक खौजरी फुटबो करए?"

धीरजक बात सुनि चेतनाथकेँ क्रोध नै उठलैन बल्कि वात्सल्यक बाढ़िमे बहैत बजला- "खूब फुटइ। मुदा काजो बड़ भारी नहियेँ रहए, जहिना अनेरुआ बेल भेटए तहिना दोकानक पुड़ियाक कागत। लगले फेर बना ली।"

धीरज मुस्कियाए लगल। चेतनाथ तपेसर दिस तकैत आगू बजला-

"गबैत-बजबैत साजपर हाथो बैस गेल आ बोलियो सर्रास भेल। गाममे रामलीला आएल। आँगनमे खाए ली आ भरि दिन-राति ओकरे सभ लग रही। जखन जाए लगल हमहूँ सँग पकैड़ लेलौं। साजो बजाएब सीख लेलौं आ पार्टो खेलए लगलौं। जेहने आवाज सुरिला रहए तेहने हरमुनियाँपर हाथ। एक दिन ठीकादास देखलैन। ओ राजक गबैया छला। सँगे लऽ गेला। हमहूँ राजक गबैया भऽ गेलौं। जखन राजशाही टुटलै तखन उनैट कऽ गाम चलि एलौं। किछु दिन गामे-गाम उत्सव सभमे जाए लगलौं। ओहो कमि गेल। तइ दिनसँ दिनो-दिन दशा बिगैड़ते गेल।"



शब्द संख्या: 9811

शम्भुदास

जिनगीक ओइ सीमानपर शम्भुदास पहुँच गेल छैथ जेतए पैछला जिनगीक बहुतो विचार आ काज स्वत: छुटि गेलैन। किछु नव जे मनमे उपैक रहल छैन ओ करैले जइ शक्ति आ सामर्थक जरूरत छैन ओ तकनौं नै भेट रहल छैन। जेना आगिक चिंगोरा रसे-रसे पझा-पझा या तँ मोइल जकाँ ऊपर छाड़ने जा रहल छैन या झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। डन्टीसँ टुटल पोखैरक कमल सदृश हवाक सिहकी वा पानिक कम्पन्नसँ हृदय दहैल रहल छैन। जे कहियो कामधेनु, फूल-फड़सँ लदल वृक्ष सदृश छेलैन वएह आइ ठाँठ गाए वा पत्रहीन ठूठ गाछ बुझि पड़ि रहल छैन। जे शम्भुदास कहियो राजभोगक बीच दिन बितबै छला आइ अन-वस्त्र विहीन भीखक घाटपर बैस अपन जिनगीक हिसाब-वारी जोड़ि रहल छैथ। मन कहै छैन जे सभ दिन तँ गुनगुनाइत रहलौं, जे बच्चा कनैत ऐ धरतीपर अबैए आ हँसैत जाइक चाहिऐ, मुदा से कहाँ..? जे आत्मा बिनु विवेकक जिनगी टपि विवेकवान लग पहुँचल ओ आगू नै बढ़ि पाछू दिस किए ढड़ैक रहल अछि! सोन सन उज्जर धप-धप दाढ़ी-मोछक सँग माथसँ पैरक आँगुर धरिमे केश, आमील सन सुखाएल गालक सँग हाथ-पएर सामर्थहीन, मुदा आँखिक ज्योति भोरक ध्रुवतारा जकाँ ललौन। मन उफैन उठलैन जे देवस्थान जकाँ तिरपेखन ऐ दुनियाँक करब।

जहिना बाध-बोनक ओहन परती जैपर कहियो हर-कोदारि नै चलल, सुखि-सुखि कऽ गाछ-बिरीछ खसि उस्सर भऽ जाइत, ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरुआ फूल-फड़क गाछ जनैम रौद-वसात, पानि-पाथर, अन्हड़-बिहाड़ि सहि अपन जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन फूलक सुगन्धसँ वा मीठ सुआदसँ तृप्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर

शम्भुदासक जन्म बँटाइ-किसान परिवारमे भेलैन। रबि दिन रहने समाजक दाय-माय शुभ दिन मानि शम्भु नाओं रखलकैन। परदेशिया जकाँ तँ नहि जे जन्मसँ पहिनहि माए-बाप नामकरण कऽ लइत।

छठम दिनसँ पूर्वक सभ कष्ट बिसैर शम्भुदासक माए–सुखनी– अपन सुखक निआसा छोड़ि देवस्थानक देवताक पूजनमे हेराएल। अपन मर्यादा कसि कऽ पकैड़ शम्भुक सेवामे जुटि गेली। परिवारक बोझक तर पिता। तँए बिलगा कऽ किछु नइ सोचैथ।

पाँच बर्ख पूर्व धरि संतोखीदास आ सुखनी, खेतिहर बोनिहार छला। खेतियो तँ मौसमेक हाथक खेलौना तँए बेठेकान। मुदा तैयो तँ सभ बुझैत जे जाड़, गरमी आ बरसात, सालक तीन अवस्था छी। भलेँ गोटे साल शीतलहैर पाबि जाड़ अपन बिकराल रूप देखबैत, तँ रौदी पाबि गरमी आ तहिना बर्खा पाबि बसात बाढ़िक सँग नँगटे नचैत तँ झाँट पाबि ताण्डव करैत।

बजारवादक हवा सिहकल जे बिहाड़ि सदृश उठल, मुदा पहाड़ आ बोनक टाट थोड़े अँटकौलक, माने गतिकेँ कम केलक मुदा तैयो बहिते रहल। जाड़-रौदीक मारल किसानो आ बोनिहारो गाम छोड़ि बजार दिस विदा भेल। जहिना घर बनबैमे पातरसँ मोट खुट्टाक जरूरत होइत तहिना कारखाना चलबैले मजदूरसँ लऽ कऽ संचालक धरिक आवश्यकता भेल। उजड़ल-उपटल गामक रूखिमे बदलाउ आबए लगल। खेतमे काज केनिहार बोनिहारकेँ कारखानाक नव मजूरी भेटए लगल, जइसँ जिनगीमे हरिअरी आबए लगलै। मुदा हवाक गति धीरे-धीरे तेज भेल। सस्त मजदूर पाबि रंग-बिरंगक कारोबार शहरमे जन्म लिअ लगल, जइसँ श्रमिकक मांग बढ़ल। टुटैत गामक जिनगीसँ तंग भऽ बेबस श्रमिक जेर बना-बना बजारक बाट पकड़लक। श्रमक बिक्रीक कारोबार जोर पकड़लक। खुल्लम-खुल्ला बिक्री-बट्टा हुअ लगल।

गामक श्रमिकक पड़ाइनसँ गामो हलचलाएल। खेतबलाकेँ कारखाना पहुँचने खेतीमे ठमकाउ आएल, श्रमिकक अभावमे खेती ठमकल। समाजक विचारधारामे बदलाउ आएल। एक विचारधारा, जे अखनो धरि सम्पैतकेँ प्रतिष्ठा बुझैत–ओ पहिलुके खेतीकेँ थोड़-थाड़ अन-पानि खुआ-पिआ जीवित रखलैन तँ दोसर विचारधारा, लोक शहरी

कारोबार देखि खेत-पथारकेँ, माने ग्रामीण सम्पैतकेँ पूजी बुझि आमद-खर्चक हिसाब जोड़ि विचारमे बदलाउ अनलैन। तैसँग बँटाइ खेतीक बीच नव-समस्या सेहो उठल।

..जैठाम अखन धरि गामक जमीनदार खेतक उपजे-बेरटा-मे खेतक दर्शन करैत, ओ गामसँ बाहर भेने सालक-साल खेतक दर्शनसँ बिमुख भेला। सँग-सँग गाममे श्रम-शक्तिक अभाव भेल। बँटेदार वर्गक वृद्धि भेल। खेतक बँटाइ प्रथामे बदलाउ आएल। जइसँ फड़क हिसाबसँ आमक उपजाक मनखप आ पोसिया माल-जालमे बदलाउ आएल। कोनो धरानी संतोखीदास एकटा बरद किनलैन। दू परानीक हाथ-पैरक सँग आ एकटा बरद पाबि संतोखीदास बँटेदार किसानक रूपमे ठाढ़ भेला। पेट भरने परिवारमे खुशीक बाढ़ि तँ नहि, मुदा पटबी पानि सदृश खुशी जरूर आबि गेलैन। संतोखीदास बीघा भरिक खेतिहर बनि गेला।

..नव आर्थिक विकास भेने परिवारक बच्चो सभमे मौलाहट कमल। जइसँ बच्चाक मृत्यु-दरमे कमी आएल। ओना अखनो धरि श्रमिक परिवारमे बेटा-बेटीमे अन्तर नै बुझल जाइत अछि, किएक तँ भगवानक अगम लीलाक बीच कियो हस्तक्षेप नै करए चाहैत मुदा बजारक बिखाएल वयार तँ बहिए रहल अछि।

शम्भुकेँ तीन बर्ख पुरिते जहिना शीतलहैरमे पोह फटिते सुरूजक रोशनीक आशा जगैत, बदरीहन समय वादलकेँ छिड़ियाइते घरसँ बहराइक आशा जगैत तहिना संतोखियोदास आ सुखनियोकेँ आशा जगलैन। जिनगी भरि-ले मनखप खेत भेटने किए नइ दुनू परानीक मनमे आशा औत। तहूमे बाढ़ि-रौदीक सालक कोनो देनदारीए नहि, रहल सुभयस्त समैयक देनदारी। ओहो देनदारी की अनतहिसँ कमा कऽ आनए पड़त। धरती माता कामधेनु। जेते करब तेते पएब। जखन मन हएत तखन खाएब आ दिन-राति ओंघराएब।

अखन धरि सुखनी शम्भुक पाछू आँगनसँ नहि निकैल पबै छेली मुदा आब तँ शम्भु तीन सालक भऽ गेल। अगहन मासमे खेतक आड़िपर धानक खोंचैड़क घर बना देबै, ओइमे खेलेबो करत आ ओंघी लगतै तँ सुतबो करत। तहिना गरमी मासमे गाछक छाहैरमे रहत। लऽ दऽ कऽ बरसात रहल। तँ बरखो की लोककेँ बिना चेतौनहि अबैए। अबैसँ पहिनहि

राजा-रजबार जकाँ समाद पठा दैत अछि। तहूमे बर्खा केहेन रूपमे औत सेहो तँ कहिए दैत अछि। जेठुआ बर्खामे जे दुइयो बेर देह धुआ जेतै तँ सालो भरि धुआएले रहतै। बच्चा कि कोनो सियान सैतान होइए जे भरि दिन डाँउ-डाँउ करत। ओकरा तँ अन-पानि भेट जाइ, भरि दिन वौआइत रहत। जहिना नव दाँत जनमने मसुहैर किछु करैले सबसबाइत अछि तहिना बच्चोक मन होइए।

जेठक दसहारा। बरस्पैत दिन। गिरहस्तीक पतराएल काज। अटुट फड़ल आम-जामुनक गाछ। गाम-गामक लोकक मन गदगद। किए ने रहत गदगद? दू मास जे अमृत फल भेटत। बाधक चौबगली गामक अकास अष्टयाम कीर्तनक मंत्रसँ गनगनाइत। केम्हरो "सीताराम, सीताराम सीताराम जय सीताराम" तँ केम्हरो "काली दुर्गे राधे श्याम, गौरी शंकर सीताराम।" तहिना केम्हरो "हरे राम, हरे राम...।" तँ केम्हरो "हरे कृष्ण हरे कृष्ण।"

दसहारा रहने बरहम स्थानमे घोड़ा चढ़ौल-सजौल जाइत। ऐबेर तँ जहिना बरहम बाबा खुशी छथिन तहिना लोकोक मन अछिए। तँए आन साल जकाँ की ऐबेर हल्लुक दामा टंगसुखा घोड़ा लोक चढ़ौत, पहिने साए-पचास वेना दऽ दऽ सरैसो घोड़ासँ नीमन-नीमन चढ़ौत। दूध-पीठ खाइत-खाइत बरहमो बाबाक मन अकछा गेल छैन तँए ऐबेर सेरही, पन सेरही, दस सेरही, अध मनहीक सँग मनही मुंगबा सेहो परदेशिया सभ चढ़ौत।

दिनक एगारह बजैत। माटि-पानि तवने हबो तवि गेल। खेतक जे खढ़-पात अछि ओ जँ रोहैन-मिरगिसरामे नै सुखत तँ सालो भरि ओकर ओधि थोड़े सुखत। तँए संतोखीदास मरूआ खेत जोतए आ सुखनी खढ़ बीछए गेली। मुदा छोट बच्चा शम्भुकेँ असगरे आँगनमे केना छोड़ि दितैथ। शम्भु-ले बाटीमे भात आ भरि डोल पानि नेने खेत गेली। अपनो सभकेँ पियास लगतैन तहु पीबैक खियालसँ। खेतसँ कट्ठा दुइए हटि आड़िपर एकटा बज्जर केराइक अनेरुआ गाछ, जेकरा निच्चाँमे सघन छाहैर तँ नहि, मुदा छाहैर छइ। जेतए शम्भुकेँ खेलाइले छोड़ि अपने दुनू परानी संतोखीदास खेतमे काज करए लगला। काज लगिचाएल देख, खाली हड़मड़ी चौकी देब बाँकी, हर खोलि चौकी ठेकि संतोखीदास पत्नीकेँ

कहलखिन-

“रौदमे मन तबैध गेल हएत, कनीकाल छाहैरमे जिरा लइले चलू।”

सुखनी लगले सुरे बजली-

“सएह कहए चाहै छेलौं मुदा काज लगिचाएल देखि नइ बजै छेलौं। जे काज ससैर जाइ छै ओते तँ जाने हल्लुक होइ छै किने।”

“हँ से तँ होइ छइ। मुदा काजो की..?”

“से की?” सुखनी पुछलकैन।

गैंचियाह नजैर पत्नीपर दैत संतोखीदास मुस्कियाइत बजला-

“जहिना भाँग-गाँजा अपन सेवककेँ, वेश्या इश्कबाजकेँ वौड़ा दैत तहिना ने काजो अपन कर्ताकेँ बाबला बना जान लइपर तुलल रहैत।”

“नै बुझलौं?”

“देखै नै छिऐ, दोकान सभमे लिखि कऽ टाँगल रहै छै जे, काज करैत चलू फलक आशा नै करू।' जखन मनुक्ख छी, रोड-सड़ककेँ नापि मीलक पाथर गाड़ल रहैए तखन केतए कोन रस्ता चलक चाही से तँ सोचए पड़ैत किने। आकि रस्ते भुतिया जाए। जे बाट नै देखल रहै छै ओही बाटमे ने लोक भुतियाइए। खाएर, छोड़ू ऐ सभकेँ चलू कनी ठंढाइयो लेब, दू घोंट पाइनो पीब लेब आ तमाकुलो खा लेब।”

दुनू परानी-संतोखीदास बज्जरकेराइक गाछसँ फरिक्के देखलैन जे शम्भु पूबारि पारक अष्टयामक मंत्र-

“हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे” एक ताले छठिक ढोलिया जकाँ थोपड़ी बजबैत गबैए।

बेटापर नजैर पड़िते सुखनी अधखिल्लू फूल जकाँ बिहुँसैत पतिकेँ कहलखिन- “देखियौ ऐ छौंड़ाकेँ। आन धिया-पुता रहैत तँ माए-माए करैत। केहेन मगन भेल अछि!”

पत्नीक बात सुनि संतोखीदास बजला-

“रौदमे तबैध तँ ने गेल अछि!”

“तबधल बच्चा थोपड़ी बजा गौत आकि अहोंछिया काटत?”

संतोखीदास मुड़ी डोलबैत बजला-

“हँ से तँ ठीके।”

जहिना तत्त्व चिन्तक आत्माक तार जोड़ि ब्रह्मतत्वक अन्वेषण करैत तहिना शम्भु कृष्ण मंत्रसँ अपन मनक तार जोड़ि अष्टयामक धूनमे बेसुधि भेल मीरा जकाँ गाबि रहल अछि। जहिना एक्के फुलवाड़ी वा गाछीमे भिन्न-भिन्न रंगक फूल वा फल ताधैर अपन परिचए-सँ हेराएल रहैत जाधैर बच्चा सदृश पालल-पोसल जाइत, मुदा जखन अपन गुण वा रूप देखबै-जोकर भऽ जाइए तखन एकठाम रहितो वेड़ाए लगैए तहिना छह बर्ख अबैत-अबैत शम्भुओ बेड़ाए लगल। परिवारमे अनेको रंगक वस्तु-जात रहितो ओतबे सिनेह रखैत जेते काजक वस्तु बुझैत। जइ वस्तुक परियोजन, आन-आन रूपकेँ आन-आन काजमे होइत तइसँ भिन्न ओइ वस्तुक उपयोग अपन काज देखि करए लगल।

अपना खेत-पथार नइ रहितो संतोखीदासक परिवार गामक किसान परिवारक खाढ़ीमे आबि चुकल छेलैन। जहिना किसान परिवारमे वाइस-बेरहट कऽ कऽ खाइत अछि तहिना संतोखियोदासक परिवारमे चलए लगलैन। ओना ई गति लगातार नै चलि पबैन किएक तँ किसान परिवार डेंगी नाह जकाँ सदैत ऊपर-निच्चाँ होइत रहैए। जइ साल खढ़चट्टा रौदी वा दहार समय भेल तइ साल सभ धुआ-पोछा गेल। मुदा जइ साल सुभितगर समय भेल तइ साल फेर नव-पुरानक चालि पकैड़ लइए। नवे-पुरान चालि ने रसगरो आ सुअदगरो होइए, ऐगला-पैछला बाट देखि कऽ चलनाइए ने दिसा दइत। जेना एक्के आमक चटनी टटका नीक होइत तँ अचार बसिया। अचार जेते पुरान तेते रसगर। मुदा चटनी तँ लगले अरुआ जाइत, तहिना नवका कुरथीक दालि आ पुरान राहैरक दालि...।

अखन धरि शम्भु परिवारकेँ खाली खाइ-पीबै आ माता-पिताक सँग रहब मात्रकेँ बुझैत। किएक तँ बाल-बोध बुझि ने माता-पिता किछु करैले अढ़बैत आ ने शम्भु परिवारक काजकेँ अपन काज बुझैत। सदैत धैनसन। सोलहन्नी वैरागी जकाँ। मुदा तँए कि शम्भु भरि दिन ओछाइनेपर ओंघराएल रहैए सेहो बात नहि। जँ किछु नइ करैए तँ दिन-राति कटै केना छइ।

अखनो धरि गामक किसान धरतीसँ अकास धरिक स्मरण साँझ-भोर जरूर करैए। भोरमे धरतीक स्मरण तँ साँझमे अकास विचरण। आने परिवार जकाँ संतोखियोदासक परिवार। परिवारमे शम्भुक कोनो मोजरे नहि। मात्र खाइ-पीबै आ सुतैबेर माता-पिता सिर चढ़बैत। बाँकी समय शम्भु साँढ़-पारा जकाँ अनेर वौआइत-ढहनाइत। तँए कि सींग-नाँगैरबला पशु जकाँ शम्भुकेँ थइर-पगहाक जरूरत हएत? नहि। 'अनेर गाएकेँ धरम रखबार'।

भोरमे जखन संतोखीदास खेत-तमैक विचार करए लगैथ तँ नचैत हृदयसँ घुंघरूक कम्पन्न ठोठक स्वर होइत खापैड़क मकइ-जनेरक लाबा जकाँ कुदि-कुदि निच्चाँ खसए लगैन, रंग-बिरंगक मौसमक सँग मौसमी सिनेह छिड़ियाए लगैन। जेकरा बिछ-बिछ शम्भु खेलेबो करैत आ तहिया-तहिया सीनाक डायरीमे लिखि-लिखि रखबो करैत तैसंग हृदयांगम सेहो करैत। मुदा बच्चाक डायरी रहने किछु लिखेबो करै आ किछु नहियोँ लिखाइ। मुदा प्रति भोर आ साँझक स्वर 'सीताराम-सीताराम', 'राधेश्याम-राधेश्याम' डायरीक ऊपरेक पन्नामे लिखा गेलइ। जेकरा भरि दिन शम्भु गो-मुखी रूद्राक्षक माला बना जपए लगल। कामधेनु गाए जकाँ सदैत दूधक ढारसँ नव-नव राग-रागिणी स्वत: आबए लगलै। कण्ठक स्वर-लहरी हाथकेँ थिरकबए लगल। जइसँ कखनो दुनू छुच्छे हाथे, तँ कखनो पल्था मारि बैस ठेहुनपर ताल मिलबए लगल।

घर-अँगना एक रहने पिताक सँग आ माइयोक पाछू-पाछू आँगन बहारैत-काल, चुल्हि-चिनमार नीपैत-काल, जाँत-ढेकी चलबैत-काल शम्भु नाचए-गाबए लगल। बेटाक वौड़ाइत मन देखि माइयो आत्म-विभोर भऽ झूमि-झूमि शम्भुक आँखिमे आँखि गाड़ि फड़ैत-फुलाइत फुलवाड़ीमे हेरा जाइ छेली।

माता-पिताक उसकैत हाथ देखि शम्भुओक हाथ खाइबला बाटीपर उसकए लगल। खौजरी जकाँ ओकरा बजाएब शुरू केलक। केना नै करैत। कामेसँ राम आ रामेसँ काम ने चलैए? मुदा भारी द्रव्यक बाटी रहने हाड़- मौसक हाथक आँगुर केते काल ठठत। जे बात शम्भु तँ नै बुझि सकल मुदा संतोखीदास बुझि गेलखिन। सोचलैन जे जँ खौजरी बना दिऐ तँ चौबीसो घन्टा शम्भु आनन्दमे मगन रहत। बेटाक प्रति पिताक दायित्वे

की? यएह ने जे हँसी-खुशीसँ दिन-राति चलैत रहइ।

..मन मानि गेलैन जे बेटाकेँ खौजरी बना देब। एकलव्य जकाँ साजमे खौजरियो ने अछि। ने ओकरा दोसर संगीक जरूरत होइ छै आ ने कखनो अपनाकेँ असगर बुझत। जहिना हवामे उड़ैत रोग लोककेँ पकैड़ लैत, लगन अबिते बर-कन्याकेँ पकड़ए लगैत, तीर्थ-व्रतक डोरी लगैत तहिना शम्भुओकेँ गीत-नाद, माने संगीतक राग पकैड़ लेलक। जइसँ पिताकेँ हर जोतैत, कोदारि पाड़ैत, धान-रोपैत कालक गुनगुनीक सँग माइक आँगन बाहरैत, धान कुटैत, जत्ता चलबैत कालक गुनगुनी पकैड़ लेलकै। जेकरा सँग शम्भु भरि दिन मगन भऽ गारा-जोड़ी केने बुलए-भाँगए लगल।

..मुदा तँए कि शम्भु एतबेमे ओझराएल रहल? नहि! ने ओकरा गामक आन घर अनभुआर आ ने लोक अनठिया बुझि पड़इ। तहूमे एकठाम रहने जखन माए-बापक सँग बाध-बोन दिस जाए तँ वएह घर वएह लोक देखए। समाज तँ ओहन सरोवर छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ कमल धरि फुलाइत अछि। देवस्थानमे साँझ-भोर घड़ी-घण्ट आ शंखक आवाज तथा खरिहाँनमे धान फटकैत सूपक आवाज अकासमे उड़ैत, काठपर ओंघराइत टेंगारी-कुरहैर गर्द करैत तँ चुल्हिपर चढ़ल बरतनक अदहन ‘झ-झ-काली’ करैत रहैत।

छह बर्खक बेटा-ले संतोखीदास खौजरीक ओरियान करैक विचार केलैन। ओना हाट-बजारमे खौजरी तँ नै बिकाइत अछि मुदा हरिहरक्षेत्र, सिहेश्वर, जनकपुर आ देवघरमे तँ बिकाइते अछि। मुदा ओतए-सँ औत केना? अखन तँ ओमहर-मुहेँ जाइक निआर नै अछि। ओना गामोमे बरही लकड़ीक कठरा बनबैए। सेरसोबा सनगोहि मारि मघैया खेबो करैए आ ओकर छाल बेचबो करैए। अगर जँ कठरा बनबा लेब आ सनगोहिक छाल कीनि लेब तँ तेबखाक बेसनसँ अपनो छाड़ि लेब। हम सभ कि कोनो शहर-बजारक लोक छी जे बेटा-बेटीकेँ पेस्तौल बम-बारूद आकि छुरछुरी-फटाका- खेलाइले देबइ। जँ खेत-खरिहाँन दिसक मन देखतिऐ तँ खिएलहा हँसुआ-खुरपी खेलाइले दैतिऐ, मुदा से नइ देखै छिऐ, तँए एकरा खौजरीए-क ओरियान कऽ देबइ। सएह केलैन।

जहिना हाथमे ओजार एने श्रमिक बड़का-बड़का इंजिन बना

चलबैत तहिना हाथमे खौजरी एने शम्भुओ परिवारक सँग समाजक कीर्तन, भजन, यज्ञ इत्यादिमे शामिल हुअ लगल।

सात बर्ख बितैत-बितैत शम्भुक हाथ खौजरीपर बैस गेल। जइसँ असगरे आँगनक ओसारपर बैस जाधैर हाथक आँगुर नइ दुखाए लगै ताधैर एकताले सीता-राम-सीता-राम, राधेश्याम-राधेश्याम खौजरीक आवाजक सँग अपन कण्ठक स्वर मिला उन्मत्त भऽ गबैत रहैत।

भगवानोक लीला अजीव छैन। एक्के मनुक्ख वा पशु-पक्षीक कोनो बच्चार्कें उम्रसँ बेसीए बना दइ छथिन आ कोनोर्कें कम बना दइ छथिन। कियो पाँचे बर्खमे पनरह बर्खक बुधि-ज्ञान अरैज लैत अछि तँ कियो पनरहो बर्खमे पाँचो बर्खसँ निच्चेँ रहैए। जेना शम्भुओर्कें भेल, साते बर्खमे पनरह बर्खक बच्चाक कान काटए लगल। तहूमे तेहेन समाजक स्कूल अछि जे जे जेते मेहनत करत ओकरा ओते फलो भेटबे करतै।

सदिकाल केतौ-ने-केतौ, कोनो-ने-कोनो उत्सव समाजमे होइते रहैए। देवस्थानसँ परिवार धरिमे केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ बच्चाक मूड़न, केतौ सत्यनारायण भगवानक पूजा तँ केतौ बिआह-दुरागमन। शुभ काज तँए शुभ वातावरण बनबैले शुभ-शुभ क्रिया-कलाप। शुभ क्रिया-कलाप-ले केतौ ढोलक-झालि-हरमुनियाँक सँग रामधुन चलैत तँ केतौ ढोल-पिपहीक सँग गीत-नाद। तेतबे नहि, सँग-सँग पारिवारिक उत्सवमे समबेत स्वरे माए-बहिनक गीत-नाद सेहो चलबे करैए।

जहिना पाँच बर्खक बच्चा स्कूलमे नाओं लिखा दोसर-तेसर बच्चा सँग पढ़ैत तहिना शम्भुओ समाजमे केतौ ढोलक-झालि वा ढोल-पिपहीक आवाज सुनिते ठोकले ओइ जगहपर पहुँच, वेद पाठी जकाँ आँखि-कान समैट ताधैर देखैत-सुनैत रहैत जाधैर विश्राम करैले बन्न नै होइत। शम्भुक क्रिया-कलापसँ दुनू परानी-संतोखीदास निचेन भऽ अपन-अपन काज करैत रहैथ। किएक तँ दुनू परानी बुझि गेला जे जेतए ढोल-पिपही बजैत हएत शम्भु ओतइ हएत। तँए संतोखीदास जखन खेत-पथारसँ काज कऽ घुमैथ तँ ठोकले ओइ स्थानपर पहुँच शम्भुर्कें ताकि अनैथ।

समाजो तँ ओहन बाट बना चलैत जइसँ हँसैत-खेलैत जिनगी बिनु थकनहि सदैत चलैत रहैए। केना नै चलत? धार केकर आशा-बाटक प्रतीक्षा करत? जहिना धार अपना गतिए दिन-राति चलैत रहैए तहिना ने

समाजो अपना गतिए सदैत चलैत रहैए।

नवम् बर्ख चढ़ैत-चढ़ैत शम्भुआ 'शम्भु' बनि गेल। कारण भेलै जे आन-आन बच्चासँ भिन्न काजक प्रति झूकाव शम्भुमे हुअ लगलै। जहिना जीवनी–जीवनक पारखी–बोन-झाड़ वा गाछी–बिरछीमे बरसातोपरान्त आसिन–कातिकमे नव-नव गाछकेँ माटिसँ ऊपर होइते डारि-पातसँ परैख लैत जे ई फल्लाँ वस्तुक गाछ छी, मुदा अनाड़ी नै परैख पबैत तहिना समाजोक पारखी शम्भुकेँ परखए लगल। छोट बच्चा जहिना लत्ती-फत्तीमे फड़ल हरिअर चारि पएरबलाकेँ, जेकर मुँह घोड़ा सदृश नमगर होइत ओकरा घोड़ा मानि पकैड़ अपन खेलक एक भाग, सर्कश जकाँ, बना खेलैत तहिना कीर्तन मण्डलीक बीच शम्भुओ एक अंग बनि गेल। ओना, अदौसँ लोक किछु समटल आ किछु बिनु समटल, जे लोकक बोन-झाड़मे हेराएल रहल, केँ चिन्हैत आबिए रहल अछि। जँ से नै रहैत तँ किछु बोनैया किए शिकारक पात्र बनैत। मनुक्खक लगौल खेती-बाड़ी वा माल-जालकेँ जँ बोनैया नष्ट करए चाहत तँ किए लगौनिहार अपना सोझहामे अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखत। एहनो-एहनो पारखी लगमे रहनिहार अपन बच्चाकेँ नै परैख पबैत। केना परखत? मनुक्ख तँ गाछ-बिरीछ नहि, जे डारिक रंग-रूप आ पातक सिरखारसँ परैख लेत, मुदा मनुक्ख तँ जीवक श्रेणी, जिनगीक पाँतिमे रहितो आनसँ अधिक नमगर-चौड़गर, फूल-फलसँ लदल दुनियाँबला छी। जे अपन गुण बाहर नहि भीतर छिपा कऽ रखने रहैए। रखने अछि आकि राखल छै ओ भिन्न बात...।

जे शम्भु अखन धरि मनुक्खक मेलाक बच्चाक जेरमे नुकाएल छल ओ आब नमैर कऽ धान-गहुमक गाछ जकाँ बेदरंग हुअ लगल। मुदा रंग-रूप अधिक गाढ़ नइ भेने ने अपने देखए आ ने आनेक नजैरक सोझ पड़इ। भलेँ उम्मस भरल भादोमे पुरबा-पछियाक लपकी नै बुझि पड़ैत मुदा ओहन लपकी तँ माघमे जरूर अपन रूपक दर्शन करैबते अछि, शम्भुओकेँ तहिना भेल। एक आँखिसँ दोसर आँखि, एक कानसँ दोसर कान बीआ-बान हुअ लगल। मुदा बीआ तँ बीआ छी, कोनो फले बीआ, तँ कोनो आँठीए, कोनो पाते बीआ तँ कोनो डारिए। तहिना जेते मन तेते खेत। जेते खेत तेते रंगक गाछ। जेते गाछ तेते रंगक फल-फूलक आश...। मुदा मनुक्खक बीआ तँ सभसँ बेढंग अछि, अजीव अछि। जेहेन-जेते खेत

तेहेन-तेते रंगक बीआ खसि तेते रंगक गाछ सँगे जनमैत। गाछ देखि कियो बजैत-

"शम्भुक सिनेह संगीतसँ तेते भेल जाइ छै जे कहीं घर-परिवार छोड़ि ओकरे सँगे ने चलि जाए!"

तँ कियो बजैत-

"भगवान अपने बेटा जकाँ शम्भुकेँ लूरि-बुधि देने जाइ छथिन, एक-ने-एक दिन लगमे बजाइए लेथिन।"

ज्ञान स्वरूप देवत्त्व प्राप्त करैले प्रेमास्पदक बाट धड़ए पड़ैत, जे बिनु बुझने शम्भुमे आबए लगल। जहिना एके माटि आकि एक पानि जगह पाबि अपन भिन्न-भिन्न रूप बना भिन्न-भिन्न गुण पसारैत तहिना तँ समाजो अछि। माटिक आड़ि बनि-बनि बाध बँटल अछि, घेरा पाबि-पाबि पानि बँटल अछि तहिना ने समाजो अछि। समाजोक तँ भिन्न-भिन्न रूप अछि, भिन्न-भिन्न अर्थ अछि। केतौ गामक सीमान मानि समाज मानल जाइत अछि तँ केतौ जातिक अधारपर। केतौ कर्मक हिसाबसँ समाज बनैए तँ केतौ बेवसायिक हिसाबसँ। ..कीर्तन मण्डलीक समाज ओहन अछि जइमे घर-परिवार सम्हारि लोक भगवानोक दरबार पहुँच अपन नीक-अधला माने उचिती-विनती कहैए। तइले ने संगी-साथीक जरूरत आ ने साज-बाजक। थोपड़ी बजा वा चुटकी बजा वा बिनु बजेनौं मुँह खोलि वा बिनु मुहोँ खोलने जेतबे समय पबैत ओतबेमे राधा जकाँ कृष्णक सँग रमि जाइत।

नवम् बर्ख खटियाइत-खटियाइत शम्भु गामक कीर्तन मण्डलीक सदस्य बनि गेल। तइले ने नाओं लिखबैक जरूरत भेलै आ ने कोनो रजिष्टरक। खाली मनक डायरीमे विचारक कलम चललै। मुदा दुनूकेँ– शम्भुओ आ मण्डलियोकेँ– आगू चलैक बाटो आ संगियो भेटलै। जहिना घरक छप्परसँ खसैत पानि धरियाएल आगू बढ़ि धारमे पहुँच जाइत, तहिना संगी पाबि शम्भुकेँ भेल। मण्डलियोक फुलवाड़ीमे एकटा नव फूलक गाछ पोनगल। जहिना नमहर थैरमे नव गाए-महींसकेँ जातिक समाज भेटलासँ अपन खुशहाल जिनगीक खुशी होइत तहिना शम्भुओक सम्बन्ध रंग-बिरंगक कला-प्रेमीसँ भेलइ। जहिना टाला-कोदारि लऽ

बोनिहार, रिंच-हथौरी लऽ मिस्त्री अपन सेवा दइले जाइत तहिना खौजरीक सँग शम्भुओ मण्डलीक बीच अपन सेवा दिअ लगल।

अठबारे मंगले-मंगलकेँ महावीरजी स्थानमे आ अठबारे रबिए-रबिकेँ महादेव स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइत। जइमे कीर्तन मण्डलीक समाजक सँग भक्त प्रेमी सभ सेहो एकत्रित भऽ खाइ-पीबै राति धरि मगन भऽ भजनो-कीर्तन करैत आ सुननिहारो संगीक सँग समुद्रमे दहलाइत-उधियाइत। मुदा बाल-बोध शम्भु ने दिनक ठेकान बुझैत आ ने मासक। मंगल केना घुमि-घुमि अबै छै, ने से बुझैत आ ने रबि। तँए अन्हारमे वौआइत। मुदा जहिना ऐगला बाट भेटने शंकाक समाधान भऽ जाइत तहिना शम्भुओ मंगल आ रबिकेँ भँजियाबए लगल। खोजनिहार जहिना घनगर बोन-झार सँ कोनो जड़ी वा जरूरतक गाछ ताकि कऽ लऽ अबैत तहिना शम्भुओ मंगल आ रबिकेँ भँजिया लेलक। सातो दिन आ बारहो मासक गुण-अवगुण भँजिया शम्भु मनमे रोपि लेलक। जइसँ तीसो दिन मासक बीचक तीर्थ आ सातो दिनक आठो पहरक बोध भऽ गेलइ। राति-दिनक बीच घरक काज कखन कएल जाए आ बाहरक कखन, अइले तँ पहरे पहरा करैए। वसन्ती-वयार तँ गोटि-पँगरा-ले नहि सबहक लेल समान सोहनगर अछि, भलेँ कियो कुम्हकर्णी नीनक मस्ती लिअए आकि ब्रह्मलोक पहुँच कुम्हारक चाक चलबए। जाधैर चाक नै चलत ताधैर नव बरतन केना गढ़ल हएत..?

ओहन खेत वा पोखैर जकाँ शम्भुक मन दिन-राति छिछलए लगल जेहेन पोखैरक किनछैरमे ठाढ़ भऽ चौड़गर खपटा वा झुटका पानिक ऊपर फेकलासँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत दूर तक चलि जाइत, जहिना अनगर लबल धानक सीसपर होइत मन छिछलैत एक आड़िसँ दोसर धरि छिछैल-छिछैल देखि-देखि खुशी होइत, तहिना।

भोरमे नीन टुटिते शम्भु ओछाइनेपर दिन भरिक जिनगीक बाट जोहए लगल। साँझ परैत-परैत जहिना कृष्ण संगी-साथीक सँग आबि माए जशोदाकेँ अपन लकुटि कमरिया सुमझा संध्या बन्धन करए विदा होथि तहिना शम्भुओ उगैत सुरूजक सँग दुनियाँ देखैक उपक्रम सोचए लगल। भगवानक नजैर तँ पहिने ओइ पुजेगरीपर ने पड़ैत जे नव-नव फूल-अछतसँ सजल सिक्कीक नव फुलडालीमे नव गाछक फूल लऽ रहैत।

बाँकीकेँ तँ गिनती कऽ कऽ रखि लेल जाइत। गाछमे सवुरक फलक सिरखार, कटहर जकाँ देखि पड़ैत। दिन भरि समय बँचल अछि जखने बाध-बोन दिस जाएब तँ कोनो-ने-कोनो भेटबे करत। जँ भेट गेल तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ उचिती-विनती कऽ आर्त्त भऽ थारीमे रूइक बत्ती नेस कानि-कलैप कहबैन। अनकर जँ सुनैत हेथिन तँ हमरो सुनता, नहि तँ केकरो नै सुनथिन। अपना-अपना करमे-भागे लोक जीब लेत।

चौदहो भुवन सदृश समाजमे चित्र-कुटक घाट जकाँ अनेको घाट। कम वा बेसी सबहक मनमे भगवानक प्रति आस्था, भलेँ आत्मा, जीव आ मायाक तात्त्विक रूप नै बुझैत हुअए। से सिरिफ पुरुखेटा-मे नहि, महिलोमे। समरपित भऽ निअम-निष्ठासँ आठ घन्टासँ लऽ कऽ बहत्तैर घन्टा तकक उपवास हँसैत-मुस्कियाइत कऽ लइत। एहेन पत्नीए की जे अपन पतिकेँ देवालय जाइसँ रोकती। समाजक भीतर समबेत स्वरे अष्टयाम, नवाह आ नाचक सँग आनो-आन सामाजिक कार्य होइत जइ अवसरपर मंचपर बैस सामूहिक रूपेँ गान-बजान चलैत, तहिना माइयो-बहिनक बीच छैन। मूड़न हुअए आकि उपनैन, कुमार गीत हुअए वा बिआह, छठि हुअए वा फगुआ, सामूहिक रूपेँ सभ एकठाम भऽ गबै छैथ। नव-नव गायिकाक सिरजनो होइत आ अवसरो भेटैत। किएक तँ दादी-बाबी उदारतासँ कहै छथिन जे आब बुढ़ भेलौं, कफ घेरने रहैए तँए नवतुरिये-केँ गाबए दहक।..सामाजिक वातावरणमे श्रद्धा, प्रेमक सँग भाइचाराक बेवहारिक पक्ष अखनो अछि। एकर अर्थ ईहो नइ जे अपराधिक वृत्ति दबल अछि। अगुआएल छल, बहुत अगुआएल अछि। आँखिक सोझमे बहिन-बेटीक सँग दुरबेवहार, बाड़ी-झाड़ीक वस्तु बलजोरी तोड़ि लेब, खेतक फसल क्षति कऽ देब इत्यादि-इत्यादि। एक नहि अनेक अपरधिक वृत्त अपन शक्तिसँ समाजकेँ दबने अछि। मुदा तँए कि जिनगीकेँ आश नइ छइ, छै! धर्मक सँग प्रेमसँ छइ! जँ से नै छेलै तँ बाड़ी-झाड़ी वा खेत-पथारमे काज-करैत किसान किए गौंओं-घरूआ आ बाट चलैत बटोहीकेँ दूटा आम खाइले कहै छथिन? एकटा सजमैन अगुआ कऽ दइ छथिन जे धिया-पुताकेँ तरकारी बना देबइ।

..कहाँ मनमे छैन जे दस रुपैआ बुड़ि रहल अछि। रोपैइए काल दू-दूटा फलक गाछ लगबै छैथ जे एकटा परिवार-ले आ एकटा समाज-ले। जँ

परिवार-परिवारमे एहेन वृत्ति अपनौल गेल रहैत तँ की सामाजिक सम्बन्धमे औझुके टुटान अबैत?

रबि-मंगलकेँ देवस्थानमे कीर्तन अनिवार्य रूपेँ चलिते छल, जहिना विद्यालयक कार्य-दिवस। अनदिना सेहो दरबज्जे-दरबज्जे होइते रहै छल। जेना सबहक जिनगी बन्हाएल चलैत होइ। लोक भरि दिन खेत-पथारसँ माल-जालक पाछू लगल रहै छला आ साँझ पड़िते कीर्तन-मण्डलीक बीच पहुँच जाइ छला जे खाइ-पीबै राति धरि चलै छल। खेला-पीला पछाइत सुतै छला। कहाँ कखनो समाजक प्रतिकूल बात सोचैक समय भेटै छेलैन। जे कियो मण्डलीकेँ हकार दऽ अपना ऐठाम कीर्तन कराबैथ ओ अपन विभवक अनुकूल भोजनो आ साजो-समानक ओरियान कऽ दइ छेलखिन।

पहिल दिन शम्भुओकेँ सवा हाथ वस्त्र आ सवा-आना पाइ भेटलै। खा कऽ जखन शम्भु विदा हुअ लगल तँ गरे ने अँटइ। दू हाथमे तीन समान–पाइ, वस्त्र, खौजरी–अन्हार रातिमे केना लऽ कऽ जाएब। पाइकेँ जँ वस्त्रमे बान्हि एक हाथमे लऽ लेब आ दोसर हाथमे खौजरी लऽ लेब से भऽ सकैए, मुदा दुनू हाथ अजबाड़ि रातिमे चलब केना? ढिमका-ढिमकीक रस्तामे केतए ठेँस लगत केतए नहि। जँ घरवारीए-केँ सँग चलैले कहबैन सेहो उचित नहि। हमरा सन-सन केतेको गोरे छथिन। किनका-किनका सँग पुड़थिन। जँ कान्हपर आकि डाँड़मे वस्त्र लगा लेब तँ पहिरौठ भऽ जाएत। केना बाबूकेँ पहिरोठ वस्त्र देबैन। ..गुन-धुनमे पड़ल शम्भु एक गोरेकेँ अपना घर दिस जाइत देखि पिताकेँ समाद पठौलक-

“बाबूकेँ कहि देबैन जे डलना तेहेन चोटगर बनल छेलै जे इच्छासँ बेसीए खुआ गेल। तैपर तीन-तीनटा वस्तु लऽ कऽ अन्हारमे केना आएल हएत तँए आबि कऽ लऽ जाइथ।”

एगारहम बर्ख पुरैत-पुरैत शम्भुक गिनती गामक भजनियाँक सँग भगवानक भक्तोमे हुअ लगल। तहूमे ओहन भक्त जे बिनु बिआहल हुअए। ब्रह्मचारी। ओना शम्भुक सोभावमे सेहो समान्य बच्चाक अपेक्षा विशेष गुण छेलै जे सभ देखैत। जहिना कियो पनरह बर्खक उमेर बितेला पछाइतो पाँचो बर्खसँ कम उमेरक बच्चासँ लूरि-बुधिमे पछुआएल रहैत आ कोनो-कोनो बच्चा दसे बर्खमे सियान जकाँ भऽ जाइत। मुदा समाज तँ

अथाह समुद्र छी। जेहेन पारखी तेहेन परख। डोका-काँकोरसँ लऽ कऽ हीरा-मोती धरिकेँ समेटनिहार समुद्र सदृश समाज। एहनो पारखी जे एक तरहक जानवर–गाए-महींस इत्यादि– पोसि दोसरो-दोसरो तरहक जानवरक जिनगीकेँ दूर धरि देखैत, आ ओहनो जे सभ दिन सोझहामे रहितो किछु ने–जिबैक रस्ता–देखैत।

..तहिना, पारखी शम्भुओकेँ परखलैन। जइसँ कीर्तन मण्डलीक ऊपर श्रेणीक कीर्तनियाँमे शम्भुक गिनती हुअ लगल। गुरु तँ सदैत शिष्य तकैत। शिष्य-गुरुकेँ एकठाम भेनहि ने जिनगी आगू ससरैए। जाधैर से नै होइए ताधैर मिश्री कुसियारक पानिमे डुमल रहैत आ शिष्य सरपतक श्रेणीक गाछ बुझल जाइत। ..शम्भुकेँ एक सँग दू गुरु भेटल। एक अगुआ मुरते माने वजन्त्री-सँ-गौनिहार धरि आ आ दोसर साज-बाज। जहिना रंग-बिरंगक कोठीमे रंग-बिरंगक अन-पानि देखि गृहस्वामिनीक मन सदैत हरियाएल रहै छैन, तहिना शम्भुओ हरियाए लगल।

अखन धरि शम्भुक गिनती माए-बापक बीच, ओहन बच्चा सदृश छल जेहेनकेँ काजक भार तँ नहि, मुदा जिनगीकेँ जिआ रखब माए-बापक कर्तव्य-कर्मक श्रेणीमे रहैत। जइसँ बिनु पगहाक पशु जकाँ शम्भुओ। तहूमे आब शम्भु छैँटगर भऽ गेल। जखने भूख लगतै तखने दौगल औत नइ तँ भरि दिन भुखलो रहि सकैए। तँए कि शम्भुक खाइ-पीबैक आ रहैक ठौरो बिला गेल? नहि। ओ सभ रहबे कएल। हँ! एते जरूर भेल जे कखन औत कखन जाएत से पुछनिहार नइ रहल। सुखनीए संतोखीदासकेँ कहि देने रहैन जे बाल-बोधकेँ पाछूसँ नै आगूसँ टोकल जाइत अछि। जहिना राहैरक गाछक बुट्टीकेँ चारू भागसँ सिर पकड़ने रहैत तहिना तँ मनुक्खोकेँ अछि। मुदा जीवनी तँ गर लगा कोदारिक छह मारैत जइसँ अपन पएरो बँचै आ बुटो उखड़ै। तँए उत्तम कोटिक काज वएह ने जे साँपो मरि जाइ आ लाठियो ने टुटइ।

घरक कोनो काजक भार शम्भुकेँ नै रहैक कारण छल जे माए-बापक हृदय घेराएल रहैन जे माए-बाप अछैत जँ बेटा-बेटीकेँ कोनो भार पड़त तँ केराक गाछ जकाँ वा आन कोनो खिच्चा गाछ जकाँ पिचा कऽ थकुचा भऽ जाएत। जइसँ शरीर खिलैच जेतइ। जखने शरीर खिलचतै तखने जिनगी खिलैच जेतइ। जइसँ रोगाएल गाछ जकाँ सभ दिन खिद-

खिद करैत रहत। जँ एहेन जिनगी बेटा-बेटीक भेल तँ ओ परिवार केते दिन आगू-मुहेँ ससरत। तँए, जाधैर बाल-बच्चाकेँ निरोग बना नै राखब ताधैर वंशकेँ आगू-मुहेँ ससारब कोरी-कल्पना हएत। जइसँ ने माए-बाप शम्भुकेँ कोनो काज अढ़बैत आ ने शम्भु किछु करैत। सभ किछु अपन रहितो शम्भु अपन किछु नइ बुझैत। तँए, धैनसन! परिवारक काजक तहमे पहुँचलापर ने कियो बुझैत जे ऐ काजकेँ नइ भेने परिवारमे की नोकसान हएत। ई जिनगीए तँ बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ अछि। लगले बनत, चमकत आ फुटि जाएत। एहेन जे क्षणभँगुरोसँ क्षणभँगुर जिनगी अछि, जेकर कोनो बिसवास नहि, तेकरा पाछू पड़नाइये नादानी हएत। भने ने जनकजी ऐ बातकेँ बुझि भोगो-विलासकेँ अधला नइ बुझै छला। भलेँ शम्भुक मनमे जे हौउ मुदा माए-बापक मनमे जरूर रहैन जे जाबे थेहगर छी ताबे जँ काजसँ देह चोराएब तँ परिवारक प्रति अन्याय करब हएत। बुढ़ाड़ीमे झुनाएल धान जकाँ सीसक टुर तुइ-तुइ जहिना खसैए तहिना ने शरीरक अंगो–आँखि, कान इत्यादि–खसबे करत। जखन देह भँग हुअ लगत तखन तँ बेटे-बेटी ने श्रवण कुमार जकाँ भारपर टाँगि तीर्थ-स्थान घुमौत। एहेन काज तँ ओकरा ऊपर लधले छै, तखन मुर्दा जकाँ आरो नअ मन बोझ लाधब उचित नहि। की करत वएह वेचारा, एक दिस माए-बापक बोझ पड़तै, अपनो जिनगी रहतै, तैपरसँ बाल-बच्चाक कोनो ठेकान छै जे भगवान केते देथिन केते नहि। हुनका थोड़े बुझल छैन जे अन-पानि केते महग भऽ गेल अछि। जेतए मरूआ बरबैर माछ बिकै छल ओतए मरूआ धिना कऽ देश छोड़ि देलक, आ माँछ सिमटीक चिनमारपर गिरथानि बनि अजबारि कऽ बैसल अछि।

ढेरबा बच्चा रहितो शम्भु समयसँ दोस्ती केलक। दोस्ती निमाहैले मण्डलीक सँग पूरि जखन सभ कियो सुतैले ओछाइनपर जाइत तखन शम्भु साइकिल सीखैत बच्चा जकाँ पहिने हरमुनियाँ, ढोलक, झालि इत्यादिकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए। जहिना युवक-युवती पहिल नजैरमे पहिल रूप देखैत तहिना शम्भुओ देखलक। देखलक जे एक नै अनेको जुगल-जोड़ीक संयोगसँ समाज ठाढ़ अछि। जइमे अपन-अपन गुणकेँ मिज्झर भऽ कऽ मिलि-जुलि चलि उकड़ू-सँ-उकड़ू बाट टपि श्रृंगी ऋृषिक फुलवाड़ी देखैत। ..एकपेरिया झालि केना टुक-टुक जोड़क बनल

हरमुनियाँ सँग ठिकिया-ठिकिया चलैए। शम्भुक सिनेह समूहसँ भेल।

पाँचिम दशकसँ पूर्व, अष्टयाम कीर्तनक मूलमंत्र “सीताराम, सीताराम” छल। कारणो स्पष्ट अछि। जगत जननी जानकीक मिथिला, जिनक संकल्प पूर केनिहार राम। सीताराम मंत्रमे शम्भुकेँ ॠतानुसार सभसँ भेटए लगल। जहिना जखन जेहेन मन तखन तेहेन विचार, तहिना। भोरमे प्रभाती बेर ‘सीताराम’मे शम्भुकेँ वसन्ती वा ब्रह्मणी रस भेटैत जखन कि दिन-रातिक गतिए रसोक रस बदलए लगैत। मुदा मंत्रमे कोनो बदलाउ नै होइ। बाल-बोध रहितो शम्भु जीवनी जकाँ सिर सजमैनक भाँज बुझैत, हनुमानजी जकाँ नहि। जे छोटो काज-ले नमहर अस्त्रक प्रयोग करब। आ ने अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ पराती बेर साँझ आ साँझक बेर पराती गबैत। जँ गेबो करैत तँ जहिना हलुआइ चीनीक चासनीमे रंग-बिरंगक वस्तु बना ओइमे बोड़ि मधुर बनबैत...। एहने सन शम्भुओक मनमे उपजै। ओना जेते रंगक मंत्रक जरूरत होइत तेते एबो ने करइ। नइ अबै तहूमे ओकर दोख नहि। दोखो किए हेतै एक तँ वेचारा पशु जकाँ असगरे खुट्टा धेने, तैपर बाल-बोध। मुदा तैयो बकरीक बच्चा जकाँ नहि जे दूध पीविते छड़पए-कुदए लगैत।

हरलै-ने-फुरलै शम्भु घरसँ पड़ा गेल। दुनू बेकती संतोखीदास खेतमे काज करए गेल रहैथ। तँए भरि दिन कोनो भाँजे नै लगलैन। कारणो छल, दुपहर तक तँ आनो दिन हटले-हटले रहै छला आ साँझमे खोज करै छेलखिन। ओहो ऐ दुआरे जे दिन तँ घुमै-फिरैक होइ छै, मुदा राति तँ ठौर पकड़ैक होइ छै, तँए।

घरसँ निकैलते शम्भु घरक सभ किछु बिसैर गेल। खौजरियो बिसैर गेल। बिसैर नइ गेल मनसँ हटि गेलइ। तीर्थानुसार नव चानक नव ज्योति भेटलै। जहिना ताड़ी देनिहार खजुर लपैक कऽ ताड़ पकैड़ लैत, तहिना शम्भुक खौजरी-तबला पकैड़ लेलक। तबला पकैड़ते खौजरीए-क हाथसँ शम्भु बजबए लगल। बजबैत केते दूर गेल तेकर बोध नै रहलै। दुनियाँक बीच हेरा गेल। जेमहर देखैत दिन छोड़ि किछु ने देखैत। बाध-बोन, गाछ-बिरीछ, पोखैर-झाँखैर, हल्लुक-सुखाएल धार-धूर तँ सभ गाममे रहिते छइ। आड़ि-धूर बनौनिहार आकि नक्शा-खतियान देखनिहार ने खेत-पथार, गाम-घरक बात बुझैत, जे नइ बुझैत ओ दिन-राति छोड़ि आरो की

बुझत, तहिना शम्भुओ। बीच बाटपर शम्भुक मन हुदकए लगलै। हुदकैत गामक कीर्तन मण्डलीक अगुआक मुँहक बात मोन पड़लै। मोन पड़लै जे पचगछियामे बड़का-बड़का साजो-बाज छै आ बजोनिहारो। खैयो-पीबैले देल जाइ छै आ रहैयोक बेवस्था छइ। जहिना कोनो बीज भूमिकेँ छेदि अँकुरि ऊपर आबि अपनाकेँ वृक्षक पूर्व रूप बुझि इतराइए तहिना ने बच्चोक बुधिक अँकुर जगैए, शम्भुओकेँ सएह भेल। उत्साहित भऽ घरसँ निकैल विदा भऽ गेल मुदा खास जगहपर पहुँचैले जानकारीक जरूरत भेलइ। ओना, जँ खास जगह नहि, आम जगह देखए चाहब तँ कोनो परिचयक जरूरत नै होइत। जएह देखब, जेतबे देखब, जेतए देखब सहए दुनियाँ। जेहेन आँखिक ज्योति तेहने रंगक दुनियाँ। मुदा पंचगछिया जाइले तँ जानकारी बनाएब जरूरी अछि। मनमे उठलै जखन पुछि-पाछि लोक केतए-सँ-केतए चलि जाइत अछि, तखन हम किए ने जा सकै छी। जहिना आन बाट-घाट टपि लोक अपन स्थानपर पहुँचैए तहिना हमहूँ किए ने पहुँचब। पेटक भूखक सँग मनोक भूख कमलै। भूख कमिते संकल्प शक्तिक उदय भेलइ।

पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायणजी जेहने संगीत कलाक मर्मज्ञ तेहने साधको। संगीत कलाक सिनेही रहने 'संगीत कला केन्द्र' स्थापित केने छैथ। जइसँ मिथिलांचलक अनेको गायक, वादक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पौलैन।

एगारह-बारह बर्खक शम्भुकेँ केन्द्र लग पहुँचलोपर भीतर जाइक हिआउ ने डटइ। कातमे ठाढ़ शम्भु ओइ भूखल-पियासल मरूभूमिक चिड़ै जकाँ जे दूर-दूर धरि अन-पानिक छुति नै देखैत, समुद्रक ओइ सीप जकाँ मुँह बाबि जे स्वाति नक्षत्रक बूनक आसमे रहैत। ..तखने माँगन मण्डल निकलला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संगीत मर्मज्ञ। शम्भुपर नजैर पड़िते आँखि आकर्षित केलकैन। मुदा चेहरा अपन भूख देखौलकैन। बिना किछु पुछने-आछने शम्भुक बामा बाँहि पकैड़ केन्द्रक भीतर आनि माँगैन मण्डल खेनाइ खुऔलखिन। खेनाइ खेलापर शम्भुक मन असथिर भेल।

माँगन पुछलखिन-

"बाउ, की नाओं छी?"

“शम्भु।”

“परिवारमे के सभ छैथ?”

“बाबू, माए।”

“भाइयो-बहिन छैथ?”

“हँ।”

“आइ रहि जाउ काल्हि निचेनसँ गप करब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

दिन बीतल साँझ आएल। बाहर दिससँ अन्हार आबए लगल। जेना-जेना अन्हार अबैत गेल तेना-तेना करियाइत गेल। करियाइत-करियाइत ओते करिया गेल जे अपन आँखि हाथो ने देखैत। जे जेतै से तेतै गबदी मारैक ओरियानमे लगि गेल। मात्र दूटा पिपनी लगल कपाट कखनो खुजै आ कखनो बन्न भऽ जाइ। डर सन्हियाए लगलै। जेना-जेना डर अपन पैठ बनबैत गेलै तेना-तेना शम्भुकेँ डरौन बुझि पड़ए लगलै। कानए लगल। कनिते मनमे उठलै माए-बाप, संगी-साथी, गाम-घर...।

केना नै मोन पड़ितै? माटिक बनल रस्तो अन्हारमे बजैत- भाय ऐठाम कटारि अछि, आगू हुच्ची। भलेँ रस्ताक हिसाबसँ ओकाइत कम अछि मुदा खुरलुच्ची सबहक खुनल छी तँए रस्ता बगैल कऽ टपब...। शम्भुक मनमे फेर उठलै माइक कएल भानस। खाइ-पीबै राति भऽ गेल। भानस कऽ कऽ माए तकैले वौआइत हएत। मने-मन कहैत हएत साँझ भऽ गेलै अखनो धरि शम्भु किए ने आएल। चारि बेर सोर पाड़ि बाबूओ अकैछ कऽ अपनो खेनाइ छोड़ि ओछाइनपर ओंघरा गेल हेता।

मन केतौ, तन केतौ जहलक कैदी जकाँ शम्भुक स्थिति बनि गेल। हुचकी आबए लगलै जे बढ़िते गेलइ। आगूमे ठाढ़ भेल माँगन असमंजसमे पड़ल छला। केना नै पड़ितैथ। जिनगीक पहिल दिन, पहिल दृश्य। तँए नाटकक बिनु देखल दृश्यक सदृश, सोलहन्नी नव। जहिना परीक्षा फीस नै रहने विद्यार्थीकेँ फार्म भरैक अन्तिम चारि बजेमे एकाएक परिवारमे कोनो नमहर बेमारी भेने, आ जेठुआ दुपहरियामे पीआकक मन वौड़ा जाइत तहिना माँगनकेँ हुअ लगलैन। एक दिस हुअबला जिनगीक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस असगरे ओइ जगहपर पहुँच गेल अछि जेतए सभ अपरिचिते

छइ। मन नाचि भगवान रामपर गेलैन। अयोध्याक राजक बदला हुनका बोन भेटलैन। मुदा अयोध्यासँ निकैल गंगा पार होइते कोनो-ने-कोनो ॠृषि-मुनिक आश्रम भेटते गेलैन, तखन बोन की भेलैन?

..मुदा लगले माँगनक मन उनैट गामक बुढ़ माए-पर गेलैन। वेचारीकेँ जही दिन नातिनक जन्म भेने बेटी मरि गेलैन, नानीसँ माए बनि वेचारी 'मरनी बेटी' दुलारूक नाओं नातिनक रखलैन। उत्साह जगलैन। मन बाजि उठलैन- ऐ बच्चाकेँ नै वौआए देबइ। भलेँ राति किए ने जागि कऽ बितबए पड़त। मुदा शंको तँ जीविते अछि। लगले मनमे उठलैन जे हो-न-हो अनचोकेमे नीन चलि आबए आ तहीकाल पड़ा जाए। ..झाड़ी बोन जकाँ माँगनकेँ रस्ता भेटबे ने करैन। जँ भेटबो करैन तँ कोसिकन्हाक खट्टा-पटेरक रस्ता जे लगले ओरा जाइत। ओरेबो केना नै करैत? भूख-पिआस आकि नीन केकरो पुछि कऽ अबैए। भलेँ ओकरा सुति कऽ आकि खा-पी कऽ भगौल जा सकैए। आगूक बाट भेटते माँगन कोठरीक केबाड़मे लगल तालाक कुन्जी सिरमामे रखि लेलैन। मुदा तैयो शंका दबिते रहैन जे जखन नीनभेर भऽ सुतब आ शम्भु पड़ाए चाहत तँ की सिरमाक चाभी नै निकालि सकैए..?

मुदा आब धीरे-धीरे शम्भुक कनैक आवाजमे मिठापन आबए लगल। भरिसक नीनक आगमन भऽ रहल छइ। मिठासे कानब ने सुखोक एकटा कारण छिऐ। मुदा तैयो माँगनक मन उचैटते जाइन। घर-बाहरक वा तीर्थ यात्रा आ तीर्थस्थानक सीमापर जहिना संकल्पक उदय होइत तहिना माँगनकेँ सेहो भेलैन। तकैत आँखिए कौल्हुका सुरूज देखब। मुदा असगर तँ रातियो काटब असान नहियेँ अछि...। माँगन समुद्रक अगम पानिमे डुमए लगला। मुदा लगले नाचक हरही बुढ़ियापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते मनमे उठलैन ओहो बुढ़िया गामक युग पारखीए छी। आन-आनकेँ देखै छिऐ जे लोकक लाटमे राति बितबए चाहैए आ ओकरा कियो लाटमे रहै ने दिअ चाहै छइ। मुदा बुढ़िया तँ बुढ़िए छी, कियो ओकर बात सुनै वा नै सुनै, मुदा भरि राति बड़बड़ाइते रहैए। भलेँ साँझकेँ भोर कहैत हौउ आकि भोरकेँ साँझ। जखन जे मन फुरै छै तखन से पहरिया नोकर जकाँ भरि राति ठाढ़ करैत रहैए। असविस करैत बरियातीकेँ जहिना खिस्सकर रंग-रंगक चसगर चासनीमे डुमबैत तहिना माँगन मण्डलक मन बड़बड़ाए

लगलैन। बिसरए लगला शम्भुकेँ आ अपन कर्तव्य-कर्ममे डुमए लगला। तैबीच हाथ-पएर मारि अन्हारे-अन्हार नीन आबि शम्भुकेँ गोंति देलक। जहिना अथाह पानिक तरमे मुँहक बोल पानिए-मे विलीन भऽ जाइत तहिना शम्भुक कानब विलीन भऽ गेल।

नाकक साँसक आवाजसँ माँगनकेँ बिसवास भऽ गेलैन जे शम्भुकेँ नीन आबि गेल, निन्न पड़ि गेल। असथिर भेला। मुदा फेर लगले मनमे उठलैन जे चहाएल मन कखनो चहा कऽ उठि सकैए। जँ कहीं शम्भुक नीन देखि अपनो नीन पड़ि गेलौं तखन तँ सभ चौपट भऽ जाएत!

ओना दुनियाँ देखैबलाक अछि। देखैबला दुनियाँक बीच हेराएत किए। जखन सभ किछु मिलाइये कऽ दुनियाँ अछि तखन हेराइक प्रश्ने केतए? मुदा लोककेँ दिसांशो तँ लगै छइ। दिसांशे लगलापर ने कियो पूबकेँ पच्छिम आ उत्तरकेँ दच्छिन बुझै छै। मुदा अकासकेँ पताल आ पतालकेँ अकास कहाँ बुझै छइ? माँगन लगले ओइ सीमानपर पहुँच गेल जेतए बाल-बोधक रक्षा होएत। बाल-बोधक रक्षा तखने भऽ सकैए जखन ओकरापर नजैर राखल जाए। तैबीच मनमे उठलैन अपन आ अपन संगीक सँग संस्थाक महत। मन बुदबुदाए लगलैन।

मनुक्खक जीवन तँ तखने ने जीवन, जखन जीवनक बोन लगा दिअए। ओना एक बारगी एहेन शक्तिक उदय सम्भव नहि, मुदा डारि, पात, सिर, फड़, फूल इत्यादिक एक-एक अंगक तात्त्विक बोध होइ। केतेको बेकती ऐठामसँ गायक, वादक बनि-बनि अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत आबि रहल छैथ। ओइ आम-जामुनकेँ किए ने सवुर हेतै जे अपन बाल-बच्चाक–गाछी–सँग शरीर त्यागत!

जहिना आइ धरि, घर-परिवार बसबै पाछू लगल रहलौं तहिना जाबे घटमे घटवार अछि, नाह खेबैत रहब। भिनसरमे जखन शम्भुक सँग गाम पहुँचाबए जाएब तखन सोझे घुमि कऽ चलि नै आएब। 'सरियादासीनसँ' भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल। स्वर्गक गायिका! मुदा से नै पाहि लगा एकठामसँ शुरू करब आ सबहक भेँट करबैन। हँ, जरूर करबैन। मुदा गुरुओजी मानैथ तखन ने। जहाँ एकसँ दोसर दिन हएत आकि हकबाहि करए लगता। समाद-पर-समाद पठबए लगता। ओहो तँ जरूरीए अछि। नै रहने अपन सुन्नर फुलवाड़ीक ताम-कोर के करत? खाएर जे हौउ, बाल

गोविन्दजीक ऐठाम जरूर जाएब। बड़ागामक लहलहाइत बगीचाक ओगरवाहि तँ वएह ने कए रहला अछि। ओना अपने सिख-लिखक समांग महेन्द्र सेहो छैथ। महेन्द्र, बालानन्द, शंकर, संजीव, रामनारायण, विनय, बेचन आ ओइठामसँ राम प्रसाद महतो ऐठाम होइते आगू बढ़ब। नइ जाएब सेहो उचित नहियेँ हएत। मनुक्ख तँ कौछु नइ छी जे अण्डा दैत पड़ाइत जाएब। मुदा काँकोड़ो तँ नहियेँ छी जे जेकरा पेटमे रखलौं ओ पेटे खोखैर खा लिअए। शीतनारायण, सुरेन्द्र आ अजयसँ सेहो भेँट कइये लेब।

..ओना, भेँट हएत कि नहि, सेहो ठेकान नहियेँ अछि, किएक तँ उड़ंतबाज सभ ने बनि गेला अछि। ओह! हदसँ अधिक पीतमरू राम प्रसाद छैथ। प्रेमकेँ जहिना प्रेमास्पदक बाट भेटते बिसवास भऽ जाइत जे प्रेमी सँगे-सँग चलि रहल छैथ तहिना राम प्रसादो ने छैथ। मुदा बेसी लटारममे केतौ नै पड़ब। लटारममे पड़ब तखने ने बेसी दिन लगत, जँ से नै करब तँ किए बेसी समय लगत। हँ तखन एकटा करब जे जखन कियो भेँट हेता तँ हुनको गुरुजीसँ मोबाइलपर भेँट करा देबैन। जखने भेँट हेतैन तखने ने बुझथिन जे परिवार आ सन्यास की छिऐ। जखन ओमहर जाएब तखन हिताइदास, बेचन मण्डल, राम गुलामदास, रामायणी देवी, छठूदास, दरबारीदास, बतहू मण्डल, लखनदास, राधेश्यामजी, रामजीदास, बौआ झा, राम भजनसँ भेँट नै करिऐन तँ जिनगी भरि उपरागक मोटरी कपारपर चढ़ल रहत। जँ कहियो भेँट हेता तखनो आ समदियो दिया समाद पठा कहता जे ‘एमहर एलौं, हमरा छोड़ि देलौं!’

माँगनक मनमे उठलैन माटिए पानिक संयोगसँ ने जीवधारीक सिरजन होइए। गंगा-ब्रह्मपुरक बीचक धरती मिथिला। एकलब्य सदृश एक-सँ-एक योद्धा कर्मरत् छैथ। एक लपकन अमतो चलिए जाएब। राधाकृष्ण आ कारतारामक लगौल फुलवाड़ी। तैसंग ध्रुपदक विशेष चमत्कारी शैलीक फुलवाड़ी सेहो। तेतबे नहि, पद्मश्री राम चतुरजी, विदुर, अभय, रामकुमार, रमेश आ पाठकजीक भेँट सेहो कइये लेबैन। मन बिलमलैन। रातिक बारह बजि गेल। कोठरीसँ निकैल अकास दिस तकलखिन तँ बुझि पड़लैन जे अन्हार ओससँ सिक्त भऽ शीतल बना रहल अछि। साँझसँ दबाएल इजोत अन्हारक सोझहामे आबि ठाढ़ भऽ गेल

अछि। अदहे राति तँ आब जगैक अछि। एक दिन बितने तँ माघ सन जाड़केँ पिहकारी दऽ भगौल जा सकैए तँ अदहा रातिकेँ एकटा धुनो ने ठेल सकैए। पुन: कोठरी आबि शम्भुकेँ देखि ओछाइनपर जा माँगन मण्डल ओंगैठ गेला। ओंगैठते मोन पड़लैन पनिचोभ। जखन अमता जेबे करब तखन एक लपकन पनिचोभो चलिए जाएब। ओना जखने पनिचोभ जाएब तँ ओ दिन गुनैत-गुनैत सात दिनसँ पहिने नहियेँ छोड़ता, मुदा ओत्तो नै अँटकब। एमहर अँटकब तँ अपन बोहियो जाएब। अबधजीक लगौल गाछी कोन तरहेँ रामचन्द्र, दिनेश्वर, राजकुमार, मँगनू, फुलानन्द, भूपेन्द्र ओगरबाहि कऽ रहल छैथ सेहो बिना गेने केना देखब। ओमहरसँ बनारसक गुरु-शिष्य परम्पराक जीवित रखनिहार खरबान-जीक ऐठाम सेहो जेबे करब। तैसंग मनसा मिश्र आ डीही मिश्रक लगौल कृष्ण लीला आ रामकथाक वृक्ष कोन तरहेँ सीतू, हीरा, भगत, रामजी, परमेश्वरी, अनन्त, दम्मन, सत्यनारायण आ रामवृक्ष सिंह पालि-पोसि रहला अछि सेहो देखि लेब। ओना बीच बाटपर दरबारीदास सेहो पड़ता मुदा ओ घुमन्तु लोक छैथ, भेँट हेता आकि नहि। खाएर, गाम तँ कम-सँ-कम देखि लेब। तेतबे नहि, आगू कहियो दोखियो तँ नै हएब।

भोर होइते चारू दिसक गाछी-कलम-बँसबाड़िसँ चिड़ै सबहक आवाज उठए लगल। कियो अपन संगीकेँ कहैत जे भोरूका नीन बेसी सोहनगर होइ छै तँए एक नीन ओरो लगा लिअ, तँ कियो कहैत सुरूज उगलापर तँ दुनियाँक एक-कोणसँ दोसर कोण धरि उड़ैक समय रहैए, तँए ओइसँ पहिने जेते उड़ि लेब ओते अगुआएल रहब।

चिड़ैक आवाज सुनि माँगनक मनमे सवुर भेलैन जे भरिसक भोर होइपर अछि। राति बीति गेल एकोबेर नीन कहाँ आएल। आब जँ शम्भु उठबो करत तँ रौतुका डर थोड़े खेहारतै। मुदा प्रश्न उठलैन- भरि राति जगैक परियोजन की?

जहिना गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनी हुअए आकि पोखैरमे रहैबला चाहे माटिमे रहैबला जीव-जन्तु हुअए आकि पाथरमे बास करैबला, सबहक माए-बाप ताधैर ओगरबाहि करै छै, जाधैर ओ स्वतंत्र भऽ जिनगी नै प्राप्त कऽ लइए।

प्रात भने, दोसर दिन शम्भुकेँ गाम पहुँचा माँगन आगू बढ़ि गेला।

शम्भुपर नजैर पड़िते दुनू परानी-संतोखीदासकेँ राति भरिक चिन्ता उड़ि गेलैन। पुछैक परियोजनो ने बुझि पड़लैन जे पुछिऐ राति केतए रहए। ओना दुनू परानीकेँ पहिनहिसँ मनमे रहैन जे केतौ कीर्तन मण्डलीक सँग हएत, भगवानक भजन-कीर्तनमे। मुदा तैयो शम्भुपर नजैर पड़िते मन खुशी भेलैन। मनमे उठलैन जे माल-जाल जकाँ मनुक्खकेँ थोड़े बान्हल जा सकैए। जेना-जेना सरकैत जाएत तेना-तेना अपने ने जिनगीक बान्ह लगैत जेतइ। आह्लादित भऽ संतोखीदास पुछलखिन-

"बौआ, काल्हिए-सँ नै देखने छेलियह। केतौ अनतए गेल छेलह?"

पिताक सिनेह शम्भुक सिनेहकेँ जगा देलक। बाजल-

"बाबू, काल्हि भोरेसँ मन औनाए लगल। केतबो असथिर हुअ चाही से हेबे ने करी। घुमि-फिर कऽ पचगछिये मोन पड़ि जाए।"

संतोखीदास पुछलखिन-

"पचगछिया केना बुझलहक?"

शम्भु-

"कीर्तन मण्डलीमे बेसी काल चरचा होइ छेलइ। जेना सभ किछु बिसैर गेलौं। हरल-ने-फुरल विदा भऽ गेलौं। ओतइ चलि गेल छेलौं। बड़का-बड़का गवैया, वजन्त्री सभ ओइठाम छइ।"

संतोखीदास पुछलखिन-

"अइले एते दूर जाइक कोन खगता। सुनै छी अपने गाममे महिना दिन रमलीला चलत। केते देखबह?"

शम्भु बाजल-

"केते दिनमे औत?"

संतोखीदास-

"ऐगला मासमे औत। अखन आसिन-कातिक छिऐ ने, रजो-महराजक बखारी खलिया जाइ छइ। तैपर दुनू मास तेहेन अछि जे सभ दिन पावैने-पावैन अछि। ऐगला मास धानोक लड़ती-चड़ती शुरू भऽ जाएत आ पानियोँ-बुन्नी ठमैक जाएत।"

शम्भु पुछलकैन-

“सिनेमा जकाँ एक्के सभ दिन हएत?”

संतोखीदास-

“नइ, जहिना बच्चाक जन्म होइ छै आ लागल-लागल ठेहुनिया दइ छै, खसैत-पड़ैत उठै छै, उठि कऽ चलै छै, पढ़ै-लिखै छै, बिआह-दुरागमन होइ छै, घर-परिवार होइ छइ। ताबे माइयो-बाप बुढ़ भऽ जाइ छइ। ओकरो सेवा-बरदासि करैए। तहिना रमलीलोमे होइ छइ। सभ दिन सभ रंगक होइ छइ। जइसँ बेसी खरचो होइ छै आ समैयो लगै छइ। तँए भरि मन देखबो करैए। जइ काजमे जेते समय, मेहनत आ खर्च लगत ओ काज ओते नम्हरो आ नीको होइ छइ किने।”

शम्भु पुछलकैन-

“अपना गाममे कहियो भेलो छइ?”

संतोखीदास-

“नइ। रमलीला कोनो अद्दी-गुद्दी छी जे सभ गौंआँ कऽ लेत। दुर्गापूजा जकाँ छी। जहिना पावैन-तिहार, पूजा-पाठ तँ घरे-घर होइए मुदा दुर्गोपूजा करैमे गौंआकेँ डोराडोरि सक्कत कऽ कऽ बान्हए पड़ै छइ तहिना।”

छठिक परातेसँ झट्टा-पिट्टा शुरू भेल। बाधक रंग बदलए लगल। एक तँ रंग-रंगक धानक चास, तैपरसँ धानक बदलैत रंग। बेरू-पहर जे किसान भरल चास देखैत ओ भिनसर सेहो देखैक उदेससँ खुशी होइत घरपर अबैत आ जे भिनसरू पहर ओसमे नहाएल देखैत ओ बेरू पहर फेर देखैक आससँ अबैत। जहिना भरल-पूरल परिवारमे देहक सभ अंग भरल-पूरल चलैत तहिना सुभ्यस्त समय भेने शुरूहेसँ धानोक भेल। जहिना खेतमे काज करैकाल किसान हेरा जाइत तहिना अगहनमे बोनिहार। के नइ दुइयो-चारि कट्ठा खेती केने रहैए।

कातिकक पूर्णिमाक परातसँ रामलीला शुरू हएत। तँए अबैसँ आठ-नअ दिन पहिने रहुआक कमल नारायण, गरीब झा, जलेसर आ दयाकान्त बेर टगैत, करीब तीन बजेमे गाम पहुँचला। ओना गामक लोक पनरह-बीस दिन पहिनेसँ बुझैत जे रामलीला हएत। मुदा बिआह-दुरागमनक लगने जकाँ लोकक मनमे। असल लग्न तँ तखन ने शुरू होइए

जखन बर-कन्याक देखा-सुनी हुअ लगैए।

..गाम पहुँचते जेना हवाक सँगे अबैक समाचारो पसरल। सीमाकातक आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़े-ठाढे चारू गोरे विचार करए लगला जे गौंआँ सभसँ गप-सप्प केना हएत? बिना गप-सप्प भेने आगू काज नै ससरत। मुदा गौंआसँ मुखातीब केना हएब। ईहो तँ नान्हिटा काज नहि, अखनो समाजमे ओहन लोकक कमी नहि जे बिना आग्रह केने बरो-बेमारी आकि मुरदो डाहए नइ जेता। तैठाम अनगौंआँक सँग की करता ई तँ कठिन प्रश्न अछिए। मुदा एकटा तँ अखनो अछि जे नव लोक वा नव चीज गाममे एने लोक बिनु कहनौं देखए जाइए। भलेँ बाधे दिस जाइक बहाना किए ने करैत। ..कमल नारायण गरीब झाकेँ पुछलखिन-

"गाम तँ आबि गेलौं, आगू की सभ हएत?"

कमल नारायणक बात सुनि गरीब झा गाम दिस आँखि उठौलैन तँ देखलैन जे एक्के-दुइये आगू-पाछू लोक सभ धरियाएल आबि रहल छैथ। लोककेँ देखबैत गरीब झा बजला-

"जहिना अपना सभ गौंआकेँ रामलीला देखबए चाहै छिऐन तहिना ने गौंओं सभ देखैक ओरियान करता। एहेन-एहेन काज अगुतेने होइ छइ।"

अखन धरि गाममे रामलीला नै होइक कारण रहल जे गाममे ने एक्कोटा जमीन्दार आ ने जेठरैयत। कम आँट-पेटक किसान। जिनका अपने जिनगी पहाड़। बाढ़ि-रौदीक इलाका। एक सालक बाढ़ि वा रौदी किसानकेँ पाँच बर्ख पाछू धकेल दैत अछि। तैठाम दुर्गापूजा आकि रामलीला लोकक मनमे उठत केना। मुदा गामक एकटा गौरव अछि- दू साए बर्ख पहिने जेते लोक आ परिवार छल ओइमे दस गुणा वृद्धि भेल अछि। ओना ई बात नहि जे ओइ गामक लोक बम्बै, कलकत्ता, दिल्लीक आमदनी नै बुझैत, बुझैत! मुदा गामक सिनेह आ विश्वामित्र सदृश सेहो जिबठगर। किए ने जिबठगर रहत? कोनो की आइए रौदी, बाढ़ि आकि अन्हड़-बिहाड़ि, भुमकम भेल अछि आकि सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ होइत रहत। तरहत्थीक मैल जकाँ दू बेर रगैड़ देबै छुटि जाएत। तेतबे नहि, गामक ईहो गौरव अछि जे बरहबर्णा माने बारहो वर्णक गाम रहितो ने कहियो अपनामे लाठी-फराठी निकलल आ ने कोट-कचहरीक दछिना

भरए पड़लै।

रामलीलो पार्टी आ गौंओंक बीच गप-सप्पक क्रममे तँइ भेल जे बरहम स्थान सार्वजनिक जगह छी, तँए ओत्तै बैस ऐगला गप-सप्प हुअए। सएह भेल।

..लोकक बीच कमलजीक हृदय उमैड़ गेलैन। कला-सिनेही। विह्वल भऽ बजला- “आइ धरि एहेन गाम नै देखने छेलौं जैठाम एहेन हृदैक मिलान भेल। अखन धरि जेहेन-जेहेन गाम देखलौं तइसँ भिन्न गाम बुझि पड़ैए। ऐ रूपेँ कहाँ कोनो गाममे रामलीलाक प्रति आकर्षण छइ।”

मुदा लगले मन आगू बढ़ि गेलैन। भगवान रामक प्रति लोकक बिसवासक कारण अछि आकि मनोरंजनक? मनोरंजनो तँ जीवनक सँगे चलैबला सहचरीए छी आकि जिनगीसँ अलग चलैबला? कर्म-आनन्द मिलि लीला करैए। ..सभ सबहक मुँह देखैत जे के की बजै छैथ। कारणो अछि। सभ अपनकेँ नव बुझि नव फूलक सुगन्ध लिअ चाहैत। सभकेँ चुप देखि पुन: कमलजी बजला-

“अही बेरटा नहि, जहिया कहियो लीला देखबैक अवसर देब तहिया जरूर आगूओ देखबैत रहब।”

जहिना राज-दरबारमे किछु गोरेकेँ बजैले परमीशन नै लिअ पड़ैत तहिना रामलीलाक मेड़ियाक बीच गरीबजीकेँ छैन। जहिना गरीब नाओं तहिना एक चेराक चेहरा। भीतर-बाहर एक्के रंग। ने गमहारिक चेरा जकाँ अमेरिकन आ ने कटहरक चेरा जकाँ यूरोपीयन। बस-बस सोल्होअना आमक चेरा जकाँ इण्डियन। चौबीसो घन्टा शरीरसँ कला छिटकैत रहै छैन। मुस्की दैत बजला-

“भाय, सर-समाज जहिना कमल भाइक सँग पाबि हम सभ पात्र बनि सेवा-ले एलौं, तहिना अहूँ सभ गारा-जोड़ी कए संगी बनब।”

सभ कियो मुड़ी डोलबए लगला। तैबीच हँसैत गरीब झा पुन: बजला-

“जेना हिजरा-हिजरनी सभकेँ देखै छिऐ जे कोनो-गाम, कोनो समाज ओकरा बान्हि कऽ नै रखै छै तहिना हमरो-सभसँ छिपाएब नहि।”

कहि कमलजी दिस तकैत फेर बजला-

"होउ भाय, आब अपन ऐगला विचार कहियौन।"

गरीब झाक विचारकेँ कमलजी मनमे औंटैत-पौड़ैत रहैथ। मनमे हौंड़ैत रहैन जे भरिसक अपना इलाकामे जेते रामलीला पार्टी छैथ, ओ सभ भरिसक एक सीमाक भीतरे चक्कर कटैत रहला। जइसँ सभकेँ उठैक समान वातावरण नै भेट सकलैन। भरिसक गनल-गूथल गाम आ गनल-गूथल समाजक भीतरे रहि गेला। मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ जे जेते रामलीला देखै-देखबैक जरूरत अछि ओते मेड़िया ऐछो नहि, मुदा तँए कि लोक नै देखैए सेहो बात नहि। जहिना पचमहलो कोठामे मनुक्खे रहैए आ बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीमे सेहो मनुक्खे रहैए, तहिना रामलीलाक अतिरिक्तो नाटक, नौटंकी, थिएटर, रास, ऑरकेस्ट्रा, लोक नाच, विषय-कीर्तन, कौव्वाली, इत्यादि तँ चलिते अछि। रामलीलामे जहिना रामकथा चलैए तहिना लोको नाचमे तँ चलिते अछि। मुस्कियाइत कमल बजला-

"आइ अहाँ सबहक अतिथि-अभ्यागती भेल। हम सभ गाछी-बिरछीमे रहैबला छी, तँए भारो कम्मे देब। रातिमे निचेनसँ सभ एकठाम बैस हबगब करब। अखन एतबे कहू जे हृदैसँ चाहै छी कि नहि।"

एक तँ गाममे पहिले-पहिल रामलीला हएत तेकर खुशी, तैपर उपजल गामक गदगदी रहबे करइ, एक स्वरे सभ हुँहकारी भरि देलकैन।

दिसा-मैदान दिस टहैल दोसर साँझमे सभ कियो एकठाम बैसला! लोकक खुशीकेँ अपना दिस खिंचैत गरीब झा ठाढ़ भऽ बजला-

"अहाँ सभकेँ बुझले हएत जे रामलीलाक स्टेज बनत। स्टेजक पाछू कलाकारक बेवस्था रहत आ आगूमे देखनिहारक। स्टेज आ स्टेजक पाछूक बेवस्था-ले तँ बासो-बेलन आ परदो अछिए। रहल स्टेजक आगूक बेवस्था, ओ सरनजाम तँ समाजे करब।"

गरीब झाक बात सुनि संतोखीदास दोहरबैत कहलखिन-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ गरीबबाबू, नीक-नहाँति नै बुझि सकलौं?"

गरीब झा बुझबैत बजला-

"केते गाममे रामलीला खेलेलौं हेन। सभ गाममे किछु-ने-किछु तफरका रहिते अछि। जेना केते गाममे पुरुख दर्शक-ले अलग आ महिला-

ले अलग ढाठ गाड़ि बेवस्था कएल जाइत अछि। तँ कोनो-कोनो गाममे से नै होइए, सएह कहलौं।”

संतोखीदास मुस्कियाइत बजला- “गरीब भाय, देखनिहारसँ पहिने खेलेनिहारक चर्च करू जे खेलेनिहारक बीच ने तँ..?”

संतोखीदासक प्रश्न सुनि गरीब झा सकपकाए लगला। ओना पेटक बात ओंढ़ मारि गोंगिया-गोंगिया निकलए चाहैन, मुदा अपनाकेँ एक कलाकार मानि सहैम जाइथ। दुनू गोरेक बीचक सवाल-जवाब सुनि कमलजीकेँ नै रहल गेलैन। मुदा नजैर गाम-समाज दिस नहि पड़ि अपन मेड़ियापर पड़लैन। सभ एकठाम बैस खाइ-पीबै आ सुतै-बैसै छी। घर-गिरहस्तीक सँग घरवाली बाल-बच्चाक सँग कला-साहित्यपर विचार करैत गति-मुक्तीक विचार-विमर्श करै छी, तखन एहेन प्रश्न किए उठल..?

कमल बाबूकेँ मनमे झटका लगलैन। गुम्म भऽ गेला। सभ कियो हुनके दिस देखए लगला। पचपन-साठि बर्खक छरहर देह, मुँहक ऐगला दाँत टुटल, केश पाकल...। मुदा कियो किछु बजला नहि, कमल बाबूक मनमे उठलैन जहिना गाए-ले गोशाला, विद्यार्थी-ले विद्यालय, रोगी-ले अस्पताल तीर्थस्थान होइत तहिना ने कला प्रेमी-ले रंगमंच अछि। यएह गरीब झा छैथ जे प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक छला। दरमाहाक पाइ कहियो परिवारमे नै दइ छेलखिन। सभ दिन सिनेमे आकि नाटकक चक्करमे घुमैत रहला। मुदा जखन अपन पार्टी ठाढ़ भेल तखन विद्यालय छोड़ि एला। तहिना दयाकान्तो छैथ। बनारसमे रहि शास्त्रीय, उपशास्त्रीय संगीत सिखने छैथ। तहिना जलेसर सेहो मनचोभिया नाचसँ आएल छैथ। अपनो कुटुमक संसर्गमे पचगछियामे रहल छी। पुन: मनमे उठलैन सच्चामे कच्चा की! उफनैत बजला- “सभ काजक अपन सीमा होइ छइ। अहाँ सबहक जे सीमा अछि तेकर भार अहाँ सभपर आ हमर सबहक जे सीमा अछि तेकर भार हमरा सभपर। द्वारपाल बनि अपन-अपन सेवा जँ इमानदारीसँ देब तँ कोनो तरहक गन्दगी नै औत।”

कमल नारायणजीक विचार सुनि संतोखीदास बजला-

“आइ धरि ऐ गाममे रामलीला भेबे नइ कएल अछि तखन अनुमानसँ किछु सोचब आ बुझबमे केतौ-ने-केतौ कमी रहिए जाएत, मुदा

ईहो नै कहब जे ओ अनिवार्ये अछि, नहियोँ भऽ सकैए। ई निर्भर करैए गामक बेवस्थापर। जइ गामक जेहेन बेवस्था रहत तइ गाममे तेहेन काज हएत। ओना, गामक भीतर मकड़ाक जाल जकाँ जाल पसरल अछि। एहनो नाच वा पूजा अछि जइमे खास जातिक प्रवेश आ खास जातिक निषेध अछि। जखन कि मूल प्रश्न अछि कला आ धर्मक। तहिना मनुक्खक सँग देवतो आ कलो बँटाएल अछि। जइसँ जबरदस टाट लगि गेल अछि।"

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा ठहाका मारि पुछलखिन-

"तखन?"

गरीब झाक जिज्ञासा देखि संतोखीदास मुस्की दैत कहलखिन-

"जेकरा जइ गाछक जड़िक बोध हएत वएह ओइ गाछक गुण बुझि सकैए। मुदा ऐठाम तँ अखन गाछ जनमैक सुरे-सार भऽ रहल अछि, तखन तँ प्रश्न उठैक समैयो नै बनल अछि।"

गरीब झा पुछलखिन-

"तखन?"

संतोखीदास बजला-

"हँ, अखन घरसँ बाहर धरिक छी तँए अखने आगू-ले रस्ताक निर्माण कऽ लेब, नीक हएत। ओना कोनो निअम अस्थाइ नै भऽ सकैए। कारण जे समैयक सँग समाज चलैए तँ निअमोक सँग चलए पड़त। जइसँ किछु ने किछु सुधार होइते चलत। जे समैयक अनुकूल हेतइ। हमर समाज ओहन अछि जइमे टोल-टोलक आठ-नअ बर्खक बच्चासँ लऽ कऽ चेतन आ बुढ़-पुरान धरि सँगे बाध-बोनमे एकठाम भऽ घास छिलैत तीन-तीन-चरि-चरि घन्टा सँगे बितबैए। खेतमे सँगे रोपैन-कमठौन करैए। ढेरबासँ जुआन धरि सँगे साइकिलसँ दस-दस किलोमीटर स्कूल-कौलेज जाइत अछि। तैठाम रामलीला सन जगहमे खाढ़ी बनए! ई केहेन..?"

संतोखीदासक प्रश्न सुनि कमल गरीब दिस कनडेरिए आँखिए झँकलैन आ गरीब जलेसर दिस, जलेसर कमल दिस। तीनूक-तीनू विपरीत दिसामे वौआए लगला। एक-दोसराक बीच नजैरक मिलान हेबे ने करैन। जहिना छोट बच्चा केशौरक ऊपरका भाग देखि हाथेसँ खोधिया उखाड़ए चाहैत तहिना तीनूक बीच मनमे हुअ लगलैन। मुदा से गरे ने लगैन।

दयाकान्त-ले धैनसन। मने-मन पावसक विसर्जन करैत समदौनक ताल-मात्रा मिलबैत रहैथ। तखने कमल नारायण पुछि देलखिन- “की दया?”

जहिना कियो अनचोकमे कोनो प्रश्नक उत्तर किछु दऽ दैत तहिना दयाकान्त मुड़ीक ताल मिलबैत धाँइ-दे बाजि उठला- “हँ, हँ, सभ नीके।”

मुदा लगले जखन भक्क टुटलैन तँ मनमे उठए लगलैन जे भायकेँ की उत्तर दऽ देलिऐन? ओ राय पुछलैन आ हम ओइ बच्चा जकाँ कहि देलिऐन! जहिना कोनो भोंतियाइत यात्रीकेँ बिसवासक सँग बिनु देखल रस्ता बता दइत! तहिना ने तँ भेल! अखन समदौनक मात्रा मिलबैक समय नै छल जे मृत्युक पछाइतक वएह मात्रा जन्मकालक केना हएत। किए ने हएत। जन्म-मृत्युमे अन्तरे की छइ। खेतक आड़ि जकाँ थोड़े अछि जे खेतसँ ऊपर होइमे वा आड़िपर चढ़ैमे डाँड़पर हाथ लिअ पड़त। ई तँ ईंटाक खरंजाक बाट छी जे फुटलाहा छोड़ि-छोड़ि सौंसकापर पएर दैत चली...।

दयाकान्तक उत्तर सुनि कमल आरो भोंतियाए लगला- जखन सभ नीके तखन अधला की? जँ अधला नै तँ राक्षसक जन्म किए? आ जँ राक्षस नै तँ मनुक्खक देहमे मौस-खून किए नहि? मुदा तखने गरीबो झा आ जलेसरो अपन भाँज पुरबैले कमल दिस तकलैन। बजैले दुनूक मुँह लुसफुसाइत रहैन। मुदा पहिने केना बजता। जलेसरक मनमे होनि जे गरीब भायकेँ गुरु बुझै छिऐन, अखनो बहुत सिखबै छैथ। जखन कि गरीब झाक मनमे उठैन जे कलाकारक रूपमे भलेँ दुनू गोरेक एक जिनगी अछि, मुदा गाम-समाजक बन्हनमे तँ दू छी! तँए पहिने जलेसरक विचार जरूरी अछि। जँ से नहि, अगर पच्चीस तरहक रोगसँ ग्रस्त रोगीक इलाज पहिने नै भऽ एक बेमारीबलाक इलाज हएत तँ निसचित रूपेँ अधिक बेमारीबला रोगी मरबे करत। मुदा से नहि, जँ पच्चीस बेमारीक इलाज उपलब्ध हएत तँ एक बेमारीक इलाज एकटा कोरामिनोसँ भऽ जाएत। ..आँखिक इशारासँ जलेसर गरीबकेँ आग्रह केलखिन।

शिक्षक गरीब झाक मनमे बिजलोका जकाँ तड़कलैन जे रोगीक रोगक इलाज केमहरसँ कएल जाए? ..जलेसर आ गरीब झाक तत्-मती देखि कमल नारायणजीक मनमे उठलैन जे केतौ जरूर नमहर खाधि अछि। विचारकेँ बदलैत कमल नारायणजी हँसैत बजला- “जिनगीक पहिल दिन एहेन आनन्दक अवसर भेटल!”

कहि चुप भऽ गेला। मनमे उठलैन जहिना घरमे आगि लगलापर आन्हरो भागए चाहैत, मुदा आँखि नै रहने ढिमका-ढिमकीमे ठेंसिया-ठेंसिया खसैत मुदा कोनो टंगटुट्टाकेँ कियो आभास पाबि जे जान बँचबए कहतै तँ ओ टंगटुट्टा यएह ने बाजत जे 'भाय केकरा के देखै छै जे तोरा हम देखबह कि तूँ हमरा। तोरा आँखि नै छह जे देखि कऽ चलबह आ हमरा टाँग नै अछि जे देखतो एको डेग चलब।'

कमल सदृश खिलैत कमलजीकेँ संतोखीदास कहलकैन- "भाय, जेतेकाल अहाँ स्टेजपर रहब ओतेकाल अहाँ राम, हनुमान आकि रावणक रूप बना रहब मुदा तेकर पछाइत जेते समय बँचत ओ तँ समाजेक भाए-भैयारी बनि रहब किने। बारह-तेरह बर्खक एकटा बेटा हमरो अछि। अहीठाम ऐछो। जाबे धरि ऐठाम अहाँ सभ रहब ताबे धरि ओ सेवामे लगल रहत।"

हँसैत कमल बजला- "सेवाक फल मेवा होइ छइ।"

'जे रोगीकेँ मन भावए से वैदा फरमाबए!' अपन नाओं सुनिते शम्भु फुरफुरा कऽ उठि कमलजीकेँ गोड़ लागि लेलकैन। मुदा जाबे कमलजी असिरवाद दैतएथिन तइसँ पहिनहि गरीबो, जलेसरो आ दयाकान्तोकेँ गोड़ लागि समाज दिस घुमि पिताकेँ गोड़ लगैत पाहि लगा सभकेँ गोड़ लागए लगल। मनमे बेहद खुशी रहबे करइ। ओहन खुशी जेहेन दुरगमनियाँ बहिन, पहिलुका समाजसँ आगू बढ़ैत नव समाज दिस डेग उठबैत अछि।

अखन धरि शम्भुकेँ असिरवाद दइक विचार कमलजी करिते रहैथ। कारणो भेल, जखन शम्भु गोड़ लगलकैन तखन कमल योगासनमे बैसले छला। जइसँ दहिना पएर पोन तर दबल आ बामा बाहर रहैन। तँए असिरवाद दइमे पहिल देरी भेलैन, दोसर देरी भेलैन जाबे असिरवाद देथिन-देथिन ताबे शम्भु तीनू गोरेकेँ गोड़ि लागि लेलकैन, जइसँ कमल असमंजसमे पड़ि गेला। स्कूल-कौलेजमे विद्यार्थीक प्रवेशक दिन जँ शिक्षकक बीच हुअए आ ओही दिन शिक्षक विद्यार्थीक बीच प्रवेश पर्व होइ जइ दिन सभ विद्यार्थी-शिक्षक रंगमंचक कलाकार जकाँ नव-नव चेहरा सजा, नव-नव कला देखबैत। जइसँ एक-कलाकारकेँ जहिना एक संगी भेटलापर नन्द रूप आनन्दक रूपमे बढ़ैत, तहिना ने ओहू पर्वमे हएत। ..सभकेँ तत्-मत् करैत देखि गरीब झा टपकला- "आइ शम्भु ओइ

सीमापर आबि अँटैक गेल जैठामसँ दिसा बदलैत अछि। बहुत पैघ आश समाजमे भेटल। मुदा सवुर कहाँ भेल। सवुर हएत तखन जखन भरि पोख काज अहाँ सभ लेब। शम्भुए किए, एहेन-एहेन शम्भु समाजक फुलवाड़ीमे छिड़ियाएल अछि।"

गरीब झाक विचार सुनि संतोखीदास बजला- "गरीब भाय, आन जे होथि, नै बुझल अछि मुदा अहाँ प्राइमरी शिक्षकसँ कलाकार भेल छी, तँए जहिना देवपूजन-ले फुलवाड़ीक फूल बर्जित नै अछि, पुस्तकालयक पुस्तक बर्जित नै अछि तहिना निरविकार भऽ अहू समाजक फुलवाड़ीमे घुमि-फिर अपन पूजाक फूल चुनि पूजा-पाठ करैत माने तामैत-कोरैत सेवामे लगा सकै छी।"

छठिक तेसरा दिन, अकासक चान अपन प्रवेश देखि मधुरिया मुस्की दइत। ठण्ढ-गर्मक सीमान जेहने मोहक होइत तेहने दुनू समाजक बीत मोहक वातावरण। एकक मनमे जे दस गोरे एकठाम बैस रामलीलाक आनन्द लेब, तँ दोसराक मनमे नव समाजक बीच जँ नव-कलाक प्रदर्शन नइ हएत तखन समाजकेँ जे भेटौन मुदा कलाकार तँ शंखे फुकैत रहि जेता! अपन सत्ताइसो मेड़ियाक सँग दू बजेमे माने बेरू-पहरमे टाएर-गाड़ीपर साज-बाज, पर्दा-पोस, बाँस-बेलन नेने सभ कियो पहुँचला। स्कूलक बगलक गाछीक जगह बूझले रहैन, एक्के-दुइये गौंआँ सेहो पहुँचए लगला। जाबे टाएरपर सँ समान उतारि परतीपर रखैथ ताबे लोको गोलिया गेल। देखलें गरीब झा। नजैर पड़िते संतोखीदास पुछलकैन-

"भाय, शम्भुकेँ डटि कऽ पहुँनाइ करौलिऐ?"

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा कहलकैन-

"एते दिन शम्भुक सँग रहितो नै परैख सकलौं जे शम्भु की चाहैए!"

संतोखीदास-

"मतलब?"

गरीब झा-

"यएह जे केकरो शुरूहेसँ बाजा दिस नजैर रहल, तँ केकरो नाच दिस, केकरो गान दिस। मुदा शम्भु तँ अद्भुत अछि जे बजो दिस ओहने झुकाउ देखै छिऐ आ आवाजक चर्चे की।"

संतोखी बजला- “आब तँ गप-सप्प होइते रहत। जखन आबि गेलौं तखन अँगस-मँगस नहियेँ हएब नीक। की विचार अछि?”

गरीब झा बजला-

“अखन धरिक यएह रहल जे आइ खुट्टा-खुट्टी गाड़ि लेब। काल्हि परदा-पोस लगा लीला शुरू कऽ देब।”

“हद करै छी गरीब भाय। अहाँ सभ खाली देखबैत रहियौ गौंआँ सभ एक्के घन्टामे सभटा तैयार कऽ देत। मुदा जखन गाम आबि गेलौं तखन एको दिन नागा करब समैयक सँग धुरतइ हएत।”

सभ कथुक जोगाड़ घन्टे भरिमे भऽ गेल। आइसँ रामलीला हएत ई समाचार जेना सबहक छाती धड़कबए लगल। जिनगी विषयक कथाक रंगमंच मास दिन धरि गौंआँ देखता। किएक ने खुशीक हिलकोर उठतैन। आरती चढ़ौआक बर्खा सेहो बरिसबे करत।

मास दिन शम्भु सँगे-सँग खटल। आइ समाप्त भऽ रहल अछि। काल्हि सभ कियो दोसर गाम चलि जेता। आड़िपर शम्भु ठाढ़ भेल सोचि रहल अछि। समाज बदैल कहाँ रहल अछि, बढ़ि कहाँ रहल अछि..!

संतोखीदासक मनमे उठैत रहैन जे छोटसँ पैघ दुनियाँमे प्रवेश केनिहारकेँ किछु कहब कठिन अछि। तहूमे आब तँ शम्भु सहजे नेनासँ चफलगर भेल।

जाइकाल कमलजीक नोर टघैर रहल छैन। वएह नोर जे सासुर जाइवालीक रहै छइ।

साल भरि बितैत-बितैत शम्भु रामलीलाक प्रमुख कलाकारक श्रेणीमे आबि गेल। ओना प्रमुखताक कारण उत्कृष्टता होइत मुदा शम्भुक प्रमुखताक कारण भेल बहुआयामी। जहिना अदराक पहिल बर्खामे ओहन किसानक मन अधिक छटपटाइत जेकरा एक सँग अनेको खेती करैक रहै छइ। फसल लगबैले मन छटपटाए लगै छै जे अगहनी धानोक बीआ आ चौरियो खेत अछि, गरमा धानक सेहो रंग-रंगक बीआ अछि, जे मौसमक हिसाबसँ नहि समैयक हिसाबसँ होइत अछि। जँ ओ बिआ समैपर नै उखारि लगौल जाएत तँ उपजा प्रभावित हएत। मुदा बर्खा चटकने तँ चौड़ीक खेतीए बुड़ि जाएत। मुदा शम्भुकेँ से नै भेल। ढोलक, हरमुनियाँ

बजबैसँ लऽ कऽ नचनाइ, पार्ट खेलनाइ तकमे शामिल भेल। जइसँ पार्टीक भीतर शम्भुक महत बढ़ि गेल। कोनो आदमीक अभिनयकलासँ लऽ कऽ वाद्यकला धरिक अनुपस्थितिक पूर्ति शम्भु करए लगल।

कमलजीक रामलीला पाटीमे शम्भु सात बर्ख रहल। ओना अधिक उमेर भेने कमल नरायणक पार्टी खसा लेलैन। गामोक स्थितिमे ठनका खसलैन। सन्मुख कोसीक मुँह पच्छिम-मुहेँ जोर केलक। जइसँ गामक छिड़ियाएल बास समटा कऽ घोदिया गेल, खेतबलाक स्थिति बिगड़ए लगलैन। केतेको परिवार गाम छोड़ि परदेश रहए लगला।

बीस बर्खक शम्भु अपन ओकाइत माने लम्बाई-चौड़ाइ बुझए लगल। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा सभ गुण होइतो शम्भुक मन उपशास्त्रीय संगीत दिस अधिक झूकल। जेहने स्वर तेहने कला। सामन्त सबहक टुटैत स्थिति शास्त्रीय संगीतकेँ प्रभावित केलक। ओना प्रभावित उपशास्त्रीय संगीत सेहो भेल मुदा कम। ..दरबारीदासक लाट पकैड़ शम्भु राजक गबैया बनि विभूषित भऽ गेला।

हजारो लोकक भीड़मे जहिना कियो अपन प्रेमी देखि सभ किछु बिसैर जाइत तहिना संगीत प्रेमी शम्भुदास अपन घर-परिवार बिसैर बिआह नै केलाह। ढहैत बेवस्थाक तरमे शम्भुओदास पड़ि गेला।

बेवस्थाक बेवस्था चलैत मिथिलाक धरतीए जकाँ मिथिलाक कला सेहो राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया-बितिया कऽ टुटि-फाटि गेल।



शब्द संख्या: 9674

फाँसी

कािल्ह बारह बजे बलदेवकेँ फाँसी हएत, रेडियो-अखबार कान-कान जना देलक अछि। जहिना बलदेव बुझैत तहिना जहलक अधिकारियो। जहिना बलदेवक परिवार बुझैत तहिना सर-समाज, दोस-महिम सेहो। सबहक मन बारह बजेपर अँटकल। वएह बारह बजे दिन वा राति अपन प्रखर रूपमे दिसा दिस मैदानक रस्ता धड़ैए।

जहलक एक नम्बर सेल घर। जे घर ओइ अपराधीकेँ ओइ बीच भेटैए जखन न्यायालयसँ फाँसीक तिथि निर्धारित होइत अछि। ऐ सेलक बुनाबटो आन सेलो आ वार्डोसँ भिन्न अछि। ओना सेलक बुनाबट विचित्र अछि मुदा आनसँ अलग तँ अछिए। कोठरियेक आँट-पेटक कोठरीनुमा घर अछि। ओना, एक कोठरी ओहन होइत जे नमहर घरमे बनैत आ एक कोठरी ओहन होइत जे घरे कहबैत। एक नम्बर सेलो तहिना बनल अछि। चिमनीक एक नम्बर ईंटा, क्यूल-लक्खीसरायक बीचक सोन नदीक पथराएल बाउल, दू-एक–बाउल-सिमटी–क जोगसँ देबाल बनल अछि। सात स्क्वाइर फुटक घर जे घरक कोठरियोसँ हीने अछि। पोने दू फुट आगूक दरबज्जा, खिड़की दरबज्जा नहि जे भीतर-बाहर अबैत-जाइत अछि। लोहाक बनल केबाड़ लगल अछि। शेष कोनो देबालमे ने खिड़की-खोलिया अछि आ ने पूब-पच्छिम दिसा देखबैक कोनो दोसर साधन। एक तँ ओहुना जैठाम सभ किछु–दिसा-बोधक लेल रहैए तहूठाम दिसांश लगि जाइ छै–जइसँ पूबकेँ पच्छिम पच्छिमकेँ पूब बुझए लगैए।

जिनगीक पूर्ण लीला बलदेवकेँ ओइ कोठरीनुमा घरमे आइ पनरह दिनसँ होइत अछि। ओना, तइसँ पहिने सात नम्बर सेलमे तीन सालसँ रहैत आबि रहल अछि मुदा, ओना एक नम्बर सेलमे एलापर बलदेवकेँ एतेक सुविधा जरूर भेट गेल छेलै जे पहिनेसँ नीक भोजन, नीक ओढ़ना-

बिछौना छेलइ। भलेँ घरमे नहियेँ बिजलीक तार रहै आ ने बौल लागल छेलै मुदा दरबज्जा सोझे एकटा एहेन बौल टाँगल छेलै जइसँ कोठरीक भीतरो किछु इजोत पहुँचइ। कोठरीक बाहर स्पेशल सिपाहीक बेवस्था सेहो भऽ गेलइ।

बारह बजे रातिक घन्टी टावरक मुड़ेरापर बजल। राति-दिनक पाशा बदलैक समय भऽ गेल। जैठाम भूत-वर्तमानमे आ वर्तमान भविसमे बदलैए, सएह मुहूर्त। जेतए राति दिनक बाट पकड़त। मुदा दूत-भूत एतेक प्रबल जे आरो बेसी उग्र बनए लगल। जहिना रातिक जन्मल बच्चा दिनेक होइत तहिना बलदेवक राति सेहो दिने भऽ गेलइ। राति-दिन भऽ गेलै आकि निनियेँ देवी विध्नवादिनीक सँग डरे पड़ा गेलखिन से नइ कहि।

..ओछाइनपर पड़ल बलदेव उठि कऽ बैस कोठरीक चारू देबाल दिस देखए लगल। अन्हारमे सभ हेराएल बुझि पड़लै। किएक तँ बाहरक बिजलीक इजोत सेहो अन्हारक चद्दैर ओढ़ि ओहन भऽ गेल जे अपनो भरि नै देखि पड़ैत। अन्तमे बलदेव अपन देह दिस तकलक, हाथ-हाथ नै सुझैत। तखन अजमा कऽ घरक मुँह लग ससैर कऽ पहुँचल। हाथ बढ़ा देखलक तँ बुझि पड़लै जे यएह घरक मुँह छी। घरक मुँह देखि बलदेवक मनमे बिसवास जगलै जे ऐठामसँ अन्हार-इजोतक सभ किछु देखब। हिया कऽ बिजली खुट्टामे लटकल बौलपर नजैर देलक। मरियाएल इजोत, तैपर असंख्य मच्छर-माछी अपन जान गमबैले तैयार भऽ नाचि रहल अछि। खुट्टापर गिरगीटक झुन्ड, मुँह बाबि खाइले तैयार भऽ आसन लगौने। निच्चाँमे बेंगक जेर कुदैत। तैबीच मच्छरक जेर गीत गबैत फाटक टपि भीतर पहुँचैत। मुदा बलदेवक धियान मच्छरपर नै गेल। जहिना शरीरमे अनेको रोग रहलापर बड़का रोग छोटकाकेँ चापि रखैत, तहिना बलदेव बाहरक मच्छरक भोगकेँ दाबि देलक। केना नै दाबैत, जैठाम जिनगीक खूनक कोनो महत नहि तैठाम मच्छर केते खून पीबे करत। मुदा तहूसँ बेसी बलदेवक मनमे जागि गेल जे जखन बारह बजे अन्ते भऽ रहल छी, तैबीच जँ कनियोँ उपकार दोसरक भऽ जाइ छै तँ ओहो धर्मे छी किने।

..तखने पएर दाबि सिपाहीक झुन्ड सेलक चारूकात चक्कर काटए लगल। अन्हारमे सभ हेराएल। पैरक धमकसँ बलदेव बुझि गेल। जहिना गाए-महींस मनुक्खो आ कुत्तो-बिलाइक चालि अन्हारोमे परैख लैत तहिना

बलदेवो परेखलक। मुदा सभ चुप्प। बलदेवक मनमे उठलै- जखन कि बारह बजेमे फाँसीए-पर चढ़ब तखन किए एते ओगरबाहिक जरूरत छइ? एक तँ ओहिना बड़का छहर-देबालीक बीच जेल बनल अछि! तैबीच वार्ड-सेल बनल छै, तैबीच एते ओगरबाहिक कोन खगता? मुदा लगले विचार बदैल गेलइ। वार्ड सबहक कैदी तँ अबैत-जाइत रहैए। सभ दिन दू-चारिगो एबो करैए आ निकलबो करैए। मुदा हम तँ आब निकैल नै पएब। निकलब नइ, आकि जिनगीए अन्त भऽ रहल अछि? आँखि उठा बलदेव आगू तकलक तँ बुझि पड़लै जे साल-महिनाक कोन गप जे मात्र किछु घन्टा-ले छी। जइ दिन फाँसीक आदेश न्यायालयसँ भेल ओही दिन किए ने फाँसियो भऽ गेल। अनेरे कोन सोग-सन्ताप देखै-भोगैले पनरह दिन जीआ रखने अछि। मन शान्त केलक। शान्त होइते, जहिना पोखैरक अगम पानिकेँ पुर्बा-पछबा हवा डोलबैत रहैए तहिना बलदेवक डोलैत मनमे उठलै- फाँसी किए हएत? प्रश्नपर नजैर अँटैकते उठलै जे फाँसीपर सपूत-कपूत दुनू चढ़ैए। फेर उठलै जे तइ सपूत-कपूतमे हम की छी?

..अन्हड़ उठैसँ पहिने जहिना हवा खसि पड़ैए, वायुमण्डल शान्त भऽ जाइत अछि तहिना बलदेवक मन शान्त भऽ गेल। कोनो तरहक तरंग नहि। मुदा लगले मनमे उठलै जे जिनगीक अन्तिम सीमानपर पहुँच गेल छी। जहिना एक गामक सीमान टपिते दोसर गाम आबि जाइत अछि तहिना जीवन-लोकसँ मृत्यु-लोक चलि जाएब। मुदा एते तँ हेबे करत जे अखन ठेकानल जिनगी अछि मुदा पछाइत बेठेकानलमे पहुँच जाएब...। फेर उठलै- जीवनलोक तँ खाली मृत्यु लोक नइ छी। जीवनो तँ लोक छी। जहिना कोनो जंगलसँ पड़ाएल जानवर दोसर जंगलक सीमानपर पहुँचते चारूकात नजैर उठा कऽ देखैत जे रहै-जोकर अछि वा नहि, तहिना जीवन-मृत्युक सीमानपर बलदेवक मन अँटैक गेल। धरतीपर जहिना एक-दिसासँ दोसर दिस बहैत धार रस्ताकेँ बाधित कऽ दैत तहिना बलदेवकेँ जीवन धार बाधित कऽ देलक।

..आगू टपैक आशा नै देखि बलदेव बामा-दहिना दिसा पकड़ैक विचार केलक। एक दिस पहाड़सँ निकलैत धार धरती टपि समुद्रमे मिलैत तँ दोसर दिस धरती टपि समुद्रमे मिलैत। आगू मात्र किछु घन्टा शेष अछि मुदा पाछू सौंसे जिनगी पड़ल अछि। की एक बेरक फाँसी फाँसी छी आकि

फाँस चढ़ल जिनगीक फँसरी फाँसी छी? बलदेवक मन ठमैक गेलइ। मुदा लगले मनमे उठलै जे गुमसुम भऽ समय काटब नीक नहि। केतेकाल पहिनहि बारह बजेक घन्टी बजल। जहिना धरतीपर आएल बच्चा आस्ते-आस्ते सकताए लगैत तहिना बलदेवक मन सेहो सकताए लगलै। मोन पड़लै पनरह दिन पहिलुका फाँसीक सजा। मनमे खौंझ उठलै- जखन फाँसीक आदेश भेल! तखन फेर पनरह दिन जहल किए भेल? कोन अपराधक फल भेटल? जँ ओही दिन फाँसी भऽ जाइत तँ पनरह दिन जे सोग-सन्ताप भेल से तँ नइ होइत। तेतबे नहि, अपनो ऊपर अनेरे भार किए बढ़ौलक?

..फेर मनमे उठलै जे अनेरे ओझराइ छी। मन शान्त केलक। शान्त होइते मनमे उपकलै, सपूत बनि दुनियाँ छोड़ब आकि कपूत बनि? कियो हिलसैत-पुलसैत दुनियाँ छोड़ैए आ कियो बिलखैत-डुमैत दुनियाँ छोड़ैए। मुदा जे हिलसैत-फुलसैत छोड़ैए ओ छोड़ैत कहाँ अछि? ओ तँ जीवात्माकेँ एहेन चुहैट कऽ पकड़ैए जे छोड़ौनौं नै छुटैए। मुदा हम तँ से नइ छी। ..फेर मन घुमलै। दुनियाँ बड़ीटा अछि.., बड़ छोट अछि...। मुदा बड़कीटा ओकरा-ले छै जे बरी पाबए चाहैए। मुदा बरी तँ ने भोजेक अन्तिम पराव छी आ ने घरेक। भोजोक मध्य छी आ घरोक मध्य। तखन किए ओकरा पाबए चाहैए।

..बलदेवक मन फेर ठमकल। अनेरे अछाहे कुकुर भूकब नीक नहि। अपनो तँ संसार अछि। जइमे अकास-पताल, चान-सुरूज, नदी-सरोवर सभ किछु अछि। तखन अपन छोड़ि दोसराक देखब अपनासँ दूर हएब हएत किने। अपन कर्म आ अपन धर्मक मर्म बुझब उचित हएत। जाबे से बुझि दुनियाँक रंगमंचमे नै उतरब ताबे कौआ कान नेने जाइए, तइ पाछू दौगब हएत..! अपन रंगमंच आ अपन अभिनय लग अबिते बलदेवक मन ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ होइते अनासुरती मनमे उठलै। अभिनाइयो तँ देखनिहारो-ले आ संसारो-ले रंग-बिरंगक, केतेक स्तरक होइत अछि। मुदा कहल तँ जाइ छै- अभिनाइये। कियो लीला रचि अभिनय करैए तँ कियो गुनगुनाइत अभिनय करैए। कियो मूक भऽ करैए तँ कियो प्रेमावेशमे करैए। केना एकरा बिलगाएब? एक दिस चित्र विचित्र बनल अछि तँ दोसर दिस कुचित्र सेहो बनल अछि...।

बलदेवक ओझराइत मन झमान भऽ झमा उठलै। अनेरे ओझरेने समय ससैर जाएत। गनल कुटिया नापल झोर जकाँ समय बँचल अछि, तेकरा जँ ओझरौठेमे राखब ओ नीक नहि। बारह बजेक घन्टी केतेखान पहिनहि बाजि चुकल अछि। हाथमे जँ घड़ी रहैत तँ ठीक-ठीक समैयोक बोध होइत, सेहो नहियेँ अछि। जइ दिन जहलमे प्रवेश केलौं तही दिन जहलक मुँहपर जमा कऽ लेलक। जइ दिन निकलब तइ दिन देत। मुदा निकलब कहिया? आइ तँ फाँसीए-पर लटैक जिनगीक विसर्जन करब तखन घड़ी केना लेब आ पहिर कऽ समय केना बुझब? खाएर.., जइ गाममे मुर्गी नै रहै छै तइ गाममे भोर नै होइ छइ? पाँच-दस मिनट आगू-पाछू, अनुमान तँ कइये सकै छी। मुदा काजक सँग जे समय चलैए ओकर अनुभव आ बिनु काजक अनुभवोमे तँ अन्तर होइते अछि। काजक दौड़क अनुभव बेसी बढ़ियाँ होइ छइ। किएक तँ काजक सँग समय सटि चलैए। मुदा हमरा तँ सेहो ने अछि! बस दू बेर खाइ छी, ढेंग जकाँ ओंघराएल पड़ल रहै छी। कखन जगल रहै छी आकि सुतल रहै छी, से आनक कोन बात जे अपनो नै बुझि पबै छी! पछतेनौं तँ किछु ने भेटत।

..फेर मनमे उठलै- “फाँसी किए?”

किछु समय गुम्म रहला पछाइत अनासुरती बलदेवक मनमे उठलै जँ भक्ति-भावसँ समय कटने रहितौं तँ हँसी-खुशीसँ चढ़ितौं, से नहि केलौं तँए कुहैर-कलैप चढ़ब! जहिना शक्तिक स्रोत ज्ञान छी तहिना ने भक्तिक स्रोत श्रमो छी। फेर मन ठमकलै। जँ भक्तिक स्रोत श्रम छी तँ हमहूँ तँ श्रमिक छीहे। जँ से नइ रहितौं तँ एत्ते खेल केना केलौं?

..अचताइत-पचताइत बलदेवक मुहसँ निकललै-

“से तँ जरूर केलौं।”

मनमे उठलै, एक पसीना पत्थर तोड़ैमे चुबैए, दोसर पत्थर बनबैमे चुबैए। हँ से तँ दुनूमे चुबैए। मुदा की दुनूक मिठास एक्के रंग छइ? से तँ नइ छइ। तखन श्रम-सेवा केकरा कहबै? ..फेर बलदेव ठमैक कऽ नजैर उठा-उठा चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। मुदा अन्हारमे किछु देखबे ने करए। मनमे उठलै, अनेरे श्रमक पाछू वौआइ छी। गेल समय फेर नै लौटए। आब तँ जिनगीक अन्तिम खाढ़ीपर चलि एलौं। ने श्रमिक छी आ

ने श्रमक सिरजन कर्ता। अनेरे अनका पाछू वौआ रहल छी। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै आ अपन-अपन जगह छै, जे सदैत समैयो आ प्रकृतोक प्रभावसँ प्रभावित होइत रहै छइ। तँए अपन बात जेना लोक अपने बुझैए तेना आन थोड़े बुझत।

..चारू दिससँ घुमैत-फिड़ैत बलदेवक मन अपना लग एलइ। मनमे खौंझ उठलै। यएह मन छी जेकर किरदानीसँ कियो भगवान बनि जाइत अछि आ कियो हत्यारा बनि दुनियाँक सोझहामे फाँसीपर लटैक जाइए! मुदा कहबै केकरा आ सुनत के? मन ठमकलै। हत्यारा के, हत्या की आ के पैदा करैए? जहिना कम माछी-मच्छर रहने खेबोकाल आ सुतबोकाल ओते परेशानी नै होइत जेते अधिक रहने होइत। बलदेवक मन फेर ओझरा गेलइ। ओझरी छुटिते अपनापर ग्लानि हुअ लगलै। हमहूँ तँ दुनियाँक चुनल अपराधीमे छी! जिनगी भरि अपनेमे बेहाल रहलौं मुदा बेहाले जे रहि गेलौं से कहाँ बुझि पेलौं। जहिना धरतीकेँ बेहाल भेने सृजन शक्ति कमि जाइ छै तहिना ने हमरो भेल। मन उफैन गेलइ। चिचियाइत बाजल-

“हम अपराधी छी, अपराध केने छी। डकैतीक सँग हत्या केने छी। अखने हमरा फाँसी हुअए?”

पितोक मास्चर्ज ओइ बेटासँ, ओही दिनसँ कमए लगै छैन जइ दिन सुपात्रसँ कुपात्र दिस जाइत देखै छैथ, तहिना बलदेवक कलपैत आत्मा मनसँ हटए लगल, अनधुन मुँह फटकए लगल-

“अपराधी छी, अपराध केलौं। एक अपराध नहि, अनेको, एक दिन नहि, जिनगियो भरि! बहुत विलैम कऽ फाँसी भऽ रहल अछि। बहुत पहिनहि भऽ जाइक छल। मुदा भेल किए नहि?

बलदेवक मुँहमे जेना एका-एक पर्दा लगलै तहिना हुमड़ैत मन पाछू दिस ससरलै। अन्तिम हत्या आ डकैतीक फल फाँसी छी, मुदा आरो जे जिनगी भरि केलौं, तेकर की भेल?

मध्यमासक स्नान जहिना आन मासक स्नानसँ अधिक सुन्दर आ अधिक शीतल होइत तहिना जिनगीक अपराधक बीच बलदेवक मन अँटैक गेल। एक दिस जिनगी आ दोसर दिस अपराध, शीतल भेल शान्त मनमे उठलै, की हमर जन्म अपराधीए बनैले भेल छल जे अपराधीक

जिनगी बितेलौं? मुदा बुझियो कहाँ पेलौं जे अपराध करै छी, अपराधी बनै छी? ..ओझराइत मनकेँ सोझरबैत बलदेवकेँ जिनगीक एक-एक दिन आ एक-एक घटना मोन पड़ए लगल। मुहसँ निकललै-

"अपन जिनगीक बात जेते अपना मनमे अछि ओते दोसराकेँ केना हेतइ? खाली हत्ये-लूटटा तँ नइ केने छी, माए-बहिनक सम्बन्ध सेहो तोड़ने छी!"

मन कलैप कऽ बजलै-

"एक बेर नहि, हजार बेर फाँसी हेबा चाही।"

बलदेवक मन बेकल हुअ लगलै, केकरा-ले केलौं? ई बात मनमे उठिते धियान परिवार दिस बढ़लै। अन्तिम दिन पत्नी आ बेटाक दर्शन हएत। ओ सभ बेचैनीसँ भेँट करए जरूर औत। मुदा की जहिना परिवारमे भेँट होइ छल तहिना हएत? से केना हएत? सिपाहीक घेराबन्दीमे हम रहब आ ओ सभ हटि कऽ कातमे ठाढ़ रहत।

..मन घुमलै। अनेरे किए कियो भेँट करए औत? कोन मुँह देखत आ कोन देखौत। तइसँ नीक जे भने हमहूँ हेराएल छी आ ओहो सभ हेराएले रहए। दुनियाँक सभ चिन्हतै-जनतै। जँ समाजमे लोक आँगुर देखौतै तँ ओइ समाजकेँ छोड़ि दोसर समाजमे चलि जाएत। जखने कियो एक समाजसँ दोसर समाजमे जाइए तखने पैछला समाजक बान्ह टुटि जाइ छइ। बान्हक भीतर बनल समाज अपन हितक बात सौचैए। मुदा समाज तँ समुद्र छी, जइमे घोंघा-घोंघीसँ लऽ कऽ गोहि-गमार तक अछि।

..बलदेवक मन ठमकए लगल। जहिना जन्म-जन्मान्तरसँ वा कुरीति-कुसमय पाबि बाँसक छाँहमे जन्मल लतामक गाछ सेहो समय पाबि कलैश जाइए तहिना बलदेवक मन कलशल। अबोध बच्चाक हाथसँ गिरल ऐना, माए-बापक दुख जकाँ नहि, मुदा तैयो टुकड़ी बीछि-बीछि जोड़ैक कोशिश करैए तहिना बलदेवक कलशल मनमे उपकलै। तीन बर्ख जहल एला भऽ गेल। राता-राती घरसँ पकड़ा बन्दूकक हाथे जहल आएल रही। नव-नव लोक, नव-नव जगहसँ भेँट भेल...।

जहिना देशो आ मिथिलांचलोक वासी दुनियाँक कोण-कोणक बीच बसि अपन पूर्व परिवारक स्मरण करै छैथ तहिना बलदेवक मनमे परिवार

सेहो आएल। मुदा लगले जहलक परिवार अगुआ गेलइ। एक-फाटक टपि दोसरमे घेराएल रही। तलाशीक सँग सभ किछु घेरा गेल। बाहरसँ औत नहि, अपने घेराइये गेलौं। मुदा तैयो नव-नव चेहरासँ भेँट भेल। भीतर अबिते–वार्डमे घुस्सा-मुक्काक सलामी भेल। जहिना अखड़ाहापर उतरैत खलीफाकेँ पानि उतरए लगै छै तहिना उतरल। जिनगीक पहिल बेर जहल देखलौं। स्वागतक पछाइत मेट लग पहुँचौल गेलौं। अखड़ाहा बदलने खलीफाक पानियोँ बदैल जाइ छइ। मुदा...। मेटक रजिष्टरमे नाओं चढ़िते ढेर हुकुम एक सँग उठल। झाड़ू लगबैक ड्यूटी, पैखानामे पानि पहुँचाबैक ड्यूटी इत्यादि-इत्यादि। काजक भारसँ मन दबाएल जा रहल छल कि मसनदपर पसरल मेटक हुकुम भेल-

“एमहर आ, पहिने जाँत तखन दोसर काज हेतउ।”

अवग्रहमे फँसल मन हल्लुक भेल। मनमे खुशी उपकल जे कनियोँ-कनियोँ कान अँइठैत तँ काने उखैड़ जइताए! जान बँचल तँ लाख उपाय। एक करोट घुमैत मेटक मैनजन कहलक-

“पहिल दिन छिऔ, आइ तोरा खेनाइ नै भेटतौ।”

जहिना मुर्दापर अस्सी मनसँ नब्बे मन जारैन चढ़ि जाइ छै तहिना चढ़ि गेल। असबिसो नै कऽ सकलौं। मुदा तैयो सवुर भेल जे नै खाइले देत, सुतैक तँ जगह भेट गेल किने। तैबीच मैनजन हुकुम फेकलक-

“कोन केसमे एले हेन?”

केसक नाओं सूनि मन दलदल भऽ गेल। जहिना सोग-पीड़ामे नोर बहा केकरो सान्त्वना दैतकाल होइत, तहिना। जहलसँ निकलैक आशाक अँकुर जागल। हलैस कऽ बजलौं- “सरकार, डकैती आ खून सँगे अछि।”

‘डकैतीक सँग’ खून सूनि मेटक मन ठमकल। अधिक दिनक संगी हएत। तँए दोस्तीए करब नीक। पड़ले-पड़ल हुकुम चलौलक-

“नवका कैदीकेँ खैयो आ सुतैयो-ले दिहक।”

जहिना जिनगीक सुख, खाएब-सुतबमे अबै छै तहिना सुतबक आश देखि हमरो मनमे खुशी उपकल। खुशी उपैकते मन वौआए लगल। तही बीच मेटक मुहसँ फुटलै-

"तेलक शीशी छेबे करौ, काल्हिसँ गोदामे सँ लऽ लऽ अनिहेँ।"

'गोदाम'क नाओं सुनिते वार्डमे गल-गूल शुरू भेल।

"नवका कैदीकेँ गोदाम केना जाए देब!"

"हँ! ई अन्याय छी।"

तैबीच एक कैदी ठीकेदारकेँ पुछलकै-

"की बात छिऐ हौ ठीकेदार भैया! एना किए हरबिर्ड़ो केने छह?"

ठीकेदार कहलकै-

"तूँ अखन तड़ी-घटी नै बुझबिही।"

"से किए हौ भैया, सुनने लोक सुनबो करैए आ नहियोँ सुनैए। बुझौने लोक बुझबो करैए आ नहियोँ बुझैए। पहिने बजबहक तब ने?"

"रौ बुड़िबक, सभ गप सभठीम बाजब नीक थोड़े होइ छइ। नीको अधला भऽ जाइ छै आ अधलो नीक भऽ जाइ छइ।"

"एक बेर अजमा कऽ देखहक। नरकोमे ठेलम-ठेल करै छह। बहरामे जखन लोक किछु करैए तँ भीतर अबैए, जहल अबैए। मुदा ऐठामसँ केतए जाएत। बाजह, तोरा की बुझि पड़ै छह जे हम ओहिना आएल छी। आकि किछु कए कऽ आएल छी।"

ठीकेदारक बढ़ैत संगी देखि कठहँसी हँसि मेट बाजल- "की रे ठीकेदरबा, कथीक बमकी धेने छौ। सुन...।"

एक दिस ठीकेदारकेँ अपन घटैत आमदनी मनमे नचैत तँ दोसर दिस मेटक आदेश। घुसैक कऽ ठीकेदार लगमे आबि फुसफुसा कऽ बाजल- "मेट भैया, अहाँसँ कि कोनो बात छिपल रहैए। बुझिते छिऐ जे दू पाइ बँचा कऽ गाम पठबै छी।"

ठीकेदारक बातसँ मेटक मनक आगि ठंढेलै नहि, बल्कि हवाक लहकी जकाँ लगलै। मनमे उठलै दस लंठ तखन ने महंथ, जँ से नहि, तँ असगर बरस्पैतो फुइस। जहिना गुलाबी लाल आल-अड़हुल बनि जाइत, रंग बदैल अपराजित उज्जर-कारी बनि जाइत, दिन-रातिक खेलमे पूर्णिमा अमावस्या आ अमावस्या पूनो बनि जाइत तहिना बलदेवक मनमे जिनगीक जुआरि उठए लगलै। मुदा बिनु जारैनक आगि जहिना, पियासल

बिनु पानि जहिना, खेतिहर बिनु खेत जहिना शक्ति रहितो हीनशक्तिका बनि जाइत अछि तहिना जिनगीकेँ सुता कऽ राखब छी। मुदा प्रश्नो तँ अजनव अछि। नीक भोजन आ नीक नीन इन्द्रासनक मुख्य द्वार छी, तखन जिनगी..?

जिनगीक आवश्यक तत्त्वमे नीनो तँ अनिवार्य अछि। तखन अधला केना भेल? मुदा जखन दस कोठरी बहारैक, साफ करैक भार रहत तखन एक्के कोठरी बहारबो तँ उचित नहियेँ...। मेटक मन ठमकल। ने आगूक बाट देखै आ ने पाछू घुमि ताकब नीक बुझइ। मनमे फेर उठलै, जहिना कियो जोग क्रियामे जोगी बनि जोगिया जाइत अछि आ कियो भोगी बनि भोगिया जाइत अछि तहिना तँ कियो काजोमे कजिया जाइए। मुदा कज्जी भेने तँ अबाहो भइये जाइए। ओना, जैठाम निरोगक बलि प्रदान होइए तैठाम अबाहक पूछे केतेक?

भाव-विह्वल मेट सामंजस करैत बाजल-

“बौआ ठीकेदार, ई दुनियाँक खेल छी। अपना सभ जहलमे तीत-मीठ करै छी आ कियो खुलल धरती-अकासक बीच खुलि कऽ खेलाइये। तैठाम तोहीं कहह जे की नीक हेतइ?”

जहिना चोरोक भरमार अछि, किसिम-किसिमक चोर अछि तहिना ने एकरंगाहो चोरक भरमार अछि। अमती काँटमे ओझराएल जकाँ ठीकेदार ओझरा गेल। जँ चोर चोरि करि कऽ आनए आ जरूरतमन्द लोककेँ दऽ दइ, तखन ओकरा की कहब? चोरि तँ ओ ने होइत जे चुपचाप आनि चुपचाप रही। जइसँ कियो बुझबो ने करत आ तरे-तर मखड़ैत रहब। ठीकेदारकेँ गुम देखि मेट पुछलकै- “ठीकेदार, गुम किए छह? तोरेपर छोड़ि देलियह जे जे तूँ कहबह सएह करब। जाधैर प्रेम, प्रेमसँ, आत्मा, आत्मासँ आ मन, मनसँ मिलि कऽ नै चलत ताधैर भरि मन सिनेह केतए सिंगार करत?”

जवाबक तगेदा सुनि ठीकेदारक मनकेँ नै रहल गेलै, बाजल-

“मेट भाय, जखन किलो-किलो तेल अहाँकेँ पहुँचैबते छी, तखन नवका कैदीकेँ किए गोदाम जाइले कहलिऐ?”

“बौआ, मालीमे तेल हौंथरैत देखलिऐ, तँए बजा गेल।”

अपन बढ़ैत पक्ष देखि ठीकेदारक मनमे खुशी पनपलै। खुशियाइत बाजल-

“जे आदमी आइए जहल आएल अछि ओकरा सोझे गोदाम पठाएब नीक नहि। चोर अछि आकि छुलाह अछि से अखन लगले केना बुझि जेबइ? जखन हमरे हाथमे गोदाम अछि तखन अहाँकेँ अभाव नै हएत, सएह ने?”

ठीकेदारक बात सुनिते मेटक मन तीआइरमे फँसल माछ जकाँ ओझरा गेल। चोर तँ चोर भेल मुदा छुलाह की भेल? मुदा मेट भऽ कऽ पुछनाइयो नीक नहि। जेकरे हाथ सभ किछु, सएह नै बुझतै। मेटक मन घुरिआए लगलै। एते दिनसँ जहलमे छी, ठीकेदारक हिसाबे छुलाहोक संख्या कम नै अछि, मुदा अपने नै बुझि पेलौं से केहेन भेल?

शब्दक मोड़ बदलैत मेट बाजल-

“केते रंगक छुलाह जहलमे हएत, ठीकेदार?”

जहिना नारद धरतीक रिपोर्ट अकासमे करैत तहिना ठीकेदार अपनाकेँ महसूस करैत बाजल-

“भाय साहैब, तेहेन घुरछी लगल सवाल अछि जे औगताइमे छुटि जाएत, तँए बिहिया कऽ देखए पड़त। पान-सात दिनमे पूरा-पूरी कहि देब।”

बलदेवक मनमे जहलक पहिल दिन नाचए लगलै। पुन: मनमे उठलै, मात्र किछु घन्टा-ले दुनियाँमे छी, तखन एक्के दिनक काजमे घेराएल रहब नीक नहि। मुदा कहबो केकरा करबै आ सुनबो के करत...।

आगू बढ़िते मनमे उठलै, जिनगीमे जे किछु जे करैए ओ आन देखौ, बुझौ आकि नै देखौ-बुझौ; मुदा केनिहार तँ जरूर देखबो करैए आ बुझबो करैए। मनमे ग्लानि उठए लगलै। जहिना बर्खाक बहैत बूनक वेग, घेरामे घेरा जमा हुअ लगैए तहिना जिनगीक चलैत चक्रक चालि बलदेवक मनमे समटाए लगलै। केते भारी अपराधी छी जे धरतीक भार बनि गेल छी, जँ हमरा सन अपराधीकेँ फाँसी नै होइ, सेहो अनुचित हएत।

..मन असथिर भऽ गेलइ। मनुक्खे ने मानवो आ दानवो बनैए।

दुनियाँक ऐ रंगमंचपर कियो वीर बनि तँ कियो कायर बनि पार्ट अदा करैए।

..मन ठमकलै। पुन: उठलै, जइ धरतीक भार उठबए आएल छेलौं ओइ धरतीक भार बनि गेलौं! एना किए भेल? की जिनगी भरि हाथ-पएर मारि रहलौं, सेहो तँ नइ अछि। हाथ-पएर चलबैत आएल छी। तखन भार किए बनि गेलौं? मन अँटैक गेलइ। आइ जरूर बुझि पड़ैए जे जिनगी भरि विपरीत, बेपिरित दिसा चलि कऽ कुमार्ग पकैड़ लेलौं। मुदा से ओइ दिन कहाँ बुझलिऐ जे कुमार्ग छी आकि सुमार्ग? काजोमे केतौ बाधा कहाँ उपस्थित भेल? जहिना धारक धारा सिरासँ भठ्ठा दिस धड़धड़ाइत चलैए मुदा भठ्ठार्कें सिरा दिस ससरैमे सामना करए पड़ै छइ। केना पानियेँ पानिकेँ रोकैत रहैए। मुदा बीचमे एकटा तँ होइ छै सिरोक पानि आ भठ्ठोक पानि एक-दोसरसँ रोकाइ छै, जइसँ ठाढ़ हुअ लगै छइ। आ ताधैर ठाढ़ होइत रहै छै जाधैर धारसँ ऊपर उठि धरतीपर नै छिड़ियाए लगैए। मुदा धरतियोपर तँ दिसा अवरूद्ध करिते अछि। आइ धरि जे नै बुझि सकलौं ओ अपने केना बुझि पएब? मुदा नहि, जिनगीक अन्तिम छोरपर भलेँ सभ बात नै बुझि सकिऐ, मुदा किछु नव तँ जरूर बुझि पाबि रहल छी। जँ से नहि तँ कहियो किए नै बुझि पेलौं जे फाँसी हएत? हमहीं नहि, बहुतो एहने वृत्ति करैए मुदा सभकेँ फाँसीए कहाँ होइ छइ? जैठाम पुरजा-पुरजी मनुक्खक अंग बनल अछि, सभ अंगमे गुण-दोष छै, तैठाम केना जोड़ि कऽ चलौल जा सकैए। समय पाबि कियो दौड़ए लगै छै आ कुसमय पाबि थकथका जाइत अछि। तैठाम सौंस मनुक्ख बनब धिया-पुताक खेलौना नइ छी। समैयक अनुकूल बनए पड़ै छै आ बनबए पड़ै छै, से नहि तँ रग्गड़मे लोक रगड़ाए किए जाइत अछि।

बिसैर गेल बलदेव बारह बजेक फाँसी। मन आगू दिस बढ़लै। जैठाम अधिकांश फूल ओहन अछि जे अनेको रंगक होइए। गन्ध, रूप आ आकार एक समान रहितो एक-दोसराक अनुकूलो आ प्रतिकूलो अछि। तहिना गुलाबी आ लाल आलो-लाल आ गाढ़ो लाल बनैए तहिना तँ अपराजित कारियो बनैए आ उज्जरो। आ जँ उजरोपर कारीए रंग चढ़ि जाए, जेना एक-दोसरपर चढ़ैए। भलेँ थलकमल उज्जरसँ लाल भऽ जाए मुदा सभ तँ थलकमले नै छी।

जहिना फुलवाड़ी, फलवाड़ी वा वँसवाड़ी टहलला पछाइत छाहैरमे बैसैक मन होइत तहिना बलदेवकेँ सेहो भेल। दुनियाँक दृश्य देखि मन हरियाए लगलै। ऐठाम के देत? केकरासँ मंगबै? जँ मंगबो करबै तँ गारंटी नहि अछि जे नीके देत। अधलोकेँ नीक कहि दैत अछि।

जुग-जुगसँ रंग-बिरंगक फूल-फलक गाछ रहितो अखनो हेराएल अछि आ हेराइयो रहल अछि। भरिसक हेराइ-जीताइक खेले ने तँ चलैए?

..बलदेवकेँ अपने-आपपर शंका उठलै। अखन जहलक सेलमे छी, अकलवेरामे फाँसीपर चढ़ब, कहीं बुड़धे तँ ने भँगैठ रहल अछि। भँगठले बुधि ने बताह कहबै छइ। मुदा बिनु भँगठलोकेँ तँ बताह कहै छै! ..जहिना धान-रब्बीक रग्गड़सँ हाँसू मुरैछ जाइए तहिना बलदेवक मन मुरैछ गेल। किछु समय निकैलते मनमे उठलै- आइक पछाइत के हमरा मोन रखत? कोनो कि हम असगरे मृत्युदण्ड पेलौं आकि पबै छी। कियो गाछपर सँ खसि कऽ, तँ कियो पानिमे डुमि, तहिना कियो बीखहा दबाइ पीब कऽ तँ कियो विषैला सँपकट्टीसँ मरैए..! मुदा हम तँ ओइ सभसँ भिन्न छी? दुनियाँक बीच अपराधी छी, ओहन अपराधी जेकरा दुनियाँ थूक फेक भगबैए...।

बलदेवक मनमे हुमड़ैत वायुक दरद बुझि पड़लै। केकरा-ले एते अपराध केलौं! अपना-ले आकि परिवार-ले? आइ के हमरा सँग फाँसीपर चढ़त? जँ अपना-ले केलौं तँ की हाथ-पएर नै अछि? ..मनमे एकाएक समुद्रक शीतल समीरक झटका लगलै। झटका जकाँ लगिते मुहसँ निकलए लगलै-

“ओ फाँसी केहेन होइए जे हँसैत अपने हाथे गरदैनमे लगबैए। ओहिना हँसैत मुँह लोकक सोझहामे हँसैत रहै छइ। आ ओ फाँसी केहेन जेकरा थूक फेक लोक आँखि मूनि लइए। कियो सपूत बनि फाँसीपर चढ़ि अमर ज्योति जरबैए आ कियो करियाएल इजोतमे अन्हराएल रहैए। ऐ धरतीपर केकरो सँग कियो नै जाइत अछि। सभ अपन-अपन स्वार्थक पाछाँ रहैए! ..मन ठमकलै। ठमकल मनमे उठलै- केना नै जाइत अछि, आत्माक सँग आत्मा जरूर जाइत अछि, तहिना नीकक सँग नीक आ अधलाक सँग अधला तँ जाइते अछि।”

रातिक अन्तिम पहर। एक दिस राति उसरैक बेर तँ दोसर दिस दिन

चढ़ैक समय। अर्द्धचेत बलदेवक भक्क तखन खुजलै जखन अन्हारमे हेराएल पौड़की अपन संगीक बीच उपस्थिति दर्ज करबैले घुटकल। आ तैपर अपन-अपन आवेशी आवाजमे गामसँ आन गाम आ एकसँ अनेक किसिमक गाछपर सँ सभ एक जुटताक आवाज देलक-

"यएह समय छी जे गौतमो ऋृषिकेँ चन्द्रमा धोखा देलकैन। सराप चाहे गौतम जे देलखिन मुदा एते तँ भेबे केलैन जे आत्मासँ खसि देहलोकमे उतैर गेला। चन्द्रमामे जखन गहन लागि जेतै तखन अन्हारमे धरतीपर केकरा के चिन्हत?"

पौड़की सबहक आवाज सुनिते बलदेवक मनमे जहिना तरेगन रहितो भुरुकबा-तरेगन आल-लाल ज्योति धरतीपर हँसैत आबि प्रकाशित करैक परियास करैत, तहिना बलदेवक मनमे सेहो पतराएल प्रकाशक आगमन भेलइ। ज्योतिक आगमन होइते उठलै, कोनो कि हमरेटा फाँसी हएत आकि अदौसँ होइते एलै आ भविसोमे होइत रहतै। मुदा हमरा जिनगीमे फाँसी चढ़ैक बाट पकड़ाएल कहिया?

बलदेव पाछू उनैट ताकए लगल। हम तँ ओही दिन फाँसीक बाट पकैड़ लेलौं जइ दिन डगर छोड़ि डगहर पकैड़ लेलौं। डगरक तँ सीमा-सरहद होइ छै, निसचित जगहसँ निसचित जगह पहुँचैए, मुदा डगहर तँ से नइ होइत अछि। घुरिया-फिड़िया वौअबैत रहैए। मनुक्खक तँ डगर होइ छै, डगहर तँ पशु-ले होइ छै, जैपर चलि कऽ पशु जंगलमे चरैले जाइए। की हमहूँ पशुए भऽ गेलौं? मुदा पशुओ तँ जीबे छी आ मनुक्खो जीबे छी। दुनूक बीच आत्माक बास होइ छइ। मुदा आत्माक बास रहितो पशु कहाँ बुझि पबैए जे हमरा बीच आत्माक बास अछि। मुदा मनुक्खकेँ तँ से नइ होइ छइ। मनुक्खे ने जीव-जन्तुसँ प्रेम करबो करैए आ प्रेम पेबो करैए। तेतबे नहि, सहयोगी बनि जिनगीमे सहयोगो करैए आ सहयोगक अपेक्षो रखैए। जँ से नहि तँ पशु अपन रहैक बेवस्था किए ने कऽ पबैए। जेकरा रहैक बेवस्था नै हेतै तेकर जिनगीक गारन्टी की भऽ सकै छइ। भलेँ वौआ-ढहना घास-पात वा अन्य भोज्य पदार्थ ताकि पेट भरि लिअए मुदा ओ मनुक्ख जकाँ तँ जिनगी जीबैक गारन्टी नै कऽ सकैए। मनुक्ख तँ पातालसँ पानि आनि पीब सकैए, धरतीसँ भोज्य-पदार्थ उपजा सकैए...। फेर मन ठमकलै, सोचती बन्न भेलइ, सोचनशक्ति रूकलै।

जहिना कटल वा टुटल रस्ता देखि राही ठमैक जाइत अछि जे ओइ पार केना जाएब। मुदा कटबो आकि टुटबो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। एक टुटब ओहन होइत अछि जइमे पानि-थाल-कीच होइ छै आ दोसर ओहन होइ छै जे सुखले रहैए, जइमे सावधानीसँ निच्चाँ उतैर पार कएल जाइ छइ। तहिना तँ पनियाएलो-थलाहमे होइत अछि। केतौ अगम होइत तँ केतौ कम होइत जैठाम कम होइत तैठाम कनी कठिनाहे सही मुदा पार तँ कएले जा सकैए।

..मुदा अगममे तँ डुमबोक आ गड़बोक सम्भावना बनले रहै छइ। फाँसी लगा, गरदैन दाबि हमर प्राण लेत मुदा फँसरियो लगा तँ लोक मरिते अछि। एहेन-एहेन परिस्थिति पैदा कऽ दैत जे बेवस भऽ लोक अपन गरदैनमे फँसरी लगा प्राण गमबैए। की ओ अपराधी छी आकि अपराधीक सजा पबैए! जखन ओ अपराधी नइ छी, तखन अपराधीक सजा किए भेटलै? बोनक बाघ-सिंह किए दोसराक प्राण लऽ लऽ खून पीबैए? ओकर की दोख छइ? यएह ने जे ओकरा आगू ओ अब्बल अछि। फेर मन ठमकलै। कियो इनार-पोखैरमे डुमि मरैए, कियो आगिमे जरि मरैए, तहिना पानि-पाथर आ कियो विर्ड़ोमे मरैए। तेतबे नहि, कियो गाछपर सँ खसि मरैए, तँ कियो गाछपर चढ़ैत-उतरैतकाल खसि कऽ मरि जाइए। प्रकृतिक तँ अद्भुत लीला अछि। क्षणे-क्षण पले-पल बाटो पकड़बैए आ धकेल-धकेल निच्चोँ करैए! ऊपर-निच्चाँक खाढ़ी बना जीवन-मृत्युक सीमान बनोनै अछि। एक तँ ओहिना आगिमे अगियाएल अछि, पानिमे पनियाएल अछि, हवामे हबियाएल अछि, तखन केना परैख पएब? परखैले जेहेन आँखिक इजोत चाही, तेहेन ने करियाएल वादलमे अछि जे बर्खासँ सिक्त करत आ ने डभियाएल धरतीमे अछि जे धरतीक परतकेँ तेना सिर गछाड़ने अछि जे शक्तिहीन बना देने छइ। सुखल माइक छातीमे दूध कहाँ अछि जे चाहियो कऽ वेचारी दऽ सकती। अन्हारो रातिमे, जखन हाथ-हाथ नै सुझैत, जखन अपन देहो हेरा जाइत, देहक सभ अंग निष्क्रिय भऽ जाइत तखनो तँ किछु रहिते अछि जे हौंथैरो-हौंथैर किछु दूर धरि लाइए जाइए। मुदा हम तँ सोलहन्नी अन्हरा गेलौं। जहिना पीबैयोबला पानि बसिया गेने फेका जाइत, तहिना आइ दुनियासँ फेका रहल छी। अपन फेकाइत जिनगीपर नजैर पड़िते बलदेवक मन सहैम गेल। ने आगूक बाट देखि

पबैत आ ने पाछू घुसैक पबैत। जहिना जिनगीक ओइ मोड़पर कियो चारू भागसँ दुश्मनसँ घेरा, हारि-जीतक तारतम नै कऽ पबैत तहिना बलदेवो घेरा गेल। हारियो मानने दुश्मनक हाथे प्राण गमेबे करब, तखन प्राणक मोह रखि हारियो मानब उचित नहि। तइसँ नीक जे सामना करैत सामनेमे जेतेकाल ठाढ़ रहब ओत्तेकालक जिनगीक महत तँ आरो किछु हएत।

मुदा ठाढ़ रहि के सकैए? जेकर शरीर टी.बी., केन्सर सन रोगसँ जर्जर भऽ खोखला भऽ गेल ओ ठाढ़ केना रहि सकैए, ओकरा पएरमे ओ शक्ति कहाँ छै जे ठाढ़ रखतै। ..बलदेवक मन विचलित भऽ गेल।

किछु क्षणक पछाइत मनमे उठलै, फाँसी तँ पोखैरक जाइठ सदृश जिनगीक छी। कियो अगम पानिमे डुमकुनियाँ काटि, माटि निकालि जाठिक मुड़ेरापर लगबैए तँ कियो किनछैरेमे पिछैड़ कऽ खसि, पिछड़ैत-पिछड़ैत अगम पानिमे डुमि, सड़ि-सड़ि सड़ैनक गन्ध पसारैए। मुदा जिनगीक अन्तिम छोड़पर बुझनहि की हुअए? कम-सँ-कम जँ अपनो-ले केने रहितौं तँ कनैत किए, हँसैत किए ने दुनियाँ छोड़ितौं। जिनगीक अचूक उपाय कहाँ बुझि पेलौं..!

सूर्योदय भऽ गेल। बलदेवक पत्नी–कामिनी आ बेटा–सुशील गुमसुम भेल अपन-अपन काजमे लागल, मुदा मनमे विचित्र स्थिति बनल रहइ। ने बेटा माएकेँ किछु कहैत आ ने माए बेटाकेँ। दुनूक मनकेँ बलदेवक फाँसी भीतरे-भीतर खिंचैत रहैन। जइसँ मनक पीड़ा बढ़ैत रहैन। मनक पीड़ा तँ ताधैर बढ़िते रहैए जाधैर ओकरा निकालि दोसरकेँ नै कहल जाइए। तखने अकासमे एकटा कौआ बाजल। कौआक बोलमे कामिनीकेँ अपशगुन बुझि पड़लैन, मुदा सुशीलकेँ सगुन बुझि पड़ल। गुम्मी तोड़ैत कामिनी बजली-

"बौआ, कौआक बोल केहेन ओल सन भेल!"

ओना बलदेवक फाँसी दुनूकेँ बुझल, मुदा तैयो मनकेँ फुसलबैत बहलबैत कामिनी बजली। ..माइक बेथाकेँ सुशील बुझि गेल, मुदा जिनगीमे अहिना सोग-पीड़ा अबै-जाइ छइ। छोटसँ-छोट पीड़ा होइ आकि पैघसँ-पैघ हौउ मुदा समैयक सँग तँ लोक ससरिये जाइ छइ। जइसँ धीरे-धीरे कमैत-कमैत मेटा जाइ छइ। जहिना चलैले रस्ता चाही, से नीक आकि

बेजए अछिए। समाज तँ ओहन समुद्र छी जइमे करोड़ो-अरबो जीव-जन्तु स्वछन्द भऽ जीवन-यापन करैत रहैए, भलेँ एक-दोसराक बाटो घेरैत रहै छै, पकैड़-पकैड़ खेबो करै छै, मुदा तैयो तँ रहबे करैए। नीक की अधला, मनुक्ख मनुक्खे बीच रहैए। माइक पीड़ाकेँ सुशील भाँपि गेल। मने-मन सोचलक जे एक तँ वेचारीकेँ जिनगी भरिक संगी छुटि रहल छैन तैपर जँ हमहूँ ओहने बात कहबैन तँ आरो मनमे धक्का लगतैन। चोट-पर-चोट लगने आरो अधिक वेदनाक अनुभव होइ छइ। मुदा जहिना कड़ू लगने लोक पानि पीब कड़ू कम करैए तहिना जँ दरद मेटबैक उपाय करब तँ दरद आगू नै बढ़ि या तँ ठमकल रहतैन वा कमतैन।

..समगम होइत सुशील माइक बातक उत्तर देलक-

“माए, कौआ तँ केहेन सुन्दर बाजल, कबकबाएल कहाँ?”

सुशीलक बात सुनि कामिनी बजली-

“आन दिन केहेन सुन्दर भिनसुरका बोली निकालै छेलै, आइ केहेन सबसबाएल बोल निकाललक।”

माइक हृदैक वेदनाकेँ सुशील भाँपि लेलक। ओना, मनुक्खक हृदैक थाह नइ छइ। एक दिस रूइयाक फाहा जकाँ बिनु हवोक उड़ैए तँ दोसर दिस जुआन पति, कमाइबला जुआन बेटाक मृत्यु, सेहो तँ सहबे करैए। बाट टुटल हौउ वा कटल हौउ, चाहे छोटसँ नमहर खाइधे हौउ, मुदा लोककेँ चलैले तँ बाट चाहबे करी। एकठाम बैसलासँ तँ जिनगी नहियेँ चलै छइ। कोनो-ने-कोनो उपाय तँ करैये पड़ै छइ। केतौ लोक कुदि कऽ खाधि पार करैए तँ केतौ बगलक माटि काटि वा छीलि कऽ ओकरा पहेट चलैए। केतौ एहनो होइ छै जे नमहर टुटान वा कटान रहै छै तँ ओकरा छोड़ि दोसर बाट बना लइए।

..माइक पीड़ाकेँ कमैत नइ देखि सुशीलक मनमे उठल। एक-एक ढेपासँ सेहो बाटक खाधि भरल जाइए आ खाधिक हिसाबसँ चेकान काटि सेहो भरल जा सकैए। सुशील बाजल-

“माए, हमरा तँ कौआक बोलमे सकुन बुझि पड़ल। जहिना केकरो कोनो वस्तु हरेलासँ दुख होइ छै तहिना ने भेटनिहारकेँ खुशियो होइ छइ। बीचक वस्तु तँ एकेटा रहै छइ। एक्के बात वा वस्तु एक-ले नीक अछि आ

दोसरा-ले अधलो भऽ जाइत अछि। जीवन रक्षक पतियो होइत अछि आ बेटो होइत अछि। मुदा एक काज रहितो दुनूक करैक विधिमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ भइये जाइत अछि। वएह अन्तर तँ एक-दोसराक बीच अन्तरो पैदा करैए।”

सुशीलक विचार कामिनीक विचारक सोझहा-सोझही ठाढ़ भऽ गेलैन जइसँ कामिनीक विचार ठमकलैन। एकाएक ठाढ़ भेने जहिना शरीरमे झोंक अबै छै तहिना कामिनीकेँ एलैन। झोंक अबिते मन डोललैन। डोलिते नजैर एक दिस पतिपर तँ दोसर दिस पुत्रपर विभाजित हुअ लगलैन। जइ छत्र-छायामे अखन धरि रहलौं ओ तँ टुटि रहल अछि। मन निराश हुअ लगलैन, मुदा लगले आगूमे पुत्रकेँ देखि आशा जगलैन। पुत्रो तँ पतीए जकाँ प्रहरी होइत अछि। कामिनीक निराशाक मचकीमे आशाक आस लगलैन। हृदय सिहरलैन। सिहैरते पुत्रक प्रति प्रेम जगलैन। ओ प्रेम नहि, जे माइक आशामे पुत्रकेँ होइत, बल्कि ओ प्रेम जइ आशामे पुत्रक आश्रयमे माए जीबै छैथ। जहिना जलसँ जलकण आ ओससँ ओसकण बनि पुन: जल वा ओसक सृजन करैए, तहिना। कामिनीक निराश मनमे खुशीक संचार भेलैन। संचार होइते खिलैत कली जकाँ मन खिललैन। जहिना खापैड़मे मकइ वा धानक लाबा एक्के-दुइये फुटि-फुटि अपन रंग बदलैत तहिना कामिनीक मनक रंग बदलए लगलैन। केना लोक बजैए जे अनुकूले वातावरण भेटने कोनो बीआमे अँकुर होइ छइ। बीआकेँ अँकुरै-ले तँ वएह वातावरण अनुकूल भऽ जाइत अछि जइ मूलक ओ बीआ आ बीआक गाछ होइत अछि। जँ से नहि तँ एक दिस अगम पानिबला समुद्रमे बीआ अँकुरि पनिगाछक जन्म दैत अछि, तँ दोसर माटि-पानिक बीच सेहो दैत अछि। तेतबे किए, दोखरा बाउलो आ चखान भेल पाथरोमे तँ कोनो-ने-कोनो गाछक बीआ तँ अँकुरिते अछि। जखन दुनियाँक सभठाम शक्ति मौजूद अछि तखन मिथिलाक भूमि किए शक्तिहीन भऽ जाएत, जे बीत भरिक पेटक रक्षा नै कऽ सकैए। जे धरती भिखाड़ीकेँ भिक्षु बना सकैए, भोगीकेँ जोगी बना सकैए ओ जोगीकेँ किए ने भोगी आ भिक्षुकेँ भिखाड़ी बना सकैए..?

एक नव शक्तिक उदय कामिनीक मनमे भऽ चुकल छेलैन। धानक लाबा जकाँ मन दू फाँक भऽ गेल छेलैन। जहिना खापैड़मे एक-फाँक, दू-

फाँक, तीन-फाँक होइत लाबा खापैड़सँ उड़ए चाहैए, उड़बो करैए तहिना कामिनीक विचार उड़लैन। मुदा मुँहक बोल सुखा गेलैन आ कण्ठक तरास बढ़ए लगलैन। पति-पुत्रक बीच चलैत धारमे अपनाकेँ पाबि कामिनीक हृदय छटपटेलैन। छटपटाइते बेटाकेँ आँखिमे आँखि गाड़ैत बजली-

"बाउ सुशील! आइ अपने–अहाँक पिता अन्तिम दिनक छनमे छनैक रहल हेता। कनी चलि कऽ दुनू गोरे भेँट कऽ लहुन?"

माइक बात सुनि सुशीलक मन ठमकल। केकरो मनमे फूलक वर्षा होइत अछि तँ केकरो मनमे पानि-पाथर बनल 'ओला' बरसैए। मुदा जहिना मरबो दुनू करैए तँ जीबो तँ करिते अछि। भेँट करए चलैले माए कहै छैथ मुदा की ई उचित हएत? हम सभ जेबे करब तइसँ किछु हुनका भेटतैन, आकि हमरे सभकेँ किछु भेटत? अस्ताचलगामी सुरूजक लाभ तँ ओकरे भेटै छै जे उदीयमान अछि। जे उदीयमान नै अछि ओकरा-ले तँ जेहने दिन तेहने राति, तखन अस्ताचलक महौते की? हुनका किछु ने भेटतैन, भेटतैन वएह जे अपना-ले फाँसीपर चढ़ि रहला अछि आ परिवार-ले? जँ परिवार-ले, तँ की अधले काजपर परिवार चलि सकैए आ नीक काजपर नै चलि सकैए। जँ चलि सकैए तँ ओ खुद नीक बाट छोड़ि अधला बाटपर चलि अन्तिम दर्शन देखा रहला अछि। अन्तिम दर्शन की? यएह ने जे धरतीपर कनैत एलौं हँसैत जाएब, आकि जहिना कनैत एलौं तहिना कनैत जाएब, तँ की एहेन जिनगीकेँ सुभर जिनगी मानबै? कथमपि नहि! जखने घरसँ डेग उठाएब तखनेसँ लोक कहबो करत आ थूकबो करत जे खूनियाँ-अधर्मीक बौह-बेटाकेँ देखियौ? निरलज जकाँ केहेन घमौड़ दैत जा रहल अछि!

..माइक प्रश्नक उत्तर दैत सुशील बाजल-

"माए, कोन मुँह देखए आ देखबए जाएब। सोझ पड़लापर पिता यएह ने कहता जे अहीं सभले जा रहल छी। मुदा अपना सभ कथी पुछबैन?"

सुशीलक विचार कामिनीक मनमे अभिभावक रूपमे जगलैन। जहिना साइयो हाथक लत्ती बिनु सहाराक धरतीसँ नै उठि सकैए तहिना ने नारियो अछि। डाँड़मे चोट मारि ने विधातो विधिक रचना केलैन। बेटाक

सहारा देखि कामिनीक मनमे ऐगला जिनगीक आस जगले रहैन। विह्वल भऽ बजली-

“बेटा, बेटा बनि जँ धरतीपर आबी तँ बेटा कहबैत चली। आब तँ तोंही ने सभ किछु भेलह। वैधव्य भेने एक अँकुश मात्र लगत। मुदा आरो जिनगी तँ सँग मिलि चलबे करबह किने, तोहर जे विचार हेतह सएह ने हमरो विचार हएत। कहुना भेलह तँ तूँ पुरुख-पात भेलह। हम केतबो हएब तँ घरे भरिक हएब।”

माइक बात सुनि सुशीलक मन पसीज गेल? अपन दायित्वक भान भेलइ। मुदा लगले मन मुरैछ गेलइ। एक दिस धरती सदृश निश्छल माए तँ दोसर दिस कुकर्मी, अपराधी, धरतीक पापात्मा पिताकेँ देखए लगल। पिताक प्रति मनक उष्मा तेज भऽ गेलइ। बाजल-

“माए, परिवारक बड़का बोझ उतरैक दिन...।”

सुशीलक बोल बन्न भऽ गेल। विस्मित अवस्थामे सुशीलकेँ देखि कामिनी बजली- “सोग नै करह। जइ दिनक जे भवितव्य छेलै ओ भेल। जहिना जरल-मरल धरती अदराक बून पाबि सिरिफ जीविते नै सृजक सेहो बनि जाइत अछि। तों तँ सहजे पुरुख छह। आन के केकरा कहत आ केकर के सुनत। मुदा जहिना तोहर पिता तहिना तँ हमरो पति छैथ। तँए अन्तिम घड़ीमे श्रद्धापूर्वक स्मरण कऽ बिसैर जाह। चलह अँगनेक ओसारपर बैस चाहो बना पीब आ गपो-सप्प करब। दुनियाँ किछु कहह, मुदा तोहर मुँह देखि एहेन खुशी भऽ रहल अछि जे जिनगीमे कहियो नै भेल छल।”

माइक बात सुनि सुशीलक मन ओहिना फुरफुरा उठल जहिना आवेशीक मुँहमे दुरभाखा फड़फड़ा जाइत अछि। बाजल-

“माए, जिनगी जीब बड़ असाध नहि छै मुदा बड़ असानो तँ नहियेँ अछि।”

बेटाक आस भरल बात सुनि कामिनीक हृदय पसीज गेलैन। बजली-

“बौआ, आब तूँ बौआ नहि बेटा भेलह। बापक काजकेँ देखि परैख दुनियाँक सँग चलैक एक सिपाही भेलह, परिवार-समाजक कर्म-कर्ता

भेलह। ने अनका पढ़ने आनकेँ ज्ञान होइत आ ने अनकर ज्ञान अनका-ले सबतैर उचिते होइत। तँए अपन समय, परिस्थितिकेँ अँकैत परिवारकेँ आगू-मुहेँ ससारैक तँ भार माथपर आबिए गेल छह। केहेन मनुक्ख बनि धरतीक धारण केलौं, यएह ने जिनगीक परीक्षा छी।”

माए-बेटाक बीच जिनगी आ परिवारक गप-सप्पक बीच कामिनीक मन कखनो पतिसँ हटियो जानि मुदा लगले फेर आबि मनकेँ पकड़ियो लैन। जखन मनसँ हटि जानि तखन अपनो हाथ-पएर निंगहारि-निंगहारि देखए लगै छेली आ सुशीलोकेँ निंगहारि-निंगहारि देखैथ। मनमे उठलैन पाँखि तँ टिकुलियोकेँ होइ छै, अकासमे उड़बो करैए मुदा तँए ओ चिड़ै तँ नइ कहाइत अछि। चिड़ै-ले तँ पाँखिमे दम चाही, से कहाँ टिकुलीमे होइ छइ। कनियोँ किछु होइ छै आकि पाँखि टुटि जाइ छइ। जइसँ अकासमे उड़बो बन्न भऽ जाइ छइ। तहिना तँ अखन अपनो परिवार भऽ गेल अछि। हम उमरदार छी तैयो घरसँ बाहर किछु करबे ने केलौं आ सुशील तँ सहजे कोनो भार बुझबे ने केलक। नै बहराइक कारणो भेल जे अपनाकेँ घरेक सीमामे रखलौं। जे उचितो भेल आ अनुचितो भेल। अर्द्धांगिनी होइक नाते जिनगीक सभ वृत्तिसँ परिचित हेबा चाहै छल से नइ भेल। जँ से भेल रहैत तँ जरूर नीक-अधला वृत्तिक विचार करितौं। मुदा, अपसोचो केने तँ नहियेँ किछु हएत। बजली-

“बेटा, जँ ऐ धरतीपर बेटा बनि आबी तँ किछु कऽ देखाबी। जँ से नहि तँ बेटाक महौते की?”

माइक बात सुनि सुशीलक मन नव कलशल टुस्सा जकाँ नव रूपमे पोनगल। माइक आँखिमे आँखि गाड़ि बाजल-

“माए, दुनियाँमे सभ अपन-अपन भाग-तकदीर लऽ जिनगी बनबैए। जेहेन जेकर जिनगी जीबैक बाट रहै छै तेहने से भार उठा चलैए।”

सुशीलक बात सुनि कामिनी विह्वल होइत बजली-

“बेटा, जहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवार-खनदानकेँ नाश कऽ दैत अछि तहिना तँ खसल-पड़ल परिवारकेँ उठा ठाढ़ो कऽ दैत अछि।”

जहिना कल्पवृक्षक निच्चाँ बैसनिहार वौड़ाइत रहैए तहिना

फाँसीपर चढ़ैत बलदेवक परिवारक मन वौड़ा रहल अछि। असमसान जाइकाल मुर्दाक पाछू कठियारीबला कहैत चलैत- 'राम-नाम सत् है, सबको यही गत है।', मुदा घुमतियो-काल, जखन कि मुर्दा नै रहैत, वएह कहैत- 'राम नाम सत् है, सबको यही गत है।' भलेँ मृत्युक आँगन आबि लोह-पाथर, आगि छुबि बिसैर जाइत वा छोड़ि दइत। जैठाम बच्चासँ सियान धरि एहेन 'मंत्र' जपैए तैठामक जिनगीक एहेन दशा किएक? ..जहिना रस्ता चलैत बताह कखनो रस्तासँ हटि तँ कखनो सटि ललकारो भरैत आ कखनो असथिर भऽ बौको बनि जाइत तहिना माए-बेटाक अर्थात् सुशील-कामिनीक मन पिता-पतिक फाँसीक किछु समय पूर्व पुरबा-पछबा जकाँ रस्सा-कस्सी करैत रहैन। कामिनी बजली-

"बेटा, तीन गोरेक परिवारमे एक अन्त भऽ रहल अछि तैयो तँ दू गोरे बँचलौं। तोहर बिआह होइते फेर तीन गोरे भऽ जाएब।"

माइक बात सुनि सुशील बाजल- "अहिना परिवार कम-बेसी होइत एलैए आ होइत चलतै। तइले केते माथ धूनब। तखन तँ एकटा बात बुझए पड़त जे आन के केकर परिवारक भार उठबैए, अपन परिवारक भार तँ अपने उठबए पड़त।"

कामिनी-

"हँ, ई तँ बेस बजलह।"

सुशील- "दुखे की सुखे परिवारक बोझ तँ परिवारेक लोककेँ उठबए पड़तै।"

सुशीलक बात सुनि कामिनीक मन सहैम गेलैन। बेटा सहजे अनाड़ीए अछि, अपने कहियो भारे ने बुझलौं। तखन..? बकार बन्न भऽ गेलैन। जहिना भुमकम होइकाल धरतीक सभ किछु डोलए लगैत तहिना कामिनीक भीतर-बाहर डोलए लगलैन। धारक बहैत पानिमे जहिना पएर असथिरो कऽ टपैमे थरथड़ाइत तहिना कामिनीकेँ हुअ लगलैन। सुशीलोक मन विचलित होइत मुदा मनकेँ थीर करैत बाजल-

"माए, प्रश्न तँ छुटिए गेल अछि। उत्तर कहाँ देलँह।"

सुशीलक प्रश्न मोन पाड़ि कामिनी बजली-

"अर्द्धांगिनी बनि जइ पुरुखक सँग पकड़लौं हुनका चीन्हि नइ

सकलयैन। आइ बुझै छी जे पुरुखक भीतरो पुरुख होइ छै आ नारीक भीतर सेहो नारी होइ छइ। जँ से बुझने रहितौं तँ एतेक दूरी नै बनिताए। ओना, परिवारक भीतर अपन भार निमाहैमे कहियो कोताही नै केलौं। मुदा आब उपैये की!"

बजैत-बजैत कामिनी ठमैक गेली। जहिना नदी-नालाक पानिक वेग आगूमे बान्ह पाबि अँटैक जाइत तहिना कामिनीकेँ भेलैन। सोहत बेधल माछ जकाँ छटपटाए लगली। छटपटाइत मनमे आबए लगलैन, एक दिस तत्त्ववेत्ता तात्त्विक चिन्तन-विवेचनमे लगल रहै छैथ तँ दोसर दिस बेकती-बेकतीक बीच सेहो होड़ लगल अछि। सभ सभसँ आगू बढ़ए चाहैए। जइसँ सँगे चलब छुटि जाइत अछि, समाज विखण्डित भऽ जाइत अछि, श्रमिक अश्रमिकक बीच दिसा-दिसान्तरक अन्तर बनि जाइत अछि।

दुनू माए-बेटा गुमसुम भेल एक-दोसराक मुँह बड़ीकाल धरि देखैत रहल। पछाइत गुम्मी तोड़ैत सुशील बाजल-

"माए, तोहर की इच्छा छौ?"

बेटाक बात सुनि कामिनीक मन शान्त भऽ गेलैन। पतिक फाँसी मनसँ हटि गेलैन। जेना किछु मोन पाड़ैत बजली-

"बेटा, बहुत दुनियाँ देखलौं। नाना-नानी, दादा-दादी, बाप-माए, मामा-मामी, केते कहबह। पाछू उनैट तकै छी तँ सभ किछु देखै छी, मुदा आगू तकै छी तँ तोरा छोड़ि किछु ने देखै छी। जहिना नमहर गाछ खसि बटोहीक रस्ता रोकि दइ छै तहिना आगू बुझि पड़ैए।"

माइक बात सुनि सुशील बाजल-

"माए, तोहर जे इच्छा छौ, ओकरा जहाँ धरि भऽ सकत पुरबैक कोशिश करब। जे धरती छोड़ि चलि गेल ओ तँ सहजे चलि गेल, ओकरा सँग किछु जाएत मुदा जे अछि, ओकर आशा तँ अछिए।"

आशा भरल सुशीलक विचारमे आस लगबैत माए बजली-

"दुनियाँक खेल छिऐ जे एक-पर-साए ठाढ़ अछि आ कखनो साए, साए दिस छिड़ियाएल रहैए आ कखनो...। तँए सभ किछु बिसैर जाह। बितलाहा काल्हि मन राखह आ ऐगला काल्हि-ले हाथ-पएर उठाबह।"

नअ बजिते जहलक भीतर ओहने चलमली आबि गेल जेहेन नमहर

बर्खा भेलापर वा भुमकम भेलापर होइत अछि। किछु सिपाही नहाइ-खाइले गेला आ किछु दस बजेक पछाइत निकलैक तैयारीमे जुटि कागत-पत्तर सेरियबए लगला। ओना अनदिनासँ ऑफिसोक रंग बदलल। जेना घन्टा-घन्टा भरि ऑफिसरक अभावमे गेटपर ठाढ़ भऽ प्रतीक्षा करए पड़ैत, तेना नहि। ऑफिस समैयेपर खुजि गेल। केना नहि खुजैत, आइ बलदेवकेँ जहलक सजा जे समाप्त भऽ रहल अछि। फाँसी तँ जिनगीक छी। सिरिफ दूटा सिपाही बलदेवकेँ सेलसँ निकालि अग्नेयक गाछक निच्चाँमे, सब्जीए-पर बैस गप-सप्प करए लगल। तहूमे एक गोरे चीलमक भाँज-भुँजमे लगि गेल आ दोसर बलदेवसँ गप-सप्प करए लगल। मुदा तीनू गोरे– माने दुनू सिपाही आ बलदेव–क मन तीन दिस वौआइत-ढहनाइत। चीलमक भाँज-भूँज केनिहार पहिल सिपाही तमाकुल-बलापर बिगैड़ गरियबैत जे साला सभ पानि छीटि अधलो पत्ताकेँ तेहेन डगडगी आनि दइए जे लेनिहारकेँ बुझि पड़ैत जे टिपगर अछि। मुदा स्नो-पोडर लगौलहा मुँह तँ ओतबेकाल ने चमकैत जेतेकाल ओकरा चमकैक शक्ति छै, मुदा तँए कि सभ मुँह ओहने होइए जे लगले चमकत, लगले दबि जाएत, विलीन भऽ जाएत। तमाकुलक तामस सिपाहीकेँ आगू बढ़ा सरकार दिस लऽ गेल। सरकारपर नजैर पड़िते हँसी लगलै। बड़बड़ाए लगल-

“अजीब मदारी-नाच सरकारो करैए। एक दिस तमाकुल खेती करैक लाइसेंस, गुटका बनबैक लाइसेंस दइए आ दोसर दिस कैंसर रोगक कारण कहि मनाही करैए। मुदा लगले मन घुमि कऽ अपनापर चलि एलइ। तीस बर्खक नोकरीक कमाइ अही-गाँजा-भाँगमे चलि गेल। जखन रिटायर करब आ अदहा दरमाहा भेटत तखन की करब। एक तँ देहमे किछु ने रहल जे दोसरो काज करब, खेनाइ-पिनाइक अभाव सेहो हेबे करत। तैपर बुढ़ाड़ियो तँ बेमारीक जड़िए छी, कहियो दाँत टुटत, कहियो आँखिक इजोत कमत, कहियो कानक बहिर हएब तँ कहियो बातरस ठेहुनमे पकड़त। मुदा अपना विषयमे अपने सोचलौं कहिया जे बुझब...।

दोसर सिपाही जे बलदेवक आगूमे बैसल रहए, ओकर मन भिन्ने वौआइत। जहिना शराबीकेँ शराबक बोतल आगूमे अबिते शराबक खुमारि आबि-आबि नाचए लगैत तहिना ने मृत्यु वा फाँसीसँ पूर्वक क्षण होइ छइ। फाँसीसँ पूर्व धरि ने बलदेव अपराधी छी आ हम ओकर पहरेदार सिपाही।

मुदा किछु कालक पछाइत अर्थात् बारह बजेक पछाइत के केतए रहब तेकर कोन ठेकान अछि। से नहि तँ अखन ने हम सिपाही, आ ने बलदेव अपराधी। की केने बलदेव एत्ते पैघ अपराधी भेल आ हम ओकर सिपाही छी...।

बलदेवक मन बीरान होइत ऐ दुनियाँकेँ देखैत जे जहिना फलसँ लुबधल आमक गाछ बिहाड़िक झोंकमे खसि पानि फेरि दैत तहिना ने अपनो आ परिवारोकेँ भऽ रहल अछि। मुदा आब तँ ने सोचै-विचारैक समय रहल आ ने ओकरा पुरबैक...।”

तीनू गोरे अपने-आपमे मस्त। मुदा जहिना तीर्थस्थानमे अनठिया यात्री एक-दोसर लग बैस अबैक कारणो पुछैत आ रस्ताक भीड़-कुभीड़ सेहो पुछैत तहिना दोसर सिपाही चुप्पी तोड़ैत बलदेवकेँ पुछलक-

“भाय, आइ तँ फाँसीए-पर चढ़ि जिनगीक अन्त करबह। मुदा एकटा बात कहह जे केना-केना करैत एहेन सजाए-क भागी भेलह?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव मर्माहत भऽ जिनगीक समुद्रमे डुमि गेल। जहिना पोखैरमे पानिक ऊपरक आवाज तँ पानिक भीतरोमे पहुँचैए मुदा पानिक भीतरक आवाज ऊपर नै अबैए तहिना बलदेवकेँ भेल। बकार बन्न रहै मुदा कलपैत मन किछु बजैत जरूर रहइ। जिनगीक समुद्रमे डुमैत बलदेवकेँ, जहिना छठियारीक दूध बच्चाकेँ मोन पड़ि जाइ छै तहिना जिनगीक ओइ धरतीपर पहुँच गेल जेतए अवोधे नहि, छेहा अबोध रहैए। मोन पड़लै ओ दिन जइ दिन दोसर बच्चाक खेलौना छीनि नुका धेलक आ माइयो झूठ बाजि लाथ कऽ लेलकै। मोन पड़िते भोरका सुरूज जकाँ चेहरामे दप-दपी आबए लगलै। मुस्कियाइत बाजल-

“सिपाही भाय, बच्चाक ओ दिन मनसँ निकलैले छटपटाइए तँए पहिने वएह कहै छी।”

बलदेवक बात सुनि सिपाहीक मन सेहो अपन बालपन आ परिवारक बच्चापर पड़लै। सड़क नपैत दूरबीन जकाँ केतौ-सँ-केतौ दुनू गोरे नापए लगल। सगतैर बच्चे-बच्चा देखि पड़ैत। आगूओ बच्चा, पाछूओ बच्चा आ तैबीच अपनो दुनू बच्चा। बच्चाक वनमे दुनू गोरे हेरा गेल। हेराइते दुनू गोरे सहैट कऽ आरो लग आबि गपकेँ आगू बढ़ौलक।

जहिना दुखक निवारण बोल आ नोर दुनूसँ होइत तहिना बलदेव अपन दुखनामा बजैत बाजल-

“भैयारी, बच्चामे हम दोसर बच्चाक खेलौना छीनि कऽ चोरा रखलौं। कनैत ओ बच्चा आँगन जा माएकेँ कहलक। बच्चाक सँगे माए आबि पुछलक। नठि गेलौं। मुदा रखैले माएकेँ दऽ देने रहिऐ। माइयो नठि गेल। तेसर दिन वएह खेलौना लेने ओकरे आँगन खेलाइले गेलौं। दुनू माए-बेटा चिन्ह गेल। कहलक तँ किछु नहि, मुदा चोरबा नाओं रखि देलक।”

बलदेवक बात सुनि ठहाका मारि सिपाही अपन संगी, माने दोसर सिपाही दिस इशारा करैत बलदेवकेँ बाजल- “भैयारी, संगी तँ गाँजा पीब मस्त छैथ। बँचलौं दुइए गोरे, जेकरा सबहक राज-पाट छिऐ से सभ अपन सम्हारह। तइसँ हमरा की। अच्छा तेकर पछाइत की भेलह?”

सिपाहीक बात सुनि बलदेव गुम्म भऽ गेल। कनीकाल धरि गुम्मे रहल, पछाइत बाजल-

“ओइ दिनक नीक आइ अधला बुझि पड़ैए।”

बलदेवक उत्तर सुनि चौंकैत सिपाही बाजल-

“से केना, से की?”

विस्मित होइत बलदेव बाजल-

“भैयारी, बात ओतबेपर नै अँटकल। आगू बढ़ि गेल।”

“की आगू बढ़ि गेल?”

“पानि भरैले माइयो इनारपर गेल आ ओहो दुनू मायपुत आएल, आरो लोकसभ रहइ। तैबीच ओ माएकेँ कहलक, अहींक बेटा हमरा बेटाक खेलौना चोरा लेलक। एतबे बजैत मातर अँएले-वँएले पछियामे पजरल पसाही जकाँ लगि गेलइ। दुनूक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीसँ गारा-गारी हुअ लगल। जहिना सात पुरुखाकेँ हमर माए उकटए लगलै तहिना ओहो उकटए लगल। तैबीच एक्के-दुइये आनो-आनो कहा-कहीमे शामिल हुअ लगल। हल्ला सुनि आरो लोकसभ आबए लगलै। जे अबै से कोनो दिस सन्हिया जाइ। दू पाटीमे बँटि खूब गारि-गरौवैल चलए लगलै।”

बलदेव बात समाप्तो नै केने छल, तइ बिच्चेमे दोसर सिपाही टोनि

देलकै-

“ई तँ नाहँकमे एत्ते बात बढ़ल!”

“से की ओतबेपर अँटकल। आरो बेसिया गेल। दुनू दिसक गबाही कमलेसरीए माता हुअ लगलखिन। कारण जे सभ तँ कोनो-ने-कोनो दिसक पाटी बनि गारि-गरौवैल आ झगड़ामे शामिल रहए।”

जहिना फुलाएल पानकेँ मुँह बन्न कऽ आनन्द लेल जाइत अछि तहिना आनन्द लैत सिपाही पुछलकै-

“स्त्रीगणेक बीच झगड़ा भऽ कऽ रहि गेल। आकि आगू बढ़ल?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव बाजल-

“मरद स्त्रीगणमे कोनो भेद अछि। ने मरद मरद जकाँ रहैए आ ने स्त्रीगण स्त्रीगण जकाँ। मरदो मौगयाही चालि पकैड़ मौगी बनि गेल अछि आ मौगियो मरदनमा चलि पकैड़ मरद बनि गेल अछि। स्त्रीगणक गारि-गरौवैल पुरुखक मुँहमे चलि आएल। जहिना एक चम्मच दही तौला भरि दूधकेँ दही बना लइए, जइसँ एक तौलाकेँ के कहए जे केतेको तौला दूध दही बनि जाइए तहिना स्त्रीगणक मुँहक गारि पुरुखमे चलि आएल।”

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

“तखन तँ होत-सँ-होतान भऽ गेल हएत!”

बलदेव-

“अँए, एतबे भेल! स्त्रीगण ने भोरसँ साँझ धरि गारियेक माला जपि सकैए मुदा पुरुखमे तँ से नइ होइए, एकसँ दू गारि मुहसँ निकैलते हाथ उठए लगै छइ। जखने हाथ उठत तँ दोसरेपर ने खसत किने। सएह भेल।”

रस चुसैत सिपाही पुछलक-

“तखन तँ मारि भऽ गेल हएत?”

सिपाहीक जिज्ञासु प्रश्न बलदेवकेँ उत्साहित करए लगलै। उत्साहित होइत बाजल-

“मारिए भेल की गधकिच्चैन मारि भेल। मुदा दुनू दिस एक रंग नै भेल। हमर दियादी नमहर, तहूमे तेहेन छड़े-छाँट समांग सभ अछि जे देखैयोमे राक्षसे जकाँ लगैए। ओकर दियादी छोट माने कम संख्याक अछि

तँए वएह सभ बेसी मारि खेलक।”

सामंजस करैत सिपाही बाजल-

“एतए तँ दुइए गोरे छी, तेसर हमर संगीटा अछि, ओहो भकुआएले अछि। निच्चाँ धरती ऊपर अकास अछि। तँए दुइए गोरेक बीच पनचैती करू जे नीक भेल कि अधला?”

सिपाहीक बात सुनि बलदेव आगू बढ़ैत बाजल-

“अखने औगता गेलौं! पनचैती पछाइत करब। अखन तँ पेनियोँ ने छनाएल।”

बलदेवक बात सुनि सिपाही घड़ी देखलक। एक तँ ओहिना प्रतीक्षाक समय गड़ूगर होइते छै तैपर जहलक बीचक प्रतीक्षा..! समय पाबि सिपाही बाजल-

“आरो बात अछि, भैयारी?”

‘आरो’ सुनि जहिना आदि-इत्यादि नेनमुँह बच्चार्कें हेरा दैत अछि तहिना बलदेव हेरा गेल। बाजल-

“आरो की कनियेँ अछि जे धक-दे नजैर चलि जाएत। मारे-अमार लगल अछि। तैबीच सँ बीछए पड़त किने, नहि तँ ओही नेनमुँह बच्चा जकाँ जिनगी भरि आदि-इत्यादि करैत रहब, मुदा बीछि नइ पएब।”

बलदेवक थीर विचार सुनि सिपाही अपनार्कें थीर करैत बाजल-

“अच्छा हौउ। अखन दू घन्टासँ बेसीए समय अछि।”

दू घन्टासँ बेसी समय सुनि बलदेव बाजल-

“दू घन्टामे तँ विद्यार्थी परीक्षा पास कऽ लइए। तइसँ बेसी समय लगने बोर्ड-युनिवरसिटीसँ डिग्री लऽ अबैए। अखन बहुत समय अछि।”

समय पाबि सपाही जेबीसँ सलाइ-सिगरेट निकालि एकटा अपनो आँगुरसँ दबलक आ दोसर बलदेवोर्कें देलक। सलाइ खड़ैर सिगरेट सुनगा दुनू गोरे पीबए लगल। दुनूक मुँहक घुआँ निकैलते तेना मिलैत जाइ जे फुटा कऽ देखब असम्भव भऽ गेल। मुँहक सिगरेट सठिते बलदेव बाजल-

“भैयारी, किछु घन्टाक मेहमान छी, पछाइत अहाँ केतए रहब हम केतए रहब तेकर कोन ठेकान। मुदा मनमे जे अछि ओ केकरा कहि सकबै,

तँए जाबे एकठीम छी ताबे सुनू। जेतए धरि भऽ सकत ओते तँ मन हल्लुक रहत।"

बलदेवक बात सुनि सिपाही बाजल-

"जखन सुनए लगलौं तँ सुनाउ, जेते सुनाएब सभ सुनि लेब। तहूमे बाल-बोधक गप छी, हम सभ नै सुनब तँ के सुनतै। आखिर गारजनो तँ छिऐहे।"

मुस्कियाइत बलदेव बाजल- "ओना, ठीकसँ मन नइए, मुदा वएह सात-आठ बर्खक रही।"

बिच्चेमे सिपाही टोकलक-

"ने सात ने आठ, साढ़े सात भेल। तइले एत्ते ततमताइ किए छी।"

बलदेव आगू बाजल-

"एते नीक नहाँति मोन अछि जे अनका बाड़ीसँ नेबो, दाड़ीम, लताम चोरा-चोरा खूब आनी। पड़ोसियेक नेबो बाड़ी हमरा भाँगक चहैट लगौलक।"

जिज्ञासा करैत सिपाही-

"से केना, से केना?"

"बाड़ी-झाड़ी लगबैमे एकटा पड़ोसिया बड़ माहिर। भरि दिन ओही पाछू बेहाल रहै छला। मुदा गुणो रहैन, ने केकरो बाड़ी-झाड़ी जाइसँ रोकथिन आ ने सोझहामे छुच्छे हाथे केकरो घुमऽ देथिन। हुनके बाड़ीसँ सभ दिन दूटा नेबो तोड़ि ली आ चौकपर बेच, भाँगो आ पानो खा ली। गुजर करै-जोकर खेत-पथार तँ नहियेँ रहए मुदा तैयो सात-आठ मास खेतक उबजासँ गुजर चलि जाए। कट्ठा दसे-बारहेक करीब बँटाइयो खेत बाबू करैत रहैथ। तइ सभ मिला साल-माल लगि जाइ छल। ओना साँझू पहर जे अन्ट-सन्ट काजो करी आ बजबो करी तइसँ बाबू बुझि गेल रहैथ जे छौड़ा बहबाँइर भेल जाइए, संगैत खराब भऽ गेल छइ।"

सिपाही-

"बाबू किछु कहैथ नहि?"

बलदेव-

“बाबू की कहितैथ, माइयक ने दुलारू बेटा रही। जँ कहियो किछु बजौ चाहैथ तँ तेना कऽ माए झपैट लैन जे-मुहेँ बन्न भऽ जाइन। ओना भैयारीमे असगरे रही तहूसँ कहियो तेना भऽ कऽ किछु नै कहए चाहैथ।”

सिपाही-

“तब की भेल?”

बलदेव- “एक दिन कनी पहिनहि, माने सबेरे एकटा पिसुआ भाँगक गोली खा लेलौं आ तैपर सँ पान सौ नम्मर जरदा देल पान कनी पुष्टसँ चढ़ा देलिऐ। घरपर अबैत-अबैत खूब निशाँ लगि गेल। बाबू दरबज्जेपर रहैथ। कहलैन जे एकटा बात पुछियौ, कहलयैन जे ‘एकेटा किए एक हजार पुछू।’ हमहूँ हाथीए-पर सवार रही।”

‘हाथीपर सवार’ सुनि सिपाहीकेँ हँसी लगि गेलइ। बाजल-

“आ जे हाथीपर सँ खसि पड़ितौं तखन की होइतए?”

मुस्कियाइत बलदेव बाजल-

“हद करै छी भैयारी। से जँ बुझैत रहितिऐ तँ अहिना करितौं। यएह ने नै बुझलिऐ जे केना लोक उट्ठी-बैसी खेल खेलाइए, केना खसलाहा अपनाकेँ चढ़ल बुझैए!”

सिपाही- “बाबू की पुछलैन?”

“पुछलैन जे अन-पानि तँ जेना-तेना बँटाइयो-खोंटाइ कऽ साल-माल लगिए जाइए मुदा दूध-दहीक नसीब नै होइए। दूध-दहीक नाओं सुनि अपनो मन चमकल। कहलयैन से की कहै छहक। कहलैन, एकटा महींस पोसिया लऽ लइतौं। आब तोहूँ चरबै-बझबै-जोकर भइये गेलह।”

बिच्चेमे सिपाही टोनलक-

“बड़ सुन्दर बात कहलैन।”

बलदेव- “हँ-हँ। से तँ अपनो नीक लागल। मनमे उठल जे जहिना खेतक उबजाक अगो, तीमन-तरकारीक पहिल फड़क हकदार आने होइत तहिना गाए-महींसबला परिवारमे डारहीक हकदार तँ धिए-पुते ने होएत। एक तँ डारहीसँ छालही धरि, दोसर दूधसँ दही धरिक ओरियान हएत। तैपर सवारी बना महींसपर चढ़ि सौंसे गामो घूमब। बिनु किछु केनौं

काजक मोजर सेहो हेबे करत। आ कनी-मनी संगैतियो सबहक-मुहेँ सुनि ईहो बुझिते रहिऐ जे गजेरी-भँगेरीक पथ्य दूधे-दही छी। जँ से नइ खाएत तँ उनटे गाँजा-भाँग खा जेतइ। जानिए कऽ तँ भाँग खाइते छी, आ ओहीमे रमलो रहै छी। जे काजुल अछि ओ ने काजमे रमैए, तहिना जे चिन्तक अछि ओ चिन्तनमे। मुदा हम तँ तइ सभमे नइ छी। जिनगी जँ रमता जोगी बहता पानी नै बनल तँ जिनगी सराठीए ने भऽ जाइए।”

चौंकैत सिपाही बाजल- “ ‘सराठी जिनगी’ केकरा कहै छिऐ?”

सिपाहीक बात सुनि बलदेवकेँ हँसी लागल। जहिना एको दाना नून आकि चिन्नी अपन सुआद जना दइए, तहिना बलदेवकेँ अपन ज्ञानक सुआद लगलै। मुस्की दैत बाजल-

“जहिना धारक पानि ताधैर चलता रहैए जाधैर सँगे-सँग चलैत रहैए। मुदा जखने कोनो खत्ता-खुत्तीमे फँसि जाइए आ बहाउ रूकि जाइ छै तखन माटिक सँग सड़ए लगैए। सड़ैत-सड़ैत तेतेक सड़ि जाइए जे नहाइ-पीबैक कोन गप जे अपन सड़ैनसँ ओहन-ओहन बेमरियाह किड़ी सभकेँ जनमाबए लगैए जे हाथियो सन-सन जानवर ओइमे फँसि जान गमबैए। महींस चरबै-जोकर भइये गेल रही। किएक तँ देखिऐ जे हमरोसँ छोट-छोट छौड़ा सभ चरबैए। कहलयैन- ‘नीक काजमे एक्को दिन देरी नै करबाक चाही, बाबू। जे देरी करैए वएह पछताइए।’ बाबूओकेँ गप नीक लगलैन। एकटा पोसिया महींस लऽ अनलैन।”

‘महींसक नाओं’ सुनि सिपाही बाह-बाही भरैत बाजल-

“जखने कमाइ-खटाइ लोक करए लगैए तखनेसँ अपन धरतीक भार उतारए लगैए।”

सिपाहीक बात बलदेवकेँ नीक लगलै। जहिना एके अन्न पेट भरैक सँग-सँग मनमे आनन्दो दइ छै तहिना बलदेवोक मनमे भेलइ। गदगदाइत बाजल-

“असलाहा बात तँ कहबे ने केलौं।” कहि चुप भऽ किछु मोन पाड़ए लगल।

जहिना खिस्सकरक सँग हुँहकारी भरने ओकर उत्साह उठैत रहै छै तहिना बलदेवो उत्साहित भेल। राज-काजसँ हूसल रागी-भोगी जकाँ

दोहरबैत बाजल- “ओह, सुखक दिन चलि गेल। आब थोड़े देखब कि भोगब। ओ हो हो।”

दुनूक मनसँ बारह बजेक फाँसी हेराएल। एक फाँसी ओहनो होइत जइमे संकल्प रूपी कल्याणी माइक कोरामे बैस हँसैत चढ़ैए, दोसर एहनो होइत जे खण्ड-खण्ड टुटल-छिड़ियाएल मन शरीरकेँ छौड़ैए।

..हुँहकारी भरैत सिपाही बाजल-

“से की। से की?”

चानि ठोकैत बलदेव बाजल-

“महींससँ दूध-दही होइते रहए। पाँच गोरे एहेन छड़े-छाँट महींसवार रही जे महींस चरा साँझू पहर, घुमतीकाल लोकक खेतक जजातो चरा लिऐ आ धानक महिनामे धानो नोचि लिऐ आ नारो बान्हि महींसपर लादि लऽ आनिऐ। तेते अन्न घरमे ढेरिया जाए जे खाइक दुखे हेरा गेल रहए।”

सिपाही-

“सभ दिन महींसे चरबैत रहलिऐ?”

आँखि-भौं चमकबैत बलदेव बाजल-

“अहूँ हद करै छी भैयारी! बुधि-बलक सँग जिनगियो ने घटै-बढ़ै छइ। ठीकसँ तँ नइ मोन अछि। मुदा एते मोन अछि जे दुरागमन भऽ गेल रहए। बाबूओ मरि गेल रहैथ। जहिना खेत-पथार बेच लोक नोकरी करए जाइए तहिना महींस बेच लेलौं। मुदा पाँचो महींसवारक सम्बन्ध आरो बढ़ि गेल। खेनाइ-पिनाइ कथा-कुटुमैतीक सँग पनचैती-सभ सेहो करए लगलौं। गामेमे बहरबैया मालिकक जमीनो आ कचहरियो रहइ। कचहरीक बराहिलसँ दोस्ती भऽ गेल। संजोगो नीक रहल, बराहिलगिरीक नोकरी भऽ गेल। साए बीघा जमीनक मालिक भऽ गेलौं।”

मालिकक नाओं सुनि सिपाही बाजल-

“तखन तँ मानो-दान खूब हुअ लगल हएत?”

‘मानदान’ सुनि कठ-मुस्की दैत बलदेव अपशोच करैत बाजल-

“सोझहामे जहिना मान-दान बढ़ल परोछमे तहिना गारियो बढ़ि गेल!”

“से किए?” –सिपाही पुछि देलकै।

किछु मोन पाड़ैत बलदेव बाजल-

“करबो तहिना करिऐ। जेना गमैया नेता सभकेँ देखबै जे ऊपरका नेताक आगूमे जे किछु बाजत आ करत, लोकक बीच उनैट कऽ मुहोँ आ चालियो बदैल लेत। तहिना करए लगलौं। मालिक–जमीनदार–क आदमीक बीच किछु आ लोकक बीच किछु करए लगलौं।”

उनटैत-पुनटैत पाशा देखि सिपाही बाजल-

“से की?”

बलदेव-

“गामक लोककेँ कोनो मोजर दिऐ! अनेरे केकरो गरिया देलौं, बलजोरी कोनो चीज लऽ लेलौं। तहिना स्त्रीगणो सभकेँ, केकरो किछु कहि दिऐ, केकरो किछु।”

“कियो जवाब नै दिअए?”

“जवाब की दइत, जहिना पड़ू खुट्टा देखि चुकड़ै छै तहिना ने रहए। एक दिस मालिकक धाक, दोसर अपन बलउमकी।”

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

“की अपन बलउमकी?”

“जहिना शरीरेक मुख्य अंग आँखियो छी आ कानो, मुदा दुनूमे केते अन्तर छै से देखै छिऐ। कान वेचारा एहेन सज्जन अछि जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला सुनि किछु नइ करैत, मुदा आँखि केहेन लुच्चा अछि जे देखिते छिऐ, कखनो ललिया कऽ अगिया जाइत तँ कखनो कनखिया जाइत अछि आ कखनो गैंचियाए लगैए। तहिना अपनो अलेल खेने-पीने सदिकाल रमकी चढ़ले रहै छेलए।”

सिपाहीक मनमे तरंग उठलै। तरैंग कऽ बाजल-

“गामक पढ़ल-लिखल लोक ऐ बातकेँ नै बुझै?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव गुलाबी हँसी हँसि बाजल-

“जहिना कृष्ण एक दिस भदवरिया चोर बुझल जाइ छैथ तँ दोसर परब्रह्म सेहो छैथ, मुदा छथिन तँ सभ-ले मुदा जे जेहेन तेकरा-ले तेहेन।

तहिना वीणावादिनी सेहो ने छैथ। जेहेन कर्म तेहेन बोध। तही बीचमे ने समाजक पढ़लो-लिखल लोक छैथ, जखन जेहेन तखन तेहेन।"

"से केना?"

'से केना' सुनि अपनाकेँ सम्हारैत बलदेव बाजल-

"जहिना काजोमे लोक एहेन रमान रमि जाइए जे खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ अपन जिनगीक किरिया-कलापक सँग घरो-परिवार बिसैर जाइए, तहिना दोसर दिस बेरागी सेहो ने ब्रह्ममे लीन भऽ सभ किछु बिसैर जाइ छैथ, रमता जोगी तँ दुनू बनि जाइ छैथ, मुदा की दुनू एक्के भेल?"

बलदेवक बात सिपाही नै बुझि सकल। बाजल-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ भाय।"

जहिना कारखानाक बनल कपड़ाक थानसँ दरजी काटि-काटि रंग-रंगक वस्त्र बनबैत तहिना बलदेव बनबैत बाजल-

"देखियौ, सप्ताह मास आ सालेक लिअ। आइ तारीख एक, आ महिना एक छी। ई दू सालक बीचक सीमानपर अछि। एकक अन्त दोसराक आरम्भ छी। बाँकी जेते अछि से सभ कचिया अछि। जेना मासक भीतर बाइस दिनकेँ की कहबै? तहिना सप्ताहक भीतर पाँच दिनकेँ कथी कहबै?"

बलदेवक बात सुनि सामंजस करैत सिपाही बाजल-

"खाएर, छोड़ू दुनियाँ-दारीकेँ। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए।"

सिपाहीक बात अन्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे बलदेव बाजल-

"भैयारी, आइ बुझि पड़ैए जे गलती नै भेल गलतीक बाटे पकड़ा गेल।"

चौंक कऽ सिपाही बाजल-

"से की! से की?"

उदास होइत बलदेव बाजए लगल-

"भैयारी, कहैले तँ जेते मुँह तेते बाट अछि, जँ से नइ रहैत तँ हृदैसँ निकैल दोसर हृदैमे सटैत केना अछि। मुदा ओते कहैक अखन समय

नइए। तँए एतबे कहब जे मनुक्खक बीच दू रस्ता बनल अछि। एक रस्ताकेँ लोक मनुक्खक रस्ता बुझि केकरो कियो चलैसँ रोकैत नै अछि आ दोसर ओहन अछि जइमे अपना छोड़ि दोसरकेँ मनुक्ख बुझिते ने अछि। रस्तासँ हटि जहिना जंगल-झाड़मे चलैत-चलैत डगर बनि जाइ छै तहिना डगर धड़ा देने अछि।"

जहिना लोहाक कोनो ओजार जखन भोथ हुअ लगै छै तखन कारीगर ओकरा आगिमे धीपा, पीटि पानिमे पनिया दैत, जेकरा पानि चढ़ाएब कहल जाइ छै। तहिना तँ पाथरपर पानि दऽ दऽ, रगैड़-रगैड़ सान सेहो चढ़बैए, तहिना सिपाहीकेँ कारीगर सिगरेट पीबाक इच्छा जगौलकैन। जेबीसँ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा संगीकेँ–जे गाँजा पीब मस्त भऽ सुनै छल– देलक आ एकटा बलदेवोक हाथमे दैत सलाइ खरड़लक। एक दम पीब धुँआँ फेकैत बाजल-

"अनेरे अहाँ दुनू गोरे मगजमारी करै छी। एते छिलैन करैक कोन बेगरता अछि। देखबै जे भोजमे दर्जनो समान रहितो खेनिहार एके-दूटापर चोट करैए। परसनिहारक काज छिऐ पुछि-पुछि देनाइ। खेनिहारक मन छिऐ जे खाएब कि नहि। आइ जइ गतिक फल पाबए चलब से केना भेल?"

सिपाहीक प्रश्नसँ बलदेवकेँ दुख नै भेल। संगीक एहसास भेल। जहिना जुआन-जहानकेँ सासुरक रंगोली कथा संगीकेँ सुनबैत आनन्द अबैत तहिना बलदेवकेँ भेल। दुखो तँ दोसरकेँ कहने कमैए। जँ से नइ तँ नोरक सँग कियो किए अपन पति-वियोगक खेरहा सुनबैए। ..बात मोन पाड़ैक समय बनबैत बलदेव बाजल-

"भाय साहैब, औझुका खुशी सन जिनगीमे कहियो खुशी नै भेल छल।"

सिपाही-

"से की?"

बलदेव-

"अपन बेथा-कथाकेँ सुननिहार जँ एकोटा भेट जाए तँ ओइसँ नीक की हएत। हृदैक वेदना जँ अहाँ सुनए चाहलौं तँ जिनगीक अन्तिम दिनक

अन्तिम पहरमे सीढ़ीक अन्तिम पौदानक बात कहए चाहै छी।"

बलदेवक विचार सुनैक खुशीमे सिपाही विह्वल भऽ गेल। बाजल-

"जहिना भतभोजक अन्तिम विन्यास चीनी होइत तहिना जँ अहाँक मधुर वाणी अपन वाणीक सँग मिलत तखने ने मिश्री बनि पाथर सदृश सक्कत हएत। यएह ने जिनगीक ओर-छोर छी।"

सिपाहीक बात सुनि दोसर सिपाही बाजल-

"भैया, अहाँ भकुआएल मने भकुआ लगा देलिऐ आ भकुआ गेलौं। कनी चिक्कन जकाँ कहियौ।"

पहिल सिपाही बाजल-

"सभ दिन तँ दस किलोक बन्दूक कन्हामे लटकौने रहै छह, तखन फूल सन विचार पाथर सन भारी कोन कान्हमे लटकेबह। ओहिना तँ कान्ह बदैल दुनू कान्ह बदलैत-बदलैत भकभकाइत रहै छह, तखन माटि तँ माटिए छी।"

दोसर सिपाही-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

पहिल सिपाही-

"देखहक जहिना ई दुनियाँ माटिक बनल अछि तहिना ने ई देहो माटियेक छी। तँए देह बुझैले माटि बुझए पड़तह। रंग-रंगक माटिसँ ई दुनियाँ बनल अछि। एकर गिनती करब साधारण नहि। जहिना देखबहक जे साते रंग तेते रंग बनि गेल अछि जे डोराक दोकान, जे साइयो रंगक डोरा बेचैए तेकरो दोकानपर सँ दर्जी घुमि जाइ छै जे ऐ रंगक डोरा नइए। तहिना माटियो अछि। एक माटि, थाल बनबैए तँ दोसर चिक्कन। तेतबे नहि, एक पाथर सन सक्कत पत्थर बनबैए तँ दोसर पानि सनक वस्तुकेँ पैदा करैबला लेयर छी, माने जल मिश्रित माटि। अच्छा छोड़ह अपना सभ गप। वेचारा बलदेवक अन्तिम समय गुजैर रहल छै, तँए पहिने एकर सुनह। ई सुनब ओहिना सूनब होएत जहिना सूर्यास्तक समय कोनो दूर जाइत बटोही अनभुआर जगहपर आबि अँटकैक ओरियान करए चाहैत।"

बलदेव दिस तकैत- "पहिने अहाँ अपन बात विसर्जन करू बलदेव भाय, तखन जे हेतै से हेतइ। जे जीबए से खेलए फागु, जे मरए से लेखे

जागु।”

अन्तिम तीर निकलैत जहिना हजारो वाणसँ वेधल तीराएलक हृदय सुखसागरक घाटपर पहुँच हियबैत जे सभसँ सुन्दर जल कोनठाम छै, जैठाम स्नान करब, जाधैर पवित्र पानिसँ पथ नै पखारब ताधैर पएर पिछैड़ते रहत, आ जाधैर पएर पिछड़ैत रहत ताधैर सोझ भऽ चलि नै सकै छी, जाधैर सोझ भऽ ठाढ़ नै भऽ पएब ताधैर कमलासन देखि नै पएब, आ जाधैर कमलासन देखि नै पएब ताधैर रंग बदलैत कमल कुमुदनीक सँग भौराकेँ पराग-जालमे ओझरा लाल-उज्जर अँचरा समैट राति भरिक जीवन-रक्षण ओइ मातृ सदृश करैत जइ सदृश छातीमे सटा मैया यशोदा अपन लाड़लाकेँ जिनगीक कथा-बेथा सुना-सुना सुनबैत तहिना अन्तिम तीरसँ तीराएल वा वाणसँ वेधाएल बलदेवक संकल्प-शक्ति जागलै। शर्त लगबैत बलदेव बाजल-

“भैयारी, दुनियाँमे हित-अपेछित, दोस-महिम आदि अनेको तरहक होइत अछि, मुदा से नहि, जिनगी तँ ओकरे ने सार्थक होएत जे संकल्पित हुअए। भलेँ छोट-सँ-छोट संकल्प किए ने हौउ। मनुक्खक पहिल वाण तँ संकल्पे वाण ने होइत। जँ से नहि तँ जिनगी की। आइ हमरा ओहन विचार-बोध भऽ रहल अछि जे सपनोमे नै सपनाएल छेलौं। ओना सपनो तँ सपने छी। कोनो हवाइ जहाजक साइर करबैत, तँ कोनो मलेरिया मच्छरक मेलामे साइर करैत।”

जहिना कोनो वस्तुक जिज्ञासा एते बढ़ि जाइत जे सभ किछु बिसैर ओकरा पकड़ैले बवाल बनि जाइए तहिना सिपाही बाजल-

“समैपर धियान रखए पड़त। कालक गति केकरो बुते ने रोकाइ छइ। तँए अपनाकेँ ओइमे समावेश करू।”

जहिना भोजक वारीक चँगेरामे खाजा रखि एकटा हाथमे नेने पंचक आगूमे आग्रह करैत, तेहने तगेदा बुझि बलदेव बाजल-

“भैयारी, अहाँ तँ भाइक सँग अबैत ओ यार छी, तँए संकल्प बुझू जे झूठ नै कहै छी। ई बात आइ बुझै छी अनकर मेहनतकेँ तागैतक बलपर लूटैत-चोरबैत एलौं। जेकर चोरौलिऐ ओहो हमरे सन मनुक्ख दूटा हाथ-पैरबला ने छइ। हम किए छुलिऐ। हमरा ओही दिन फाँसीपर समाज चढ़ा

सकै छल आ अपन निअममे सुधार कऽ सकै छल। मुदा से नइ भेल। हम गलती कहाँ केतौ केलौं, गलतीक बाटक जे कर्तव्य छै, वएह ने केलौं। हम तँ तखन बुझितिऐ जे जखन अपने-टा एहेन रहितौं। से तँ नहि, आगू-पाछू दुनू दिस भरल देखलिऐ...।”

सिपाही-

“भैयारी, एहेन सजा किए भेल, से कहाँ कहलिऐ?”

एक टकसँ दुनू सिपाहीपर नजैर राखि बलदेव टकटकी लगा देखए लगल। जहिना हजारो मील हटि कोनो विचार जन्म लऽ सटि जाइत तहिना सिपाही अपराधीक दूरी मेटा गेल। ने सिपाही किछु बजैत आ ने बलदेव। मुदा ड्यूटीक तीर सिपाहीकेँ लगलै। घड़ी देखि बाजल-

“भैयारी, आब सुनैक समय नै पाबि रहल छी।”

समैयक अभाव देखि बलदेव ओहन कथाकार जकाँ जे जिनगीक बेथाकेँ कथा कहैत। घटना-विशेष तँ ओहनो होइत जइसँ गढ़गर घटना सुननिहार भोगने रहैत। मुदा तँए की हुनकर विचारकेँ विचार नै मानबैन। तँए समाजक वस्तु साहित्य छी। विचार-सुझाव-ले पाठक-श्रोताक दरबज्जा सदैत खुजल रहक चाही। समाधानक अनेको उपाय अछि। तँए जाधैर साहित्य समाजक सचित्र नै बनि, बेकती-चित्र बनैत रहत ताधैर दुनूक बीच विषमत नइ रहए ओहो अनुचित।

बलदेव अपन जिनगीक अन्तिम मोहक बात, अन्तिम मोड़पर आबि बाजल-

“भैयारी, सरकारक विरोधमे हवा उठल। हमहूँ बराहिलगिरी छोड़ि नेता बनि गेलौं। हमरा सबहक जीत भेल। अपनेमे टुटान शुरू भेल। माने सभमे, किसान, वेपारी, वुद्धिजीवी, अपराधीमे टुटान भेल। इलाकामे जाल पसरल छल। बुझबे ने केलिऐ जे नेताक टुटानसँ हमहूँ टुटि गेलौं। ऊपरे-ऊपर अपेछा रहल, भीतरे-भीतर दुश्मनी भऽ गेल। जहिना तीतहा रोगक तीतहो दबाइ होइत आ मीठहो, तहिना टुटानमे फँसि गेलौं। चुनावक समय ए

अ

नाओं लागल हमर। अपनो मन कहैए जे खूनी तँ हम नइ छी, मुदा

सोझहामे खून भेल तखन हम केमहर रहिऐ।”

तही बीच दर्जनो तैयार सिपाहीक प्रवेश भेल।

सिपाहीक कफलाकेँ देखिते ईहो दुनू सिपाहियो आ बलदेवो चौंक उठल। उठि-उठि सभ ठाढ़ भेल। जहलसँ निकैल सभ सभकेँ देखए लगल।

❑

शब्द संख्या: 10487

❑❑❑

❑❑

❑

Notes